बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु ऐतिहासिक पहल ...

शेखावाटी मिशन : 100

अनिवार्य हिंदी
(कक्षा- 12)

पढ़ेगा राजस्थान

बढ़ेगा राजस्थान

विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें

कार्यालय : संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राज.)

संयोजक कार्यालय – संयुक्त निदेशक कार्यालय, चूरू संभाग, चूरू

शेखावाटी मिशन - 100 मार्गदर्शक

अनुसूया सिंह

संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा)
चूरू संभाग, चूरू

महेन्द्र सिंह बड़सरा

सहायक निदेशक
संयुक्त निदेशक कार्यालय, चूरू संभाग, चूरू
प्रभारी शेखावाटी मिशन 100

संकलनकर्त्ता टीम : अनिवार्य हिंदी

रामावतार भदाला

तकनीकी सहयोगी शेखावाटी मिशन 100

विजय कुमार सैनी

रा.उ.मा.वि. वाय, नवलगढ़ (झुंझुनूं)

आशा

रा.उ.मा.वि. जिन्नासर, सुजानगढ़

डॉ. सरिता सैनी

रा.उ.मा.वि. सेवा, धोद (सीकर)

रूपचंद सबलानिया

रा.उ.मा.वि. सिंगरावट (सीकर)

रमेश कुमार

रा.बागला.उ.मा.वि. चूरू

आशीष रोलण

रा.उ.मा.वि. मंगरासी (सीकर)

शैक्षिक प्रकोष्ठ अनुभाग, संयुक्त निदेशक कार्यालय, चूरू संभाग, चूरू (राज.)

प्रश्न–पत्र की योजना 2024

कक्षा –12th
विषय – अनिवार्य हिन्दी
अवधि – 3 घण्टे 15 मिनट पूर्णांक – 80

1. उद्देश्य हेतु अंकभार –

क्र.सं.	उद्देश्य	अंकभार	प्रतिशत
1.	ज्ञान	19	23.75
2.	अवबोध	23	28.75
3.	ज्ञानोपयोग/अभिव्यक्ति	22	27.5
4.	कौशल/मौलिकता	16	20
योग		**80**	**100**

2. प्रश्नों के प्रकारवार अंकभार –

क्र. सं.	प्रश्नों का प्रकार	प्रश्नों की संख्या	अंक प्रति प्रश्न	कुल अंक	प्रतिशत (अंको का)	प्रतिशत (प्रश्नों का)	संभावित समय
1.	वस्तुनिष्ठ	12	1	12	15.00	26.67	20
2.	रिक्त स्थान	6	1	6	7.50	13.33	08
3.	अतिलघुत्तरात्मक	12	1	12	15.00	26.67	20
4.	लघुत्तरात्मक	5	2	10	12.50	11.11	25
5.	दीर्घउत्तरीय	5	3	15	18.75	11.11	70
		1	4	4	5	2.22	
6.	निबंधात्मक	2	6	12	15	4.4	52
		1	4	4	5	2.2	
		1	5	5	6.25	2.2	
	योग	45		80	100	100	195 मिनट

विकल्प योजना : खण्ड 'स' एवं 'द' में हैं।

3.विषय वस्तु का अंकभार –

क्र.सं.	विषय वस्तु	अंकभर	प्रतिशत
1	अपठित	12	30
2	रचनात्मक लेखन (पत्र व निबंध)	9	11.25
3	व्यावहारिक व्याकरण	08	10.00
4	अभिव्यक्ति और माध्यम	7	8.75
5	आरोह	32	40.00
6	वितान	12	15.00
	योग	80	100

Scanned with OKEN Scanner

प्रश्न–पत्र ब्ल्यू प्रिन्ट

कक्षा –12th　　　　　　　　　　विषय :– हिन्दी अनिवार्य　　　　　　　　　　पूर्णांक – 80

क्र.सं.	उद्देश्य इकाई/उप इकाई	ज्ञान						अवबोध						ज्ञानोपयोग/अभिव्यक्ति						कौशल/मौलिकता						योग
		वस्तुनिष्ठ	रिक्त स्थान	अतिलघुत्तरात्मक	लघुत्तरात्मक	दीर्घउत्तरात्मक	निबन्धात्मक	वस्तुनिष्ठ	रिक्त स्थान	अतिलघुत्तरात्मक	लघुत्तरात्मक	दीर्घउत्तरात्मक	निबन्धात्मक	वस्तुनिष्ठ	रिक्त स्थान	अतिलघुत्तरात्मक	लघुत्तरात्मक	दीर्घउत्तरात्मक	निबन्धात्मक	वस्तुनिष्ठ	रिक्त स्थान	अतिलघुत्तरात्मक	लघुत्तरात्मक	दीर्घउत्तरात्मक	निबन्धात्मक	
1	अपठित			1(6)						1(5)						1(1)										12(12)
2	रचनात्मक लेखन (पत्र व निबंध)																		4(1)*						5(1)*	9(2)
3	व्यावहारिक व्याकरण	1(2)	1(1)						1(4)						1(1)											8(8)
4	अभिव्यक्ति और माध्यम	1(1)						1(1)									2(1)	3(1)								7(4)
5	आरोह	1(3)					4(-)	1(3)			2(1)	3(1)					2(1)		4(1)*					3(1)*	8(2)*	32(13)
6	वितान	1(2)									2(1)	3(1)					2(1)	3(1)								12(6)
	योग	**8(8)**	**1(1)**	**6(6)**			**4(-)**	**4(4)**	**4(4)**	**5(5)**	**4(2)**	**6(2)**			**1(1)**	**1(1)**	**6(3)**	**6(2)**	**8(2)**					**3(1)**	**13(3)**	**80(45)**
	सर्वयोग	**19 (15)**						**23(17)**							**22(9)**					**16(4)**						

विकल्पों की योजना :– खण्ड 'स' एवं 'द' में प्रत्येक में एक आंतरिक विकल्प है　नोटः– कोष्ठक के बाहर की संख्या 'अंकों' की तथा अंदर की संख्या 'प्रश्नों' के द्योतक है।

हस्ताक्षर

Scanned with OKEN Scanner

SHEKHAWATI MISSION-100 : 2023-24

अपठित गद्यांश

1. **निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:** **(6x1=6)**

प्रेम और श्रद्धा में अंतर यह है कि प्रेम स्वाधीन कार्यों पर उतना निर्भर नहीं है। कभी–कभी किसी का रूप मात्र, जिसमें उसका कुछ भी हाथ नहीं उसके प्रति प्रेम उत्पन्न होने का कारण है पर श्रद्धा ऐसी नहीं है। किसी की सुन्दर आँख या नाक देखकर उसके, प्रति श्रद्धा उत्पन्न नहीं होगी प्रीति उत्पन्न हो सकती है। प्रेम के लिए इतना ही पर्याप्त है कि कोई मनुष्य हमें अच्छा लगे, पर श्रद्धा के लिए यह आवश्यक है कि कोई मनुष्य किसी बात में बढा हुआ होने के कारण हमारे सम्मान का पात्र हो।

श्रद्धा का व्यापार–स्थल विस्तृत है, प्रेम का एकान्त है। प्रेग में घनत्व अधिक और श्रद्धा में विस्तार। किसी मनुष्य से प्रेम करने वाले एक या दो ही मिलेंगे लेकिन उस पर श्रद्धा रखने वाले हजारों लाखों क्या करोड़ों मिल सकते है।सच पूछिए तो इसी श्रद्धा के आश्रय से उन कर्मों के महत्व का भाव दृढ होता रहता है, जिन्हें धर्म कहते हैं। कर्त्ता से बढ़कर कर्म का स्मारक दूसरा नहीं। कर्म की क्षमता प्राप्त करने के लिए बार–बार कर्त्ता की ही ओर आँख उठती हैं। कर्मों से कर्त्ता को जो मनोहरता प्राप्त होती है, उससे मुग्ध होकर बहुत से प्राणी कर्मों की ओर प्रेरित होते हैं। कर्ता अपने सत्कर्म द्वारा, एक विस्तृत क्षेत्र में मनुष्य की सदवृत्तियों के आकर्षण का एक शक्ति केन्द्र हो जाता है।

जिस समाज में किसी ज्योतिष्मान शक्ति केन्द्र का उदय होता है, उस समाज में भिन्न–भिन्न हृदयों से शुभ भावनाएँ मेध–खण्डों की भाँति उठकर और एक साथ अग्रसर होने के कारण परस्पर मिलकर इतनी घनी हो जाती हैं कि उनकी घटा–सी उमड़ती है और मंगल की ऐसी वर्षा होती है कि सारे दुःख और क्लेश बह जाते हैं।

(i) श्रद्धा के कारण किन कर्मों का महत्व बढ़ जाता है ?

उत्तर– जिन्हे धर्म कहा जाता है।

(ii) कर्म का सबसे बड़ा स्मारक किसे माना गया है ?

उत्तर– कर्त्ता को।

(iii) शारीरिक सौंदर्य को देखकर क्या उत्पन्न हो सकता है ?

उत्तर– प्रेम।

(iv) गद्यांश के अनुसार प्रेम का पर्यायवाची क्या होगा ?

उत्तर– प्रीति।

(v) अपने सत्कर्म द्वारा मनुष्य की सद्वृतियों के आर्कषण का केन्द्र कौन बन जाता है ?

उत्तर–कर्त्ता।

(vi) प्रस्तुत गद्यांश का उचित/उपयुक्त शीर्षक होगा?

उत्तर– श्रद्धा और प्रेम।

शेखावाटी मिशन–100

2. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिएः (6x1=6)

राष्ट्रीय भावना के अभ्युदय एवं विकास के लिए भाषा भी एक प्रमुख तत्व है। भाषा मानव समुदाय की संवेदनाओं, भावनाओं को बाधित नहीं करतीं है। इसी प्रकार यदि राष्ट्र की एक सम्पर्क भाषा का विकास हो जाए तो पारस्परिक संबंधों के गतिरोध बहुत सीमा तक समाप्त हो सकते हैं। मानव–समुदाय को एक जीवित–जाग्रत एवं जीवंत शरीर की संज्ञा दी जा सकती है और उसका अपना एक निश्चित व्यक्तित्व होता है। भाषा अभिव्यक्ति के माध्यम से इस व्यक्तित्व को साकार करती है, उसके अमूर्त मानसिक वैचारिक स्वरूप को मूर्त एवं बिंबात्मक रूप प्रदान करती है। मनुष्यों के विविध समुदाय हैं, उनकी विविध भावनाएँ हैं, विचारधाराएँ हैं, संकल्प एवं आदर्श हैं, उन्हें भाषा ही अभिव्यक्त करने में सक्षम होती है। साहित्य, शास्त्र, गीत–संगीत आदि में मानव–समुदाय अपने आदर्शों, संकल्पनाओं, अवधारणाओं एवं विशिष्टताओं को वाणी देता है, पर क्या भाषा के अभाव में काव्य, साहित्य, संगीत आदि का अस्तित्व संभव है? वस्तुतः ज्ञानराशि एवं भावराशि का अपार संचित कोश जिसे साहित्य का अभिधान दिया जाता है, शब्द–रूप ही तो है। अतः इस संबंध में वैमत्य की किंचित् गुंजाइश नहीं है कि भाषा ही एक ऐसा साधन है जिससे मनुष्य एक–दूसरे के निकट आ सकते हैं, उनमें परस्पर घनिष्ठता स्थापित हो सकती है। यही कारण है कि एक भाषा बोलने एवं समझने वाले लोग परस्पर एकानुभूति रखते हैं, उनके विचारों में ऐक्य रहता है। अतः राष्ट्रीय भावना के विकास के लिए भाषा तत्व परम आवश्यक है।

(i) भाषा के बारे में मानव समुदाय क्या सोचता है?–

उत्तर– भावानाओं, विचारों एवं संवेदनाओं को अभिव्यक्ति का माध्यम।

(ii) भाषा तत्व के बिना किसका अस्तित्व संभव नहीं है?

उत्तर– मानवीय संवेदनाओं का

(iii) साहित्य की परिभाषा के लिए उपयुक्त पदबंध बताइए।

उत्तर– ज्ञात राशि एवं भाव राशि का संचित कोश।

(iv) भाषागत वैविध्य के बावजूद राष्ट्रीय भावना का विकास कैसे संभव है ?

उत्तर– जब एक संर्पक भाषा विकसित हो

(v) 'भाषा बहता नीर' से क्या आशय है ?

उत्तर– सरल व प्रवाहमई भाषा।

(vi) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए ।

उत्तर–राष्ट्रीयता और भाषा।

3. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिएः (6x1=6)

यह संतोष और गर्व की बात है कि देश वैज्ञानिक और औद्योगिक क्षेत्र में आशातीत प्रगति कर रहा है। विश्व के समृद्ध अर्थव्यवस्था वाले देशों से टक्कर ले रहा है और उनसे आगे निकल जाना चाहता है, किंतु इस प्रगति के उजले पहलू के साथ एक धुंधला पहलू भी है, जिससे हम छुटकारा चाहते हैं। वह है नैतिकता का पहलू। यदि हमारे हृदय में सत्य, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और मानवीय भावनाएँ नहीं हैं। देश के मान–सम्मान का ध्यान नहीं है। तो सारी प्रगति निरर्थक होगी। आज यह आम धारणा है कि बिना हथेली गर्म किए साधारण–सा काम भी नहीं हो सकता। भ्रष्ट अधिकारियों और

शेखावाटी मिशन–100

भ्रष्ट जनसेवकों में अपना घर भरने की होड़ लगी है।

उन्हें न समाज की चिंता है, न देश की। समाचार–पत्रों में अब ये रोजमर्रा की घटनाएँ हो गई हैं। लोग मान बैठे हैं कि यही हमारा राष्ट्रीय चरित्र है, जब कि यह सच नहीं है। नैतिकता मरी नहीं है, पर प्रचार अनैतिकता का हो रहा है। लोगों में यह धारणा घर करती जा रही है कि जब बड़े लोग ही ऐसा कर रहे हैं, तो हम क्यों न करें? सबसे पहले तो इस सोच से मुक्ति पाना जरूरी है। और उसके बाद यह संकल्प हो कि भ्रष्टाचार से मुक्त समाज बनाएँगे। उन्हें बेनकाब करेंगे, जो देश के नैतिक चरित्र को बिगाड़ रहे हैं।

(i) देशवासियों के लिए गर्व की बात क्या है ?

उत्तर– औद्योगिक, आर्थिक क्षेत्र में प्रगति

(ii) देश की आशातीत प्रगति से जुड़ा धुंधला पक्ष क्या है?

उत्तर–नैतिकता एवं ईमानदारी में कमी

(iii) नैतिक चरित्र से लेखक का क्या आशय है ?

उत्तर–ईमानदारी के साथ कर्तव्य निष्ठ होना।

(iv) देश की प्रगति कब निरर्थक हो सकती है?

उत्तर– राष्ट्रीय भावना व मानवीय गुणों में कमी

(v) समाज अनैतिक पहलू से कैसे मुक्ति पा सकता है?

उत्तर– भ्रष्टाचार से मुक्त।

(vi) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए ?

उत्तर– राष्ट्रीय भावना

@SHEKHAWAT IMISSION100

शेखावाटी मिशन 100 की कक्षा 10 एवं 12 के विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें

शेखावाटी मिशन

4. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नो के उत्तर दीजिये। (6)

करूणा भी भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों में से एक है। हम एक दूसरे के सुख–दुख में सहयोग एवं सद्भाव रखते रहे हैं। स्त्री का सम्मान, संकट के समय साहस न खोनाख उदारता तथा अनेक विचारों के आदान–प्रदान के साथ हमारी समन्वयात्मक दृष्टि आदि ऐसे तत्व हैं जिन्हें हम दैनिक व्यवहार में अपनातें है। हमारी संस्कृति में देश की सीमाओं को केवल भू–भाग ही नहीं माना बल्कि अपनी माता से भी बढ़कर माना गया है "माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः" अर्थात भूमि माता है और मैं इसका पुत्र हूँ। हमारे वेद, पुराण, शास्त्र धर्मग्रन्थ भी संस्कृति के पोषक और प्रसारक रहे हैं, जिनमें जीवन की चेतना के विभिन्न स्रोत समाहित है। हमारे साहित्य में भारतीय जीवन दर्शन के स्रोत समाहित हैं।

(i) भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों में से एक तत्व कौनसा है ?

उत्तर– करूणा ।

(ii) 'सुत' शब्द का पर्यायवाची शब्द गद्यांश में से छाँटकर लिखिये।

उत्तर– पुत्र।

(iii) हमारी संस्कृति में देश की सीमाओं को किसके समान बताया गया है ?

उत्तर– माता से बढ़कर

(iv) संस्कृति के किन तत्वों को हम दैनिक जीवन में अपनाते हैं ?

उत्तर– नारी सम्मान, धैर्य, साहस, समन्वित दृष्टिकोण

(v) जीवन की चेतना के विभिन्न स्रोत किनमें समाहित हैं ?

उत्तर– वेद, पुराण व धर्मशास्त्रों में।

(vi) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए ? उत्तर–भारतीय संस्कृति

प्र:1 निम्नलिखित अपठित पद्यांश को पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मनमोहिनी, प्रकृत्ति की जो गोद में बसा
सुख–वर्ग सा जहाँ है वह देश कौनसा है?
जिसके चरण निरंतर रत्नेश धो रहा है,
जिसका मुकुट हिमालय, वह देश कौन सा है?
नदियाँ जहाँ सुख की धारा बहा रही हैं।
सींचा हुआ सलोना, वह देश कौनसा है?
जिसके बड़े रसीले फल कंद, मूल मेवे।
सब अंग में सजे हैं, वह देश कौनसा है?
जिसके सुगंध वाले सुन्दर प्रसून प्यारे
दिन–रात हँस रहे हैं वह देश कौनसा है?
मैदान गिरी वनों में हरियाली है महकती
आनन्दमय जहाँ है, वह देश कौनसा है?
जिसके अनंत वन से धरती भरी पड़ी है
संसार का शिरोमणि, वह देश कौनसा है?
सबसे प्रथम जगत् में जो सभ्य व यशस्वी।
जगदीश का दुलारा, वह देश कौनसा है?

(i) प्रकृति की गोद में कौनसा देश बसा हुआ है?

उत्तर– भारत देश

(ii) भारत का मुकुट किसे कहा गया है?

उत्तर– हिमालय पर्वत को

(iii) "सुख–स्वर्ग सा जहाँ" में कौनसा अलंकार है?

उत्तर– उपमा अलंकार

(iv) दिन–रात कौन हंस रहें हैं?

उत्तर– सुगन्धित और सुन्दर फूल

(v) 'रत्नेश' शब्द का संधि–विच्छेद होगा–

@SHEKHAWAT IMISSION100
शेखावाटी मिशन 100 की कक्षा 10 एवं 12 के विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें
शेखावाटी मिशन–100

उत्तर– रत्न+ईश

(vi) उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक होगा–

उत्तर– भारत का प्राकृतिक वैभव

प्र:2 निम्नलिखित अपठित पद्यांश को पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

हम जंग न होने देंगे!
विश्व शांति के हम साधक हैं,
जंग न होने देंगे!
कभी न खेतों में फिर खूनी खाद फलेगी,
खलिहानों में नहीं मौत की फसल खिलेगी,
आसमान फिर कभी न अंगारे उगलेगा,
एटम से फिर नागासाकी नहीं जलेगी
युद्धविहीन विश्व का सपना भंग न होने देंगे!
हथियारों के ढेरों पर जिनका है डेरा,
मुँह में शांति, बगल में बम, धोखे का फेरा,
कफन बेचने वालों से कह दो चिल्लाकर,
दुनिया जान गई है उनका असली चेहरा,
कामयाब हों उनकी चालें, ढंग न होने देंगे!
हमें चाहिए शांति, जिंदगी हमको प्यारी,
हमें चाहिए शांति, सृजन की है तैयारी,
हमने छेड़ी जंग भूख से, बीमारी से,
आगे आकर हाथ बटाए दुनिया सारी,
हरी–भरी धरती को खूनी रंग न लगने देंगे!

(i) कवि किस तरह की दुनिया चाहता है ?

उत्तर– शांतिपूर्ण, प्रेम व भाईचारे की।

(ii) 'खलिहानों में नहीं मौत की फसल खिलेगी' का आशय क्या है

उत्तर– चारों और सुख व समृद्धि।

(iii) 'कफन बेचने वाले' कहकर कवि ने किनकी ओर संकेत किया है?

उत्तर– मौत के सौदागरों को।

(iv) 'एटम' के माध्यम से कवि ने क्या याद दिलाया है ? उसका सपना क्या है ?

उत्तर– जापान में हुए नरसंहार को।

(v) कवि ने किसके विरुद्ध युद्ध छेड़ रखा है? उसका यह कार्य कितना उचित है?

उत्तर– जो युद्ध करके विश्व में अशांति फैलाते है।

(vi) पद्यांश का सार्थक एवं उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तर– विश्व शांति

@SHEKHAWAT
IMISSION100

शेखावाटी मिशन 100 की कक्षा 10 एवं 12 के विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें

व्यावहारिक व्याकरण

(भाषा, व्याकरण, लिपि)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

प्र:1 एक सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाले भाषा का स्थानीय रूप .... है।

उत्तर– बोली।

प्र:2 हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, मराठी, कोकणी और नेपाली भाषा .... लिपि में लिखी जाती हैं।

उत्तर– देवनागरी।

प्र:3 देवनागरी लिपि में स्वरों व व्यंजनों को संयोग के समय .... का प्रयोग किया जाता है।

उत्तर– मात्राओं।

प्र:4 देवनागरी लिपि का विकास .... से हुआ है।

उत्तर– ब्राह्मी लिपि

प्र:5 लिपि में .... चिह्नों का प्रयोग होता है।

उत्तर– वर्तनी

प्र:6 भाषा के दो प्रकार होते हैं, मौखिक तथा ....

उत्तर– लिखित।

प्र:7 भाषा की सबसे छोटी इकाई .... है।

उत्तर– वर्ण

प्र:8 भाषा में मौखिक रूप मे केवल .... का प्रयोग होता है।

उत्तर– ध्वनि

प्र:9 भाषा के अंगों का नियमबद्ध विवेचन के लिए .... की आवश्यकता होती है।

उत्तर– व्याकरण

प्र:10 **................** ही विकसित होकर भाषा का रूप लेती है।

उत्तर– बोली

प्र:11 पंजाबी भाषा की लिपि .... है।

उत्तर–गुरुमुखी।

प्र:12 प्राचीन भारत की लिपियां .... और .... है।

उत्तर– ब्राह्मी, खरोष्ठी,

प्र:13 विचार विनिमय के मौखिक एवं लिखित माध्यम को .... कहते हैं।

उत्तर– भाषा।

प्र:14 भाषा ....है, लिपि ....है।

उत्तर– सूक्ष्म, स्थूल

शेखावाटी मिशन–100

प्र:15 हिन्दी भाषा की लगभग ....बोलियां है।

उत्तर– अठारह।

प्र:16 भाषा की शुद्धता के लिए .... शास्त्र होता है।

उत्तर– व्याकरण

प्र:17 उर्दू भाषा की .... लिपि है।

उत्तर– फारसी

प्र:18 सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना भाषा के .... है।

उत्तर– कौशल

प्र:19 हिन्दी को राजभाषा का दर्जा .... में दिया गया।

उत्तर– 1949 ई.

प्र:20 शासन के कार्यों में .... का प्रयोग होता है।

उत्तर– राजभाषा।

प्र:21 सर्वाधिक लोगों द्वारा प्रयोग में ली जाने वाली भाषा .... होती है।

उत्तर– राष्ट्र भाषा

प्र:22 संविधान की .... अनुसूचि में भाषा का उल्लेख है।

उत्तर– 8वीं

शब्दशक्ति

प्र:1 किसी शब्द के अर्थ का ज्ञान कराने वाली शक्ति को .... कहते हैं।

उत्तर– शब्द शक्ति

प्र:2 शब्दशक्ति के .... प्रकार माने जाते हैं।

उत्तर– तीन

प्र:3 शब्द शक्ति .... प्रकार की होती है।

उत्तर– तीन

प्र:4 मुख्य अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति................. शब्द शक्ति कहलाती है।

उत्तर– अभिधा

प्र:5 'सुरेश आस्तीन का सांप है।' में शब्दशक्ति है।

उत्तर– व्यंजना

प्र:6 'गुलाब का पुष्प गुलाबी रंग का सुंगधित पुष्प है' उपर्युक्त वाक्य में .... शब्द शक्ति है।

उत्तर– अभिधा

प्र:7 जब किसी शब्द का मुख्य अर्थ और लक्षण आधारित दोनों ही अर्थ प्रकट ना हो, अन्य कोई गूढ़ अर्थ निकलता हो तो .... शब्दशक्ति होती है।

शेखावाटी मिशन–100

उत्तर– व्यंजना।

प्र:8 'यह हवामहल कब पूरा होगा' शब्द शक्ति है।

उत्तर– लक्षणा।

प्र:9 'सूरज सिर पर आ गया' में शब्द शक्ति है।

उत्तर– व्यंजना

प्र:10 'ऐनक हो तो कौन–सा आपको कुछ दिखाई देता है।' इस वाक्य में कौनसी शब्द शक्ति है–

उत्तर– व्यंजना

प्र:11 'ऊँचे बाजार का आमंत्रण मूक होता है।' इस वाक्य में निहित शब्द शक्ति है।

उत्तर– लक्षणा

प्र:12 सेठ ने नौकर से कहा। 'अंधेरा हो गया है।'

उत्तर– व्यंजना शब्द शक्ति

प्र:13 ''इस बुढ़िया को न सत्ताओ, यह तो निरी गाय है। इस वाक्य में शब्द शक्ति है?

उत्तर– लक्षणा शब्द शक्ति।

प्र:14 "मोर छत पर नाच रहा है।" वाक्य में शब्द शक्ति है?

उत्तर– अभिधा

प्र:15 किसी काव्य में रूढ़ि को आधार बनाकर लक्षणा शक्ति प्रयोग किया जाता है, तो वहां .... शब्द शक्ति होती है।

उत्तर– रूढ़ा लक्षणा

प्र:16 "मेरा घर गंगा पर है।" वाक्य में शब्द शक्ति है–

उत्तर– लक्षणा

शेखावाटी मिशन–100

अलंकार

प्र:1 "चारू चंद्र की चंचल किरणें खेल रही थी जल–थल में पंक्ति में................ अलंकार है।

उत्तर– अनुप्रास

प्र:2 जब कोई बात बहुत बड़ा – चढ़ाकर, लोक सीमा का उल्लंघन करके कही जाये वहाँ .... अलंकार होता है।

उत्तर– अतिश्योक्ति

प्र:3 "सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है।" पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर– संदेह

प्र:4 'विधु वदनिहि लाखि बाग में, चहकने लगे चकोर' पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर– उत्प्रेक्षा

प्र:5 जहाँ पर कारण नहीं होने पर भी कार्य का होना पाया जाता है, तो वहाँ ....अलंकार होता है

उत्तर– विभावना

प्र:6 पानी परात को हाथ हुओ नहिं नैनन के जल सौ पग धोए। पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर– अतिश्योक्ति

प्र:7 काली घटा का घमण्ड घटा नभ मण्डल तारक वृन्द खिले। काव्य पंक्ति में..................अलंकार है।

उत्तर– यमक

प्र:8 उसकी मधुर मुस्कान किसके हृदयतल में ना बसी । काव्य पंक्ति में 'म वर्ष की आवृति के कारण........... अलंकार है।

उत्तर– अनुप्रास

प्र:9 जहाँ पर अर्थ के माध्यम से काव्य में चमत्कार होता है, वहाँ .... होते है।

उत्तर– अर्थालंकार।

प्र:10 ....अलंकार में एक जैसे शब्दों की एक से अधिक बार आवृत्ति होती है, परंतु अर्थ हर बार भिन्न होता है।

उत्तर– यमक

प्र:11 अलंकार दो शब्दों से मिलकर बना होता है।......................और.....................

उत्तर– अलम् + कार

प्र:12 अनुप्रास शब्द दो शब्दो से मिलकर बना है। इसमें अनु का अर्थ ....तथा प्रास का अर्थ ....है।

उत्तर–बार – बार, वर्ण

प्र:13 काव्य के सौदर्य में अभिवृद्धि करने वाले तत्व .... कहलाते है

उत्तर– अलंकार।

प्र:14 'कबीरा सोई पीर है, जो जाने पर–पीर।' पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर – यमक

प्र:15 पूत कपूत तो क्यूँ धन संचै पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर– लाटानुप्रासः

प्र:16 जहाँ पर वक्ता के द्वारा बोले गये शब्दों का श्रोता अलग अर्थ निकालता है, वहाँ .... अलंकार होता है–

उत्तर – वकोक्ति

प्र:17 "कौन तुम ? मैं घनश्याम। तो बरसो कित जाय" पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर– वकोक्ति

पारिभाषिक शब्द

(i) AUDIT	-	लेखा परीक्षा	(ii) APPLICANT	-	आवेदक
(iii) ADHOC	-	तदर्थ	(iv) AGENT	-	अभिकर्ता
(v) APPENDIX	-	परिष्टि	(vi) AUCTION	-	नीलामी
(vii) BILL	-	विधेयक	(ix) BOND	-	बंधपत्र
(x) BRIEF	-	संक्षेप	(xi) CABINET	-	मंत्रिमण्डल
(xii) CENSUS	-	जनगणना	(xiii) COUNCIL	-	परिषद

शेखावाटी मिशन–100

(xiv) DLEGATE	-	प्रतिनिधि	(xv) EMPLOYMENT	-	रोज़गार
(xvi) FINANCE	-	वित्त	(xvii) GAZETT	-	राजपत्र
(xvii) GRANT	-	अनुदान	(xviii) GUARANTEE	-	जमानत / प्रव्याभूति
(xix) INTERVIEW	-	साक्षात्कार	(xx) INVOICE	-	बीजक
(xxi) JUDICIAL	-	न्यायिक	(xxii) LEGAL	-	वैध
(xxiii) LICENCE	-	अनुज्ञाप्ति	(xxiv) MANIFESTO	-	घोषणा पत्र
(xxv) OATH	-	शपथ	(xxvi) RECRUITMENT	-	भर्ती
(xxv)TENDER	-	निविदा / नीलामी			

अभिव्यक्ति और माध्यम

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न–

प्र:1 फीचर लेखन क्या है ?

उत्तर– किसी भी सामाजिक, घटना की रोचक एवं मनोरंजक व्याख्या फीचर कहलाती है।

प्र:2 आलेख में विषय वर्णन कैसे होता है?

उत्तर– आलेख में विपत्र का संक्षिप्त व सारगर्भित वर्णन होता है।

प्र:3 फीचर कितने प्रकार का होता है?

उत्तर– फीचर चार प्रकार का होता है–

(i) व्यक्तिगत परक (ii) समाचार परक (iii) चित्रपरक (iv) यात्रापरक

प्र:4 फीचर और अलेख में अन्तर लिखो।

उत्तर– फीचर का संबंध दिल से होता है, जबकि आलेख का संबंध मस्तिष्क से होता है।

प्र:5 पत्रकारिता की आधुनिक विधा कौनसी है ?

उत्तर– फीचर पत्रकारिता की आधुनिक विधा है।

प्र:6 टी.वी. के लिए खबर लिखने की बुनियादी शर्त क्या है?

उत्तर– दृश्य के साथ लेखन।

प्र:7 तुरंत घटी घटना की सूचना तत्काल किस रूप में दर्शकों तक पहुंचायी जाती है?

उत्तर– लाइव

प्र:8 हिंदी में नेट पत्रकारिता किसके साथ शुरू हुई ?

उत्तर– वेब दुनिया

प्र:9 भारत में पहला छापाखाना कहाँ खुला था?

उत्तर– सन् 1556 में गोवा में।

प्र:10 वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय किसकों जाता है?

उत्तर– तहलका डॉट कॉम

शेखावाटी मिशन–100

प्र:11 जन संचार के आधुनिक माध्यमो में सबसे पुराना माध्यम है

उत्तर– प्रिंट

प्र:12 विश्व स्तर पर इस समय पर इंटरनेट पत्रकारिता का कौनसा दौर चल रहा है?

उत्तर– तीसरा

प्र:13 इन्टरनेट पर मौजूद हिंदी की साहित्यिक पत्रिका कौनसी है ?

उत्तर– वागर्थ, कादंबनी, हिंदी सराय।

प्र:14 उल्टा पिरामिड शैली में समाचार को कितने भागों में बांटा जाता है –

उत्तर– तीन

प्र:15 समेकित माध्यम किसे कहते हैं ?

उत्तर– इन्टरनेट

अभिव्यक्ति और माध्यम

लघुत्तरात्मक प्रश्न–

प्र:1 नेट पत्रकारिता से क्या आशय है ?

उत्तर– इन्टरनेट पर अखबारों का प्रकाशन, लेखों, फीचर, चर्चा –परिचर्चा, झलकियों को दर्ज करने को नेट पत्रकारिता कहते हैं।

प्र:2 'ड्राइ एंकर' किसे कहते हैं?

उत्तर– जब खबर के दृश्य नहीं आते, एंकर दर्शकों को रिपोर्टर से मिली जानकारियों के आधार पर सूचनाएँ पहुँचाता है, उसे ड्राई एंकर कहते हैं।

प्र:3 भारत में इन्टरनेट पत्रकारिता के बारे में बताइये।

उत्तर– भारत में इन्टरनेट पत्रकारिता की शुरुआत 1993 से हुई। दूसरा दौर 2003 में शुरू हुआ। पहले दौर में भारत में भी प्रयोग हुआ। डॉटकाम तूफान आया और शीघ्र ही चला गया । अन्त में वे ही टिके रह पाये जो मीडिया में पहले से थे। रीडिफ भारत की पहली साइट है जो अब भी चल रही है।

प्र:4 एन कोडिंग से क्या अर्थ है?

उत्तर– सन्देश भेजने के लिए विशेष कूटों का प्रयोग होता है। भाषा भी एक प्रकार का कूट ही है। अतः प्राप्तकर्ता को समझाने के लिए कुटों में सन्देश को बांधना एन कोडिंग कहलाता है।

प्र:5 एंकर बाइट किसे कहते हैं?

उत्तर– एंकर बाइट का अर्थ है–कथन। टेलीविजन में किसी खबर को पुष्ट करने के लिए इससे सम्बन्धित बाइट दिखाई जाती है

प्र:6 पत्रकार के क्या दायित्व है?

उत्तर– पत्रकार का दायित्व पाटको तथा दर्शकों तक सूचना पहुँचाना, उन्हे जागरूक और शिक्षित करने के साथ–साथ उनका मनोरंजन करना है।

प्र:7 'विद्यालयों में नो बैग डे' विषय पर संक्षिप्त आलेख लिखिए ।

उत्तर– राजस्थान सरकार ने शिक्षा में नवाचार को ध्यान में रखते हुए सत्र 2021–2022 से समस्त विद्यालय के विद्यार्थियों को

शेखावाटी मिशन–100

बिना बैग के सप्ताह के प्रत्येक शनिवार को विद्यालय मे आकार निर्धारित समूहों में तय गतिविधियों के तहत कार्य करते हुए विभिन्न स्तर उत्तीर्ण करने होते है। ऐसा कार्यक्रम शुरू हुआ।

प्रः8 राजीव गांधी ग्रामीण ओलम्पिक खेल विषय पर एक संक्षिप्त आलेख लिखों।

उत्तर– खेलो को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से राजस्थान सरकार ने अपने घोषणा के अनुरूप ग्राम पंचायत, ब्लॉक, जिला एवं राज्य स्तर पर छः खेल इवेंटो का आयोजन कर विजेता खिलाड़ियों को विभिन्न योजनाओं में भाग लेने पर अंक प्रदान करने का वादा किया है।

प्रः9 उल्टा पिरामिड शैली में समाचार के कितने हिस्से होते हैं?

उत्तर– समाचार के तीन हिस्से होते हैं– (i) इन्ट्रो (ii) बॉडी (iii) समापन

इन्ट्रो का अर्थ लीड या शुरूआत से होता है। यह खबर का मूल तत्व होता है। बाँडी के समाचार का विस्तृत ब्योरा होता है, जो महत्व के घटते क्रम में होता है।

प्रः10 जन संचार के प्रमुख माध्यम कौन से है?

उत्तर– जन संचार के प्रमुख माध्यम है – प्रिंट, टी. वी. रेडियों और इन्टरनेट। इन सभी माध्यमों में समाचार की लेखन शैली और प्रस्तुति में अन्तर हैं।

प्रः11 टी.वी. मे सूचनाओं के कितने चरण होते है?

उत्तर– टी.वी. में सूचनाओं के सात चरण होते है–

(i) फ्लेश या ब्रेकिंग–न्यूज (ii) ड्राई–एंकर (iii) फोन–इन (iv) एंकर–विजुअल (v) एंकर–बाइट (vi) लाइव (vii) एंकर–पैकेज।

प्रः12 फोन –इन का क्या आशय है?

उत्तर– एंकर घटना स्थल पर स्थित संवाददाता से फोन पर बात करने सूचनाएँ दर्शकों तक पहुँचाता है। इसमें संवाददाता घटनास्थल पर रहकर ज्यादा से ज्यादा जानकारी दर्शका तक पहुँचाता है।

प्रः13 इन्टरनेट के गुण व अवगुणों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर– इन्टरनेट ने जहाँ पढ़ने–लिखने वालों में लिए, शोधकर्ताओं के लिए सम्भावनाओं के द्वार खोले हैं, हमें विश्व ग्राम का सदस्य बनाया है। इसमें कमियाँ भी है। इसमें लाखो आपत्तिजनक सामग्री भर दी गई है, जो बच्चों के कोमल मन पर विपरीत प्रभाव डालता है। दूसरी कमी यह भी है कि इसका दुरूपयोग किया जा सकता है।

प्रः14 प्रिंट मीडिया की कमी बताइये।

उत्तर– (i) निरक्षरों के लिए पूर्व अनुपयोगी

(ii) समाचारों की समय सीमा

(iii) अशुद्धि छपने पर विरोध का डर

(iv) स्पेश का ध्यान रखना पड़ता है।

प्रः15 आधुनिक युग में जनसंचार का सबसे पुराना मध्यम क्या है ?

उत्तर– प्रिंट अर्थात् मुद्रित माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना है। आधुनिक युग का प्रारम्भ ही मुद्रण या छपाई

शेखावाटी मिशन–100

के आविष्कार से हुआ। यद्यपि मुद्रण का प्रारम्भ चीन में हुआ पर आज हम जिस छापेखाने को देखते हैं उसका श्रेय जर्मनी के गुटेनबर्ग को है।

प्र:16 समाचार क्या है? संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

उत्तर – समाचार जन संचार का मुद्रित माध्यम है। समाचार मुख्यतः किसी घटना की तथ्यात्मक सूचना देते है। इनका उद्देश्य लोगों की जिज्ञासा का समाधान करना तथा सूचनात्मक ज्ञान को बढ़ाना है। समाचार की भाषा सरल और जनता में प्रचलित तथा शैली विवरणात्मक होती है। समाचार प्रायः खेलकूद, फिल्मजगत, व्यापार, विज्ञान, समाज तथा राजनीति इत्यादि विषयों से संबंधित होते हैं।

प्र:17 जनसंचार का सबसे पुराना माध्यम क्या है ? इसके अन्तर्गत क्या–क्या माध्यम आते है?

उत्तर – जनसंचार का सबसे पुराना माध्यम स्वयं मनुष्य है। पौराणिक काल में देवर्षि नारद को प्रथम समाचारवाचक माना जा सकता है। महाभारत काल में संजय की परिकल्पना भी अत्यन्त समृद्ध संचार व्यवस्था को इंगित करती है। शिलालेख, गुफा चित्र, सांग, रागनी, तमाशा, लावनी, नौटंकी, जात्रा, गंगा–गौरी एवं यक्ष गान आदि इसी माध्यम के अन्तर्गत आते है।

शेखावाटी मिशन–100

आरोह पद्य भाग

खण्ड 'अ'

प्र:1 निम्नलिखित बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

(i) कविता की उड़ान होती है–

(अ) सीमित (ब) असीमित (स) सरल (द) जटिल **(ब)**

(ii) अपाहिज को कैमरे में बंद करने का उद्देश्य है–

(अ) उसे दूरदर्शन दिखाना (ब) उसकी सहायता करना

(स) उसकी मजाक उड़ाना (द) उसके माध्यम से धन कमाना **(द)**

(iii) 'बादल राग' कवितांश निराला के किस काव्य संग्रह से उद्धृत है?

(अ) अनामिका (ब) परिमल (स) नये पत्ते (द) अणिमा **(अ)**

(iv) तुलसीदास ने सबसे बड़ी आग बताया है –

(अ) जंगल की आग (ब) समुद्र की आग (स) पेट की आग (द) घर की आग **(स)**

(v) "जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव" पंक्ति में जग क्या जोड़ता है?

(अ) स्वर्ग को (ब) घरों को (स) धन को (द) प्रसिद्धि को **(द)**

(vi) फिराख गोरखपुरी ने साहित्य में किस छंद का प्रयोग किया?

(अ) मुक्तक (ब) गजल (स) रुबाइयाँ (द) दोहा **(स)**

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न (आरोह– पद्य भाग) (उत्तर सीमा–40 शब्द)

प्र:1 "है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता" कवि बच्चन को यह संसार अपूर्ण क्यों लगता है ?

उत्तर– डॉ. हरिवंशराय बच्चन मानते है कि मानवजीवन में प्रेम ही सर्वोपरि है और जीवन की सरलता, सरसता सब प्रेम पर ही

निर्भर है। कवि को ऐसा कोई प्रेमी हृदय नहीं मिला जिससे वे अपनी भावनाएँ व्यक्त कर सके, इसलिए उन्हें यह संसार अपूर्ण लगता है।

प्र:2 "जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास" बच्चों का कपास के साथ क्या संबंध है स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– कपास बहुत हल्की, कोमल होती है, तथा कोई भी चोट सहन कर सकती है। बच्चे भी हल्के–फुल्के, कोमल, नाजुक और चोट सहन करने में समर्थ होते हैं। इसी कारण वे पतंग उड़ाते समय, खेलते समय खूब भाग–दौड़ कर पाते हैं। इसमें बच्चे और कपास में उपमेय–उपमान का संबंध है।

प्र:3 "क्या तुमने भाषा को सहूलियत से बरतना कभी नहीं सीखा?" पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर– कवि कविता में चमत्कार का प्रदर्शन करने के लालच में कठिन शब्दों का प्रयोग कर देता है जिससे कविता की सम्प्रेषणीयता और सहजता नष्ट हो जाती है। भाषा को तोड़ना–मरोड़ना उसके सीधे सरल अर्थ को नष्ट करना है जिससे कविता का भाव सौन्दर्य स्पष्ट नहीं होता है। ऐसा आचरण करना ही नासमझी मानी जाती है।

प्र:4 "हम समर्थ शक्तिवान, हम एक दुर्बल को लाएँगे, एक बंद कमरे में" प्रस्तुत पंक्ति में कवि का कौनसा भाव व्यंजित हुआ है?

उत्तर– कविता की उक्त पंक्तियों में कवि की एक अपाहिज दुर्बल व्यक्ति के प्रति करुणा, संवेदना एवं सहानुभूति व्यक्त हुई है। साथ ही दूरदर्शन पर कार्यक्रम संचालकों की संवेदनहीनता पर व्यंग्य एवं आक्षेप व्यंजित हुआ है।

प्र:5 शमशेर बहादर सिंह की किन्हीं दो रचनाओं का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर – (i) बात बोलेगी (ii) काल तुझसे होड़ है मेरी

प्र:6 "अट्टालिका नहीं है रे आतंक–भवन।" कवि ने अट्टालिका को आतंक भवन क्यों कहा है?

उत्तर– कवि अट्टालिका को आतंक भवन इसलिए कहता है कि धनवानों के ये ऊँचे–ऊँचे भवन गरीबों को सुख देने वाले न होकर उनका शोषण करके आतंक फैलाते है तथा गरीबों में भय उत्पन्न करने के कारण इन अट्टालिकाओं का आंतक भवन कहा है।?

प्र:7 "तव प्रताप उर राखि प्रभु जैहऊँ नाथ तुरन्त" यह पंक्ति किसने, कब और किसको कही?

उत्तर– यह हनुमान ने भरत से कहा। संजीवनी बूँटी ले जाते समय भरत ने अपने बाण से घायल हनुमान को जब अभिमन्त्रित बाण पर बिठाया तब हनुमान ने कहा कह कि आप बड़े प्रतापी राजा है, मैं आपके प्रताप का स्मरण कर तुरन्त ही लंका श्रीराम के पास पहुंच जाऊँगा।

लघूत्तरात्मक प्रश्न (ज्ञानो प्रयोग/अभिव्यक्ति) उत्तर सीमा–60 से 80 शब्द–

प्र:1 "छोटा मेरा खेत" कविता में कवि ने खेत की समानता चौकोर पन्ने से किस प्रकार की है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– कवि उमाशंकर जोशी छोटे चौकोर खेत को कागज का पन्ना कहते हैं। कवि– कर्म करना भी किसान के द्वारा खेती करने जैसा श्रमसाध्य कार्य है। कागज के पन्ने और खेत के आकार में भी समानता है जैसे बुआई, अंकुरण और पौधों के फल–फूल देने में है। । भावार्थ यह है कि जिस प्रकार कविता शब्दों के बीजों द्वारा अंकुरित होती है। कल्पना के सहारे विकसित होती है। उसी प्रकार खेत को लहलाते देख किसान भी प्रसन्न होता है। कवि का चौकोर पन्ना और किसान का छोटा खेत एक समान है।

शेखावाटी मिशन–100

प्र:2 'पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है।' तुलसी का यह काव्य सत्य क्या आज भी युग सत्य है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– तुलसीदास जी ने स्पष्ट कहा है कि ईश्वर भक्ति रूपी मेघ ही पेट की आग को बुझा सकते हैं। तुलसी का यह काव्य सत्य उस युग में भी था और आज भी सत्य है। प्रभु भक्ति से सत्कर्म की प्रवृत्ति बढ़ती है और सत्कर्म से व्यक्ति ईमानदारी से अपने पेट की आग, को शांत कर सकता है। सत्कर्म और कर्मनिष्ठा से व्यक्ति आर्थिक स्थिति में सुधार कर आजीविका की समुचित व्यवस्था कर सकता है। इस प्रकार कर्मनिष्ठ भक्ति से तुलसी का वह काव्य सत्य वर्तमान का सत्य दिखाई देता है। थोथी अंध आस्था एवं कर्महीनता से की गई भक्ति से व्यक्ति पेट की आग नहीं बुझा पाता है।

प्र:3 'बादल राग' कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– 'बादल राग' कवि निराला की क्रान्तिकारी भावों से परिपूरित कविता है।

इस कविता में कवि ने बादलों को क्रांति का प्रतीक बताया है। कवि शोषित–वर्ग के हित के लिए बादलों का आह्वान करता है। क्रांति के प्रतीक बादलों की गर्जना सुनकर पूँजीपति वर्ग भयभीत हो जाता है जबकि शोषित किसान–वर्ग आशा भरे नेत्रों से देखता है। अतः समाज में शोषितो किसानों को उनका अधिकार दिलाने हेतु क्रांति की आवश्यकता है। शोषकों व पूंजीपति वर्ग के प्रति व्यंजना–पूर्ण भावों की अभिव्यक्ति कर आर्थिक विषमता मिटाने पर जोर दिया है।

प्र:4 "जादू टूटता है इस उषा का अब सूर्योदय हो रहा है" उषा कविता में भोर के प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर– भोर होते ही आकाश में कुछ–कुछ लालिमा फैलने लगती है फिर नीले आकाश में सूर्य का गौर झिलमिलाता तेज, प्रकाश से युक्त बिंब चमकने लगता है। उससे उषा का प्राकृतिक सौन्दर्य समाप्त हो जाता है और ऐसा लगता है कि अब उषा का जादू टूट गया है। प्रातः कालीन आकाश राख से लीपे हुये चौके जैसा, लाल केसर से धुली हुई काली सिल जैसा और बाद में सूर्योदय होने पर प्रकाश से जगमगाने लगता है।

प्र:5 'दिन जल्दी–जल्दी ढलता है' कविता में व्यक्त भावो/उद्देश्य पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर– कवि हरिवंशराय द्वारा रचित गीत 'दिन जल्दी–जल्दी ढलता है' में कवि ने प्रकृति की दैनिक परिवर्तनशीलता के सन्दर्भ में मानव–मात्र के धड़कते हुये हृदय के भावों को सुनने की काव्यात्मक कोशिश की है। प्रिय व्यक्ति से मिलने की उत्कण्ठ इच्छा या अपने स्वजनों के मध्य रहने का सुकून पैरों की गति में चंचलता भर देता है। इस अनुभूति के सहारे हम शिथिलता को प्राप्त होने से बच जाते है। यह गीत गुजरते समय की तीव्रता का अहसास एवं लक्ष्य प्राप्ति का जोश लिए हुये है। हमे जल्दी से अपने लक्ष्य को प्राप्त करना होगा। यही संदेश इस कविता का मुख्य उद्देश्य है।

प्र:6 'कविता के बहाने' कविता के आधार पर 'सब घर एक कर देने के माने' क्या हो सकते है। बताइए।

उत्तर– 'सब घर एक कर देने का आशय है कि आपसी भेदभाव, अलगाव बोध तथा आस–पड़ोस के अन्तर को समाप्त करके सभी प्राणियों के प्रति अपनत्व की भावना रखना और वैसा ही आचरण करना। सब घर एक कर देने जैसा व्यवहार खासकर बच्चे करते हैं। बच्चे खेल में अपने पराये का भेद भूल जाते है, सभी घरों को अपना घर जैसा मानते हैं। उसी प्रकार कवि भी अपनी कविता में सकल मानव समाज को समान मानकर अपनी बात कहता है। कविता में शब्दों के खेल

शेखावाटी मिशन–100

के साथ मानवीय भावना जुड़ी होती है, जिसमें सभी प्रकार की सीमाएँ स्वयं छूट जाती है।

प्र:7 'यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता'– इस पंक्ति के अनुसार कवि को यह संसार अधूरा क्यों लगता है ?

उत्तर– इस संसार में सब कुछ अपूर्ण–अधूरा है। कुछ भी स्थायी नहीं है, सभी माया–मोह में फँसे हैं तथा राग–द्वेष और स्वार्थपरता में लीन हैं। कवि का अपना अलग ही सपनों का संसार है। कवि उसी में पूर्णता पाता है।

प्र:8 'पतंग' कविता के आधार पर पतंग की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर–'पतंग' कविता में कवि ने शरद ऋतु में आसमान में उड़ने वाली पतंगों का वर्णन किया है। कवि ने बताया है कि पतंग दुनिया की सबसे हल्की और रंगीन चीज है। वह दुनिया के सबसे पतले कागज से बनी होती है। उसमें बाँस की सबसे पतली कमानी लगी होती है। बच्चे उसे आसमान में उड़ाते हैं। बहुत हल्की और नाजुक होने पर भी वह आसमान में खूब ऊँचाई पर उड़ती है।

प्र:9 'बात के भाषा में बेकार घूमने' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर– आशय यह है कि क्लिष्ट तथा बनावटी भाषा में व्यक्त होने के कारण कविता प्रभावहीन हो गई । श्रोता तथा पाठक उसे समझ नहीं सके। कवि का प्रयास भी असफल हो गया। दुरूह भाषा में भावाभिव्यक्ति असंभव हो गई।

प्र:10 'कैमरे में बन्द अपाहिज' कविता के व्यंग्य पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर– 'कैमरे में बन्द अपाहिज' कविता में कवि ने दूरदर्शन की संवेदनहीन कार्यप्रणाली पर पैना व्यंग्य किया है। दूरदर्शन पर सामाजिक और उद्देश्यपूर्ण कहकर जो कार्यक्रम दिखाए जाते हैं उनका छद्म उद्देश्य होता है– पीड़ितों की पीड़ा को पर्दे पर बेचकर अधिक से अधिक धन कमाना । किसी के दुख–दर्द को तमाशा बनाना, उसको दर्शकों के सामने चटपटे व्यंजन की तरह परोसना अमानवीयता है। कवि ने इस वणिकवृत्ति पर कविता में करारी चोट की है।

प्र:11 सूर्योदय होने से उषा का कौन–सा जादू टूट जाता है ?

उत्तर– सूर्योदय होते ही प्रकाश तेज हो जाता है। इससे आकाश का कालापन मिट जाता है तथा उषा की लालिमा भी सूर्य की किरणों के रूप में सफेद रंग में बदल जाती है। सूर्य की किरणों के प्रबल होते ही सबेरे की नमी भी सूखने लगती है। जो सौन्दर्य उषा के जादू के समान लगता था, वह सूर्योदय होने पर अदृश्य हो जाता है।

प्र:12 बादल राग कविता में 'ऐ विप्लव के वीर!' किसे कहा गया है और क्यों ?

उत्तर– 'बादल राग' कविता में निराला जी ने बादल को विप्लव का वीर कहा है। कवि ने इस कविता में बादल को क्रान्ति दूत के रूप में प्रस्तुत किया है। किसान के श्रम का लाभ शोषक पूँजीपति उठा रहे हैं। मेहनत करने से उसका शरीर दुर्बल हो गया है, बाँहें थक गई हैं। वह क्रान्तिवीर बादल को पुकार रहा है। वही उसको जीवनदायी जल देकर नवजीवन दे सकता है तथा शोषण से उसकी रक्षा कर सकता है।

<u>निबन्धात्मक प्रश्न–</u>

प्र:13 "मैं सीख रहा हूँ सीखा ज्ञान भुलाना"– कवि ने क्या सीखा है? उसे वह भुलाना क्यों चाहता है?

उत्तर– कवि ने संसार को मूढ़ (मूर्ख) माना है क्योंकि लोग उस सांसारिक ज्ञान के पीछे पड़े हैं जो उन्हें सत्य तक नहीं पहुँचा सकता। वे परमात्मा तक पहुँचाने वाले सच्चे आत्मिक ज्ञान की उपेक्षा कर रहे हैं। अनुपयुक्त साधन (भौतिक ज्ञान) को

शेखावाटी मिशन–100

अपनाकर सत्य (परमात्मा) को पाने की कामना करने वाला यह संसार मूर्ख ही तो है। कवि ने ज्ञान तो प्राप्त किया है परन्तु उसका ज्ञान भौतिक अनुभवों पर आधारित है। उसमें त्याग नहीं संग्रह की वृत्ति है, गुणों के कारण किसी का सम्मान करने की भावना नहीं, चापलूसों तथा ठकुरसुहाती कहने वालों को महत्त्व देने का भाव है। अतः यह लक्ष्य (सत्य) प्राप्ति में बाधक है कवि इस अपूर्ण ज्ञान को भुला देना चाहता है।

प्र:14 'पतंग' कविता के भाव–सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–कवि ने वर्षा के अन्त तथा शरद के आगमन का संकेत दिया है। शरद ऋतु के चित्रण में बिंबों के माध्यम से बाह्य प्रकृति के सजीव चित्र प्रस्तुत किए गए हैं।

कवि ने पतंग उड़ाने में तल्लीन बच्चों के भी जीते–जागते चित्र खींचे हैं। उसने बच्चों की तल्लीनता, साहस, निर्भीकता तथा चंचलता इत्यादि गुणों को कविता में साफ–साफ प्रकट किया है। बच्चे पतंग की डोर पकड़े उसे उड़ा ही नहीं रहे हैं बल्कि स्वयं भी पतंग के साथ–साथ आनन्द और प्रसन्नता के आकाश में उड़ रहे हैं। 'पतंग' उड़ाने से प्राप्त साहस और निर्भीकता बच्चों को भावी जीवन में संघर्षों का सामना करने की शक्ति देती है।

प्र:15 'कविता के बहाने' कविता का संक्षिप्त सारांश लिखिए।

उत्तर– 'कविता के बहाने' कुँवर नारायण के 'इन दिनों' नामक काव्य संग्रह से ली गई है। इस कविता के माध्यम से कवि ने काव्य प्रेमियों को आश्वस्त करना चाहा है कि भौतिकवादी विचारधारा के इस युग में भी कविता के अस्तित्व पर कोई संकट नहीं है। कवि ने 'चिड़िया की उड़ान' तथा 'फूल के खिलने' से कविता के व्यापक प्रभाव तथा उसके चिरजीवी आनंद की ओर संकेत दिया है। 'बच्चों के खेल' द्वारा कवि संदेश देना चाहता है कि बच्चों के खेल की तरह कविता भी लोगों को परस्पर मिलाने का काम करती है। वह घरों और देशों की सीमाओं में बँध कर नहीं रहती।

प्र:16 'कैमरे में बन्द अपाहिज'–कविता का प्रतिपाद्य/उद्देश्य/संदेश क्या है?

उत्तर– 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता का प्रतिपाद्य किसी की पीड़ा का प्रदर्शन करके दूरदर्शन की प्रसार संख्या को बढ़ाने के कदम को अनुचित ठहराना है तथा दूरदर्शन के कार्यक्रमों के सोच और स्तर पर प्रकाश डालना है। इस कविता का उद्देश्य यह बताना भी है कि किसी की पीड़ा का बाजारीकरण कदापि उचित नहीं है। कविता में संदेश निहित है कि दीन–दुखियों की पीड़ा बेचने की चीज नहीं है। अप्रत्यक्ष रूप से कविता में अपाहिज जनों के प्रति सहानुभूति तथा करुणा का भाव मन में रखने की प्रेरणा दी गई है।

प्र:17 शमशेर बहादुर सिंह की कविता 'उषा' नवीन बिम्बों व उपमानों का जीवंत दस्तावेज है। स्पष्ट करें।

उत्तर– 'उषा' शमशेर बहादुर सिंह की एक प्रयोगवादी रचना है। कवि ने इसमें सूर्योदय से पहले के भोर के सुन्दर प्राकृतिक दृश्य का चित्रण नवीन बिम्बों तथा प्रतीकों का सहारा लेकर किया है। राख से लीपा हुआ चौका, केसर से धुली काली सिल, लाल खड़िया चाक से मली स्लेट आदि प्रतीक तथा बिम्ब ही कवि के भावों को चित्र के समान सजीव रूप दे रहे हैं। प्रयोगवादी काव्य शैली में कवियों द्वारा पहले से चले आ रहे बिम्बों तथा उपमानों के स्थान पर सर्वथा नए बिम्बों का प्रयोग किया गया है। 'उषा' कविता में भोर का दृश्य प्रस्तुत करने के लिए कवि ने आकाश को नीला शंख, राख से लीपा चौका, लाल केसर से धुली काली सिल, लाल खड़िया से मली हुई स्लेट तथा नीले जल में हिलती किसी की गोरी देह के समान बताया है। ये सभी उपमान नए हैं।

शेखावाटी मिशन–100

कवि परिचय

उत्तर– **(i) हरिवंशराय बच्चन परिचय–**

आधुनिक हिन्दी साहित्य में हालावाद के प्रवर्तक डॉ. हरिवंशराय बच्चन का जन्म सन् 1907 ई को इलाहाबाद में हुआ। इनके पिता का नाम प्रतापनारायण एवं माता का नाम सरस्वती देवी था। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक एवं स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण की तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। ये इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्राध्यापक रहे, आकाशवाणी तथा विदेश मंत्रालय में हिंदी विशेषज्ञ रहे। 1969 में 'दो चट्टानें' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। 1976 ई में इन्हें पद्मभूषण तथा सन् 1992 में सरस्वती पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जनवरी 2003 में मुम्बई में इनका निधन हुआ।

प्रमुख रचनाएं – मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा– निमन्त्रण, आकुल अन्तर, एकान्त संगीत, मिलन यामिनी, सतरंगिणी, आरती और अंगारे, नये पुराने झरोखे, टूटी–फूटी कड़ियों (काव्य संग्रह) इनकी आत्मकथा चार खण्डों में प्रकाशित है। बच्चन का समस्त वाङ्मय 'बच्चन ग्रंथावली' नाम से दस खण्डों में प्रकाशित किया गया है।

(ii) कुँवर नारायण–

कुवर नारायण का जन्म 1927 में फैजाबाद, उत्तरप्रदेश में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम.ए. किया। यायावरी प्रकृति के कारण इन्होंने पोलैण्ड, रूस, चीन की यात्रा की। 1950 ई के आस पास इन्होंने काव्य लेखन आरंभ किया।

सम्मान – कबीर सम्मान, व्यास सम्मान, लोहिया सम्मान, साहित्य अकादमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार आदि।

रचनाएँ – ये तीसरे सप्तक के प्रमुख कवि है। इनकी प्रमुख रचनाएं निम्नलिखित है– चक्रव्यूह, परिवेश हम तुम, अपने सामने, कोई दूसरा नहीं, इन दिनों (काव्य संग्रह).

प्रबंध काव्य – आत्मजमी कहानी संग्रह – आकारों के आस–पास, निधन–2017.

(iii) कवि परिचय "सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला"–

महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1897 में बंगाल के महिषादल रियासत के मेदिनीपुर जिले में हुआ। महाकवि निराला 'रामकृष्ण मिशन, अद्वैत आश्रम तथा बेलूर मठ से जुड़े रहे। ये अपनी पत्नी की मृत्यु से आहत होकर अपने पैतृक गाँव गढ़कोला लौट आये। लखनऊ और इलाहाबाद में रहकर साहित्य सृजन किया। निराला युगान्तकारी कवि थे। इनकी कविता में तत्कालीन समाज की पीड़ा, परतंत्रता, कुण्ठा के प्रति आक्रोश तथा अन्याय व असमानता के प्रति गहरा विद्रोह है। इनका निधन 1961 में हुआ।

रचनाएँ – परिमल, गीतिका, अनामिका, तुलसीरास, कुकुरमुता (काव्य संग्रह) इनकी समस्त रचनाओं को 'निराला ग्रंथावली' नाम से आठ खण्डों में प्रकारित किया गया है। 'तुलसीदास और राम की शक्तिपूजा' उनके गहन चिन्तन प्रौढता एवं प्रखरता के परिचायक है।

(iv) रघुवीर सहाय–

रघुवीर सहाय का जन्म सन् 1929 लखनऊ (उ.प्र.) में हुआ। थे समकालीन हिंदी कविता के संवेदनशील कवि है। साहित्य

शेखावाटी मिशन–100

सेवा के कारण इनको 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इनका देहावसान 1990 में दिल्ली में हुआ।

प्रमुख रचनाएं – 'आत्म हत्या के विरुद्ध,' सीढ़ियों पर धूप, लोग भूल गये हैं, हँसो–हँसो जल्दी हँसो।

– ये ऑल इडिया रेडियो के हिन्दी समाचार विभाग तथा कल्पना, नवभारत टाइम्स, एवं दिनमान पत्र पत्रिकाओं से सम्बद्ध रहे।

– लोग भूल गये है" कृति पर इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ।

(v) तुलसीदास का कवि परिचय–

हिन्दी साहित्य की सगुण काव्य धारा में रामभक्ति धारा के सर्वोपरि कवि तुलसीदास का जन्म बाँदा (उ.प्र.) जिले के राजापुर गाँव में सन् 1532 के लगभग हुआ। इनके पिता का नाम आत्माराम और माता का नाम हुलसी था। इनका बचपन अतीव कष्टमय रहा। बाबा नरहरिदास ने इन्हें शिक्षा–दिक्षा प्रदान की। इनका निधन काशी में सन् 1623 में श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन हुआ।

तुलसीदास जी ने अनेक ग्रंथ रचे जिनमें से प्रमुख है– रामचरितमानस, कवितावली, गीतावली, दोहावली, विनयपत्रिका, कृष्ण गीतावली, पार्वती. मंगल, जानकी मंगल, रामलला नहछु, हनुमान बाहुक, वैराग्य संदिपनी, इत्यादि है।

इनका 'रामचरितमानस' हिन्दी का सर्वोत्कृष्ट महाकाव्य माना जाता है। इनके काव्य की भाषा अवधी तथा ब्रजभाषा रही थी।

(vi) उमाशंकर जोशी का कवि परिचय–

इनका जन्म गुजरात में सन् 1911 में हुआ था। इन्होंने गुजराती कविता को प्रकृति से जोड़ा तथा आम जिन्दगी के अनुभव से परिचय करवाया। इन्होंने भारत की आजादी की लड़ाई में भाग लिया तथा जेल भी गए ।

जोशीजी प्रमुख रचनाएं– 'विश्व शांति, गंगोत्री, निशीध, प्राचीना, आतिथ्य, बसंत वर्षा, महाप्रस्थान, अभिज्ञा (एकांकी) सापनाभारा, शहीद (कहानी) श्रावणी मेणो, विसामो (उपन्यास) इन्होंने 'संस्कृति' पत्रिका का सम्पादन भी किया। साहित्य को नव भंगीमा व स्वर देने वाले उमाशंकर जोशी का निधन सन् 1988 में हुआ।

सप्रसंग व्याख्या– आरोह–पद्य भाग

निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

प्र:1 "मैं जग–जीवन का भार लिए फिरता हूँ;
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर,
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ।

मैं स्नेह–सूरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ! ?

उत्तर– मैं जग...................... करता हूँ

@SHEKHAWAT
IMISSION100
शेखावाटी मिशन 100 की कक्षा 10 एवं 12 के विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें
शेखावाटी मिशन–100

सन्दर्भ–उपर्युक्त पद्यांश कक्षा 12 की आधार हिन्दी पुस्तक 'आरोह–2 के कवि हरिवंशराय बच्चन की कविता 'आत्म–परिचय' से लिया गया है।

प्रसंग –'निशा–निमन्त्रण' से संकलित इस कवितांश में कवि अपनी जीवन शैली का परिचय दिया है कि वह किस प्रकार विपरीत परिस्थितियों में भी जीवन में स्नेह भार लिये घूमते हैं।

व्याख्या–कवि कहता है कि मैं इस सांसारिक जीवन का भार अपने ऊपर लिये हुये फिरता रहता हूँ। किसी प्रिय ने मेरे ह्रदय की कोमल भावनाओं का स्पर्श करके ह्रदय रूपी वीणा के तारों को झंकृत कर दिया है। इस तरह मैं अपनी सासों के दो तार लिये हुए जग–जीवन में फिरता रहता हूँ। कवि बच्चन कहते हैं कि मैं प्रेम रूपी शराब को पीकर मस्त रहता हूँ। इसी मस्ती में इस बात पर कभी विचार नहीं करता हूँ कि लोग मेरे संबंध में क्या कहते हैं। यह संसार तो उन्हें पूछता है, अर्थात् प्रशंसा करता है जो उनके कहने पर चलते है उनके अनुसार गाता हूँ तथा कविता में अपने मनोभावों को अभिव्यक्ति देता हूँ।

विशेष–(i) कवि अपने जीवन के सुख दुख व प्रेम का दायित्व स्वयं उठाये हुये हैं।

(ii) मुक्त छंद एवं तुकान्त कविता की विधा है।

(iii) रूपक, अनुप्रास आदि अलंकारों का सुन्दर प्रयोग है।

(iv) खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग हुआ है।

(v) कोमल कान्त शब्दावली का प्रयोग हुआ है।

प्र:2 सप्रसंग व्याख्याः–

"जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध,
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अक्सर
छतों के खतरनाक किनारों तक–
उस समय गिरने से बचाता है उन्हें
सिर्फ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत

@SHEKHAWATIMISSION100
शेखावाटी मिशन 100 की कक्षा 10 एवं 12 के विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें

उत्तर– 'जन्म से .... संगीत

सन्दर्भ – उपर्युक्त पद्यांश कक्षा–12 की आधार हिन्दी पुस्तक आरोह भाग–2 के कवि आलोक धन्वा की कविता 'पतंग' से लिया गया है।

प्रसंग– कवि आलोक धन्वा की 'पतंग' एक लम्बी कविता है जिसके तीसरे भाग से यह कवितांश संकलित किया गया। बच्चों का कोमल व लचीला होना तथा पतंग उड़ाते समय किसी बात का होश न रखना, का कवि ने वर्णन किया है।

शेखावाटी मिशन–100

व्याख्या– कवि कहते हैं कि बच्चों का शरीर जन्म से ही रुई के समान कोमल होता है। उनकी कोमलता को स्पर्श करने के लिए स्वयं पृथ्वी भी उनके व्याकुल पैरों के पास जाती है। जब वे बेसुध होकर दौड़ते है, तब उनके पैरों के स्पर्श से कठोर छतें भी कोमल बन जाती है। उनके भागते पैरों की आवाज से प्रतीत होता है कि चारों दिशाएं मृदंग की भाँति मधुर संगीत निकाल रही हैं। वे पतंग उड़ाते हुए झुले की भाँति पेंग भरते हुए आगे–पीछे दौड़ते है। उस समय बच्चों का शरीर पेड़ की डालियों की तरह लचीलापन लिये हुये रहता है। कवि कहता है कि पतंग उड़ाते समय बच्चे छतों के खतरनाक किनारों तक आ जाते हैं, जहाँ अगर ध्यान न दिया जाये तो दुर्घटना हो सकती है। यहाँ उन्हें बचाने के लिए तेजी से कोई आ नहीं सकता है। केवल गिरने के भय से उत्पन्न हुआ उत्साह ही रोमांच बनकर उन्हें बचाता है।

विशेष–(i) कवि ने बच्चों की चेष्टाओं का सुन्दर वर्णन किया है।

(ii) मानवीकरण, अनुप्रास, उपमा अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

(iii) साहित्यिक खड़ी बोली युक्त मिश्रित शब्दावली का प्रयोग

(iv) बिम्बों का सहज सुन्दर प्रयोग द्रष्टव्य है।

प्रः3 सप्रसंग व्याख्या–

"आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था
जोर जबरदस्ती से
बात की चूड़ी मर गई
और वह भाषा में बेकार घूमने लगी!
हार कर मैंने उसे कील की तरह
उसी जगह ठोंक दिया।
ऊपर से ठीक–ठाक
पर अन्दर से
न तो उसमें कसाव था
ना ताकत!"

शेखावाटी मिशन 100 की कक्षा 10 एवं 12 के विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें

उत्तर– 'आखिरकार.....................ताकत'

सन्दर्भ– उपर्युक्त पद्यांश कक्षा – 12 की आधार हिन्दी पुस्तक 'आरोह', भाग–2 के अध्याय–3 कवि कुँवर नारायण द्वारा लिखित कविता काव्य संग्रह 'कोई दूसरा नहीं' की कविता 'बात सीधी थी पर' से लिया गया है।

प्रसंग–कवि ने इस पद्यांश में ऐसे कवियों पर व्यंग्य किया है जो वाहवाही लूटने के चक्कर में सीधी सरल भाषा को भी अपना पांडित्य प्रदर्शन के उद्देश्य से कठिन, बना देते हैं जिससे उस कविता का मूल भाव ही नष्ट हो जाता है। कवि ने कविता में भाषा की सहजता पर जोर दिया है।

व्याख्या – कवि कहता है कि बात् कहने के लिए उसे चमत्कारी स्वरूप देने के चक्कर में बनावटी भाषा का प्रयोग किया। आखिरकार परिणाम वही हुआ जिसका कवि को डर था। जिस प्रकार पेंच के साथ जबरदस्ती करने, उसे ज्यादा घूमाने से उसकी चूड़ी खत्म हो जाती है, उसी प्रकार भाषा पर अत्यधिक कसाव देने व प्रयोग करने से बात का प्रभाव व अर्थ

शेखावाटी मिश

दोनों खत्म हो गया। जिस तरह चूड़ी खत्म होने पर पेंच को उसी तरह ठोंक दिया जाता है कि अर्थ परिवर्तन की कोई गुंजाइश नहीं है, उसी प्रकार कवि ने भी भाषा को उसी बनावटी– पन के साथ वहीं छोड़ दिया, जो व्यर्थ, बिना प्रभाव के अस्तित्वहीन भाषा बन कर रह गई। तब उस भाषा में ऊपर से तो सब ठीक–ठाक सुन्दर प्रतीत होता है परंतु अन्दर से भाषा की अर्थपूर्ण कसावट तथा ताकत दोनों खत्म हो जाती है।

विशेष–(i) बात को कहने के लिए सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

(ii) कविता की विधा छंदमुक्त अतुकान्त है।

(iii) उर्दू शब्दावली बेतरह–करतब, आदि का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

(iv) जोर–जबरदस्ती में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है।

(v) 'बात की चूड़ी मरना' मुहावरे का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

@SHEKHAWAT
IMISSION100
शेखावाटी मिशन 100 की कक्षा 10 एवं 12 के विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें

प्र:4 सप्रसंग व्याख्या–

"बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गयी हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने।
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।
और.....................
जादू टूटता है इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है।"

उत्तर– 'बहुत काली...................................... हो रहा है।'

सन्दर्भ– उपर्युक्त पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक आरोह भाग–2 आधार हिन्दी के पाठ– 5 शमशेर बहादूर सिंह द्वारा लिखित कविता 'उषा' से लिया गया है।

प्रसंग–उषा कविता में कवि ने सूर्योदय से पहले पल–पल बदलते प्रकृति के सुन्दर का रूप वर्णन किया है।

व्याख्या– कवि सूर्योदय से पहले आकाश में पल–पल बदलते हुए वातावरण का चित्रण करते हुए कहता है कि भोर का दृश्य कुछ काले और लाल रंग के मिश्रण से अतीव मनोरम लगने लगा है। आकाश काली सिल हो और उसे अभी–अभी लाल केसर से धो दिया हो अथवा काली–नीली स्लेट पर लाल रंग की खड़िया चाक मल दी हो ऐसा लगने लगा है। नीले आकाश में सूर्य की किरणें ऐसे चमक रही है जैसे नीले जल में किसी सुन्दरी की गौरी देह झिलमिल, कर रही हो अर्थात् प्रातः कालीन सूर्य की किरणें हिलती हुई नायिका के समान लगती है, सूर्य का श्वेत बिंब भी हिलता हुआ सा प्रतीत हो रहा है। कुछ क्षण बाद जब सूर्योदय होता है तब उषाकाल का रंगीन सुरम्य वातावरण चमत्कारी जादू की

शेखावाटी मिशन

तरह समाप्त हो जाता है और चारों तरफ सूर्य का तेज प्रकाश फैल जाता है।

विशेष–(i) कविता में उषाकाल के दौरान सूर्य की लाल, पीली आभा का सुन्दर वर्णन किया गया है।

(ii) भाषा भावों के अनुरूप सरल, सुबोध है।

(iii) उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग हुआ है।

प्र:5 सप्रसंग व्याख्या–

"अट्टालिका नहीं है रे
आतंक–भवन
सदा पंक पर ही होता
जल– विप्लव–प्लावन,
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से
सदा छलकता नीर,
रोग– शोक में भी हँसता है
शैशव का सुकुमार शरीर।"

उत्तर– 'अट्टालिका........................ शरीर'

सन्दर्भ– उपर्युक्त पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक आधार हिन्दी आरोह–2 के अध्याय– 6 कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा लिखित काव्य संग्रह 'अनामिका' के छठे भाग 'बादल राग' से लिया गया है।

सन्दर्भ–प्रस्तुत पद्यांश में कवि 'निराला' ने पूँजीपतियों में क्रांति का भय तथा निर्धन–गरीबों में हर्ष की लहर को वर्णित किया है।

व्याख्या– कवि 'निरालाजी' पूँजीपतियों के बड़े–बड़े भवनों को देखकर कहते हैं कि ये ऊँचे भवन अपनी ऊंचाई द्वारा गरीब व निर्धन लोगों को भयभीत करते हैं। इन भवनों की ऊँचाइयाँ ही गरीबों में डर भर देती है। इन्होंने गरीबों के शोषण से ही ऊँचे भवन निर्मित किये हैं। वर्षा से जो बाढ़ आता है उससे सबसे पहले कीचड़ ही बहता है। छोटे से कमल के फूल तो जल का स्पर्श कर और भी आनन्दित होते हैं। भावार्थ यह है– कि कीचड़ पूँजीपतियों का पर्याय तथा कमल उन गरीबों के समान है। गरीबों के बच्चे कठिन परिस्थितियों में भी जीने वाले सुकुमार होते हैं। जिन पर प्रकृति का कोई असर नहीं होता बल्कि प्रकृति के विभिन्न रूप को देखकर भी वे सदैव प्रसन्न रहते हैं। गरीब रोग–व्याधि, दुःख–पीड़ा सभी में समान स्थिति में रहता है जबकि पूँजीपति ही सदैव अपने शोषण से उत्पन्न क्रांति के कारण भयभीत रहते हैं।

विशेष–(i) कवि ने किसानों एवं गरीबों की स्थिति का वर्णन किया है।

(ii) बादलों से क्रांति का आह्वान किया गया है।

(iii) भाषा तत्सम प्रधान और ओजस्वी है।

(iv) जल–प्लावन में कमल खिलता है। अर्थात कष्टों में भी गरीब व्यक्ति प्रसन्न रहता है जैसी विशेषोक्ति प्रस्तुत है।

(v) रूपक, अनुप्रास जैसे अलंकारों का अनायास प्रयोग हुआ है।

शेखावाटी मिशन–100

प्र:6 सप्रसंग व्याख्या–

"तब प्रताप उर राखि प्रभु जैहऊँ नाथ तुरंत।
अस कहि आयसु पाइ पद बँदि चलेउ हनुमंत।।
भरत बाहु बल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार,।
मन महुँ जात सराहत पुनि–पुनि पवन कुमार।।"

उत्तर– 'तव' प्रताप .... पवन कुमार।'

सन्दर्भ– उपर्युक्त पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक आधार हिन्दी आरोह–2 के अध्याय– 7 'गोस्वामी तुलसीदास' द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के लंकाकाण्ड 'लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप' शीर्षक से लिया गया है।

प्रसंग– गोस्वामी तुलसीदास जी रामचरितमानस में 'लक्ष्मण– मूर्च्छा और राम का विलाप' का वर्णन करते हुये प्रस्तुत प्रसंग में लिखते है, जब हनुमान हिमालय पर्वत पर से संजीवनी बूँटी लाते है उसी समय मार्ग में भरत से मिलाप होता है, उसी का वर्णन किया है।

व्याख्या– भक्त कवि गोस्वामी तुलसीदास जी बताते है है कि लक्ष्मण को युद्ध के दौरान शक्ति लगने पर हनुमान संजीवनी बूटी लाने जाते हैं, वापस आते समय उनकी मुलाकात भरत से होती है। वे भरत से कहते हैं कि हे प्रभो! मैं आपका प्रताप, यश हृदय में रखकर तुरंत ही भगवान राम के पास पहुंच जाऊँगा। इस प्रकार कहते हुए हनुमान भरत की आज्ञा प्राप्त कर उनके चरणों की वंदना करके चल दिए। भरत के बाहुबल, शील व शान्त व्यवहार, गुण तथा प्रभु श्रीराम के प्रति अपार स्नेह को देखते हुए मन ही मन बार–बार प्रशंसा करते हुए हनुमान लंका की तरफ चले जा रहे थे।

विशेष–(i) तुलसीदास जी ने हनुमान की भक्ति भावना तथा भरत के गुणों का वर्णन किया है।

(ii) अवधी भाषा का प्रयोग हुआ है।

(iii) दोहा छंद और अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है।

शेखावाटी मिशन–100

आरोह (गद्य खण्ड)

बहुचयनात्मक प्रश्न–

प्र:1 भक्तिन, पाठ साहित्यिक विद्या कौनसी है?

(अ) कहानी (ब) निबंध (स) संस्मरणात्मक रेखाचित्र (द) नाटक **(स)**

प्र:2 भक्तिन की स्पर्धा सेवक धर्म में किससे थी ?

(अ) श्रवण कुमार (ब) हनुमान (स) लक्ष्मण (द) अंगद **(ब)**

प्र:3 भक्तिन का पैतृक गाँव कौन–सा था?

(अ) हँडिया (ब) झूँसी (स) बलिया (द) गढ़ाकोला **(ब)**

प्र:4 भक्तिन पाठ में सोना व बसंत कौन है

(अ) छात्रावास की छात्राएँ (ब) ग्वालिनें

(स) हिरनी व कुत्ता (द) बिल्ली व कुता **(स)**

प्रः5 महादेवी वर्मा को किस कृति पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला?

(अ) दीपशिखा (ब) आपदा (स) यामा (द) पथ के साथी **(स)**

प्रः6 भगत जी प्रतिदिन कमाते थे ?

(अ) चार आने (ब) पांच आने (स) छह आने (द) सात आने **(स)**

प्रः7 मन बंद हो जाने से तात्पर्य है?

(अ) मन का प्रसन्न होना (ब) मन का दुखी होना

(स) मन का शून्य होना (द) उपरोक्त सभी **(स)**

प्रः8 बाजार दर्शन में किस शास्त्र को सरासर औंधा, मायावी व अनीति शास्त्र बताया है?

(अ) राजनीति शास्त्र (ब) समाज शास्त्र (स) ज्ञान शास्त्र (द) अर्थ शास्त्र **(द)**

प्रः9 बाजार का जादू किस राह से काम करता है?

(अ) कान की राह (ब) मन की राह (स) आँख की राह (द) जैब की राह **(स)**

प्रः10 जैनेन्द्र कुमार कौनसी चितंन दृष्टि से संबंधित थे?

(अ) गांधीवादी चितंन दृष्टि (ब) यथार्थवादी चिंतन दृष्टि

(स) समीक्षा वादी दृष्टि (द) परम्परा वादी चिंतन दृष्टि **(अ)**

प्रः11 इन्द्रसेना किसकी जय बोलती थी ?

(अ) इन्द्र भगवान (ब) गंगा मैया की (स) किसान की (स) नर्मदा की **(ब)**

प्रः12 ”काले मेघा पानी दे” पाठ में लेखक किस सभा का उपमंत्री था ?

(अ) कुमार सुधार सभा (ब) आर्य सभा (स) छात्र सभा (द) समाज सुधार सभा **(अ)**

प्रः13 इन्द्रसेना के सदस्यों की आयु लगभग होती थी?

(अ) 1 से 10 वर्ष (ब) 5 से 15 वर्ष (स) 10 से 18 वर्ष (द) 18 से 25 वर्ष **(स)**

प्रः14 काले मेघा पानी दे पाठ में जीजी के प्राण किसमे बसते थे ?

(अ) बहु में (ब) ईश्वर में (स) लेखक में (द) धन में **(स)**

प्रः15 गुनाहों का देवता किसका उपन्यास है?

(अ) प्रेमचन्द (ब) जयशंकर प्रसाद (स) धर्मवीर भारती (द) फणीश्वरनाथ रेणु **(स)**

प्रः16 काले मेघा पानी दे संस्मरण में चित्रण हुआ है

(अ) अंधविश्वास का (ब) विश्वास और विज्ञान के द्वंद्व का

(स) विज्ञान का (द) उपर्युक्त में से कोई नही **(ब)**

प्रः17 पहलवान की ढोलक पाठ में गाँव की निस्तब्धता को कौन भंग कर देता था?

(अ) सियारों का क्रंदन व पेचक की डरावनी आवाज (ब) उल्लूओं का रुदन

(स) चोरों की आहट (द) कुतों की आवाज **(अ)**

शेखावाटी मिशन–100

प्र:18 पहलवान की ढोलक पाठ मे शेर के बच्चे की उपाधी प्राप्त थी।

(अ) पहलवान को (ब) चांद सिंह को (स) लुट्टन सिंह (द) सभी को **(ब)**

प्र:19 पहलवान की ढोलक गाँव में कौन सी महामारी फैली हुई थी ?

(अ) प्लेग (ब) मलेरिया (स) मलेरिया व हेजा (द) उपर्युक्त सभी **(स)**

प्र:20 फणीश्वर नाथ रेणु थे?

(अ) आंचलिक उपन्यासकार (ब) तिलिस्मी उपन्यासकार

(स) मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार (द) रोमानी उपन्यासकार **(अ)**

प्र:21 संस्कृत साहित्य में शिरीष के फूल को माना गया है।

(अ) कोमल (ब) कठोर (स) सुगन्धित (द) दीर्घजीवी **(अ)**

प्र:22 वात्स्यायन की रचना है?

(अ) मगंलसूत्र (ब) कामसूत्र (स) कामायनी (द) सस्कृत सूत्र **(ब)**

प्र:23 'फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना' उक्ति किसकी है।

(अ) तुलसीदास की (ब) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(स) प्रसाद की (द) गाँधी जी की **(अ)**

प्र:24 मेघदूत किसकी रचना है?

(अ) हजारी प्रसाद द्विवेदी (ब) कालिदास

(स) तुलसीदास (द) सूरदास **(ब)**

प्र:25 शिरीष के फूल पाठ विधा है ?

(अ) संस्मरण (ब) कहानी (स) ललित निबंध (द) रिपोर्ताज **(स)**

प्र:26 श्रम विभाजन का दूसरा रूप है ?

(अ) जाति प्रथा (ब) पर्दा प्रथा (स) रूढ़िवादिता (द) सभी **(अ)**

प्र:27 श्रम विभाजन और जाति प्रथा पाठ के अनुसार भाईचारे का दूसरा नाम है?

(अ) परतंत्र (ब) लोकतंत्र (स) स्वंतत्र (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं **(ब)**

प्र:28 श्रम विभाजन और जाति प्रथा के अनुसार मनुष्य की क्षमता कितनी बातों पर निर्भर करती है?

(अ) एक (ब) दो (स) तीन (द) चार **(स)**

प्र:29 बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर उच्चतम शिक्षा के लिए कहाँ गए।

(अ) पेरिस (फ्रांस) (ब) न्यूयार्क (अमेरिका)

(स) बर्लिन (जर्मनी) (द) लंदन (ब्रिटेन) **(ब)**

प्र:30 श्रम विभाजन और जाति प्रथा पाठ की साहित्यिक विधा है

शेखावाटी मिशन–100

(अ) निबंध (ब) भाषण का अंश (स) कहानी (द) नाटक **(ब)**

आरोह (गद्य खण्ड)

लघुत्तरात्मक प्रश्न (40 शब्द)

प्र:1 भक्तिन स्वाभिमानी स्त्री थी सिद्ध कीजिए?

उत्तर– भक्तिन ने कर्मठता से सामाजिक मान्यताओं का सामना किया। पति की मृत्यु के बाद सम्पति के लिए भी भक्तिन ने संघर्ष किया जिसके कारण उसके परिवार वाले ही उसके दुश्मन बन गये। एक बार कर समय पर नहीं पहुंचने पर जमींदार ने भक्तिन को दिन भर धूप में खड़ा रखा जिसके कारण उसने पैसे कमाने के लिए शहर जाने का सोचा। इससे हम कह सकते है कि भक्तिन एक संघर्षशील और स्वाभिमानी स्त्री थी।

प्र:2 भक्तिन के आने से महादेवी के जीवन में क्या परिवर्तन आया ?

उत्तर– भक्तिन के आने से महादेवी के जीवन में यह परिवर्तन आने लगा कि वह साधारण देहाती जीवन जीने लगी वह भक्तिन के कारण होने वाली असुविधा को छुपाने लगी। वह भक्तिन द्वारा पकाये गये देहाती भोजन खाने लगी जिसमें मकई का दलिया, बाजरे के तिल लगाकर बनाए गए पुए, ज्वार के भुट्टे की खिचड़ी, सफेद महुए की लापसी और हलवा आदि उसने अनेक दंतकथाएँ सुनकर उन्हें कण्ठस्थ रखने लगी । इस तरह महादेवी के जीवन में अनेक परिवर्तन आये।

प्र:3 पैसे की व्यंग्य शक्ति से आप क्या समझते हो ?

उत्तर– पैसे की व्यंग्य शक्ति मन से खाली व्यक्ति पर प्रभाव डालती है जैसे कोई पैदल चल रहा है और उसके पास से धूल उड़ाती मोटर पैदल चलते व्यक्ति को आपनी शक्ति बताती है व्यक्ति के मन में हीनता के भाव उत्पन्न होते हैं कि मैं कितना गरीब हूँ। मैं किसी अमीर घर में क्यों नहीं जन्म और व्यक्ति दुखी हो जाता है।

प्र:4 बाजार दर्शन पाठ से क्या शिक्षा मिलती हैं?

उत्तर– बाजार दर्शन पाठ के आधार पर हमें बाजार की चमक से बचने की शिक्षा मिलती है। हमें अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ ही खरीदनी चाहिए और यदि हम बाजार के छलावे, दिखाँवे या चमक की दुनिया में फसते है तो हमारे समय और पैसों दोनों की बरबादी होती है इसलिए हमे अपने मन पर नियंत्रण रखना चाहिए जिससे हम फालतु चीजे खरीदने और आर्थिक नुकसान से बच सकते हैं।

प्र:5 मेढ़क मंडली का परिचय दीजिए ?

उत्तर– गाँव के लोग मेढ़क – मंडली को दो नामों से पुकारते थे इन्द्र सेना और मेढ़क मंडली। उनके नाम एक–दूसरे से बिलकुल विपरीत थे। गाँव के लोग लड़कों के नग्नस्वरूप शरीर, उनकी उछलकूद उनके शोर–शराबे और उनके कारण गली में होने वाले कीचड़ – कादे को देखकर अथवा चिढ़ाने के कारण गाँव के लोग उन लड़कों के समूह को मेढ़क – मंडली कहते थे इस प्रकार लड़कों के समूह का नाम मेढ़क – मंडली या इन्द्र सेना पड़ा।

प्र:6 लेखक का मेढ़क मंडली के प्रति क्या दृष्टिकोण था ?

उत्तर– लेखक का दृष्टिकोण मेढक–मंडली के प्रति अच्छा नहीं था। लेखक आर्यसमाजी संस्कार के थे। अन्धविश्वास से ज्यादा

शेखावाटी मिशन–100

विज्ञान को तर्कशील मानते थे मेढ़क–मंडली पर पानी डालने को लेकर लेखक का तर्क था कि गर्मी के इस मौसम में जहाँ पानी की बहुत कमी है, खेत सुखे हुए है लोगो का जीवन पानी के बिना दु:खों का घर बन गया है ऐसे समय में व्यर्थ में पानी फेंकना पानी की बर्बादी है। लोगो को पीने के लिए, जीवन यापन के लिए पानी नहीं मिलता। और मेढ़क –मंडली पर झूठे विश्वास के कारण पानी फेकना गलत हैं।

प्र:7 ढोलक की आवाज का गाँववालो पर क्या प्रभाव पडता था ?

उत्तर– महामारी फैलने तथा कई लोगों की मौत होने से गाँव का वातावरण निराशा, वेदना से भरा हुआ था महामारी से पीड़ित लोगो को ढोलक की ध्वनि से संघर्ष करने की शक्ति एवं उतेजना मिलती थी। संजीवनी की तरह ढोलक की आवाज गाँव वालों में प्राणशक्ति भरती थी।

प्र:8 शिरीष को अवधूत क्यों कहा है ?

उत्तर– अवधूत का अर्थ – सत्य है जो मुख तथा दु:ख आदि परिस्थितियों में भी मस्त रहता है उसी प्रकार शिरीष का फूल भी तपन, लू, शीत आदि सब सहन कर फूलों से लदा रहता है इसलिए इसे अवधूत कहते है।

प्र:9 पहलवान को दरबार से क्यों निकाल दिया गया ?

उत्तर– वृद्ध राजा के स्वर्ग सिधारने के बाद नये राजकुमार ने विलायत से आते ही शासन अपने हाथों में ले लिया। उसने अनेक परिवर्तन किए। पहलवानों की जगह को घोड़ों की रेस ने ले लिया अतः पहलवान को दरबार से निकाल दिया गया ।

प्र:10 मनुष्यों की क्षमता किन किन बातो पर निर्भर करती हैं ?

उत्तर– मनुष्यों की क्षमता तीन बातों पर निर्भर करती है –

(i) शारीरिक वंश परम्परा (ii) सामाजिक उतराधिकार (iii) मनुष्य के अपने प्रयत्न

प्र:11 भारत की जाति –प्रथा की विशेषताएँ लिखो ?

उत्तर– भारत की जाति –प्रथा की विशेषताएँ निम्न है –

(i) भारत में जाति प्रथा के आधार पर श्रमिक विभाजन किया गया है।

(ii) भारत में इस विभाजन में एक–दूसरे को ऊँच–नीच करार भी दिया जाता है।

(iii) यह श्रमिको का अस्वभाविक विभाजन करती है।

प्र:12 साहित्य में शकुंतला की प्रसिद्धि किस कारण हुई ?

उत्तर– साहित्य में शकुंतला को अमर बनाने वाले महाकवि कालिदास थे। ईश्वर ने जितनी उदारता मे शंकुतला को सौन्दर्य प्रदान किया उतनी ही उदारता से दिल खोलकर कालिदास ने शकुंतला के सौन्दर्य की वर्णन किया। शकुंतला कालिदास के हृदय से निकली थी। कालिदास की रचना 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' के कारण शकुंतला साहित्य में अमर हो गई।

खण्ड 'स' के लिए आरोह गद्य खण्ड से प्रश्न (3 अंक) (60 से 80 शब्द)

प्र:1 पहलवान कर्मठ व्यक्तित्व का धनी था ? क्या आप इस कथन से सहमत है ?

उत्तर– हाँ हम इस बात से पूर्ण सहमत हैं। पहलवान लुट्टन सिंह की निम्न विशेषताओं से यह बात सिद्ध भी हो जाती है–

(i) पहलवान को दरबार से निकालने के बाद भी वह गाँव में जाकर अपने बेटों और शिष्यों को कुश्ती के दाँव–पेच सीखाने

शेखावाटी मिशन–100

लगा।

(ii) बेटों की मृत्यु के पश्चात भी बगैर हिम्मत हारे निरन्तर ढोलक बजाता रहा।

(iii) पहलवान स्वयं महामारी से पीड़ित होने के बावजूद उसी उत्साह से ढोलक बजाता रहा।

(iv) पहलवान् द्वारा बजायी गई ढोलक की आवाज गाँववालों के लिए संजीवनी की तरह कार्य करती थी। पहलवान इस कार्य को अपना कर्तव्य मान कर निरन्तर ढोलक बजाता था।

प्र:2 त्याग का महत्व 'काले मेघा पानी दें' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– काले मेधा पानी दे पाठ में जीजी लेखक धर्मवीर भारती को त्याग का महत्त्व समझाते हुए कहती है कि जो चीज मनुष्य पाना चाहता है, पहले उस वस्तु का त्याग करना पड़ता है। जीजी कहती है कि अगर लाखों करोड़ों रुपये हो और उसमें से कुछ दो चार रुपये दान कर दिया तो यह त्याग नहीं कहा जा सकता है। जो वस्तु हमारे पास भी कम है, जिसकी हमें भी आवश्यकता है उसका दान ही वास्तविक त्याग है। ऐसे त्याग का ही श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त होता है। जैसे – पाँच छह सेर गेहूँ धरती को देने से किसान को तीस चालीस मण गेहूं प्राप्त हो जाता है।

प्र:3 शिरीष समाज के लिए प्रेरक है, समझाइए।

उत्तर– शिरीष सर्दी, गर्मी और आंधी जैसी विषम परिस्थितियों में भी फूलों से लदा रहता है। वह ग्रीष्म ऋतु में अत्यधिक तापमान के समय धरती के गर्भ को चिरकर जल प्राप्त करता है और अपनी जिजीविषा के कारण फूलों से लदा रहता है। शीत ऋतु में जब पलाश, कनेर एवं अमलताश के फूल झड़ जाते है तब शिरीष फुलों से लदा हुआ रहता है इस प्रकार शिरीष विपरित परिस्थितियों में भी एक समान रहता है। अतः शिरीष समाज को दुःख – सुख सभी परिस्थितियों में समान रहते हुए संघर्ष करने की प्रेरणा देता है।

प्र:4 'चट्–धा, गिड़–धा, चट–धा, चटाक चट्–धा ढोलक की आवाज का महत्व समझाइए।

उत्तर– चट्–धा, गिड़–धा– आजा भिड़ जा। चटाक् चट् धा – उठाकर पटक दे।

ढोलक संगीत कला का एक विशिष्ट वाघ यन्त्र है। इसकी थाप हमारे मन में उत्साह का संचार करती है। कला का जीवन से गहरा संबंध है । कला के विभिन्न रूप है चित्रकला एवं वास्तुकला जहाँ देखने वालो को आनन्दित करती है। ढोलक की आवाज जहाँ आनंद उमंग का संचार करती है वहीं गाँव में महामारी से पीड़ित लोगो को संघर्ष करने की शक्ति एवं उतेजना मिलती थी। इस प्रकार ढोलक की आवाज का पूरे गाँव पर अतीव प्रेरणादायी असर होता है।

प्र:5 बाजार वरदायी होने के साथ–साथ शैतान भी है। कथन पर आपके विचार स्पष्ट करो।

उत्तर– उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं की पूर्ति करना बाजार की सार्थकता है। इस दृष्टि से बाजार समाज के लिए वरदायी है। वर्तमान में ऑन लाइन शापिंग संस्कृति और अधिक आसानी और सुगमता उपभोक्ताओं को प्रदान करने लगी है। दूर–दराज के क्षेत्रों में मिलने वाली वस्तुएँ भी उपभोक्ता को घर बैठे आसानी से उपलब्ध हो जाती है। मगर समय के साथ –साथ बाजार की शैतानी शक्ति भी बढ़ी है। जैसे वर्तमान की मॉल संस्कृति ने अपने आप को इतना सजा धजा कर आकर्षक बनाया है कि प्रभावित हुए बीना कोई रह नहीं सकता है। निम्न वर्ग व मध्यम वर्ग के लोग यदि इन मॉल में घूमने के लिए ही प्रवेश कर ले तो यह उसको पैसे की व्यंग्य शक्ति से पिड़ित कर देते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बाजार वरदायी होने के साथ–साथ शैतान भी है।

शेखावाटी मिशन–100

प्र:6 भीमराव अंबेडकर द्वारा रचित 'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' की तरह आप भी अपनी आदर्श समाज की कल्पना स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– 'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' मेरी कल्पना के अनुसार आदर्श समाज में समानता स्वतंत्रता, समता तथा भाईचारा होना अनिवार्य है यह सभी तत्त्व आदर्श समाज की नींव का कार्य करते है। मेरे अनुसार एक आदर्श समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए कि कोई भी परिवर्तन समाज के किसी भी स्तर का हो उसका सकारात्मक प्रभाव एक छोर से अन्तिम छोर तक पहुंचे। बहुविधि हितों में सबका भाग होना चाहिए। अधिकारों व कर्तव्यों का समान वितरण समाज में व्यावहारिक स्तर पर हो। सभी को विकास के समान अवसर मिले ऐसे आदर्श समाज की कल्पना हम करते है।

गद्य भाग

<u>निबंधात्मक प्रश्न–</u>

प्र:1 'बाजार दर्शन' पाठ के आधार पर भगत जी के चरित्र की दो प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर– भगत जी के चरित्र की दो प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

<u>संतोषी तथा निर्लोभी –</u> भगत जी को पैसे का लोभ नहीं है। छह आने की कमाई होते ही वह चूरन बेचना बन्द कर देते हैं । शेष चूरन वह बच्चों को मुफ्त में बाँट देते हैं । वह पच्चीसवाँ पैसा भी स्वीकार नहीं करते । वह व्यापार को शोषण का जरिया नहीं मानते तथा अपनी जरूरत भर पैसा कमाकर संतुष्ट रहते हैं ।

<u>तृष्णा और संग्रह से मुक्त</u> – वह बाजार खुले मन और खुली आँखों के साथ जाते हैं । बाजार की चीजें – काला नमक और जीरा–पंसारी की दुकान से खरीदते हैं, तब उनके लिए बाजार महत्त्वहीन होता जाता है। बाजार से अनावश्यक वस्तुएँ नही खरीदते।

प्र:2 'काले मेघा पानी देश में लोक प्रचलित विश्वास और विज्ञान के द्वन्द्व का सुन्दर चित्रण है' इस संबंध में अपना मत व्यक्त कीजिए।

उत्तर–'काले मेघा पानी दे' – संस्मरण में लेखक ने पुरानी परम्परा का वर्णन किया है। जब वर्षा के अभाव में लोग त्राहि–त्राहि कर उठते थे, पेड़–पौधे सूखने लगते थे तब इंदर सेना के लड़के बादलों से पानी माँगने गलियों में निकलते थे। लोग उन्हें पानी से तरबतर कर देते थे। लोगों का विश्वास था कि इससे वर्षा होगी। वर्षा होने के बारे में विज्ञान का अपना सिद्धान्त और तर्क है किन्तु जन–विश्वास उससे ऊपर है। विज्ञान के सफल न होने पर लोग अपने विश्वास के अनुरूप आचरण करने से नहीं चूकते। जन–विश्वास और विज्ञान का यही द्वन्द्व इस संस्मरण का वर्ण्य विषय है। लेखक का तर्कशील मन इसे पानी को बर्बादी मानता है, जबकि जीजी का मानना है कि दान और त्याग द्वारा देवता को प्रसन्न किया जाता है। तर्क बुद्धि से लेखक का मत ठीक लगता है, जबकि आस्था की दृष्टि से जीजी का मत ठीक लगता है।

प्र:3 'पहलवान की ढोलक' व्यवस्था बदलने के साथ लोककला और कलाकार के अप्रासंगिक हो जाने की कहानी है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – राजा साहब से प्राप्त संरक्षण और प्रोत्साहन ने लुट्टन को श्रेष्ठ पहलवान बनाया था। उनकी मृत्यु के बाद विदेश से

शेखावाटी मिशन–100

पढ़ाई करके लौटे राजकुमार को शासन सत्ता प्राप्त हुई। उनके आते ही लुट्टन को हटा दिया गया और वह राज पहलवान नहीं रहा। वह अपने लड़कों को साथ अपने गाँव लौट आया। उसकी कुश्ती की कला शासन–व्यवस्था बदलते ही अप्रासंगिक हो गई। शासन व्यवस्था बदलने पर अनेक पुरानी कलायें विलुप्त हो जाती हैं।

प्रः4 आंबेडकर के अनुसार जाति–प्रथा, श्रम–विभाजन का ही एक रूप क्यों नहीं मानी जा सकती ? आंबेडकर के तर्कों की विवेचना कीजिए ।

उत्तर–कार्यों का कार्य–कुशलता की दृष्टि से विभिन्न लोगों में बँटवारा श्रम–विभाजन कहलाता है। भारत में हिन्दू धर्म में जाति आधारित व्यवस्था में भी श्रम को विभिन्न जातियों में बाँटा गया है । इस आधार पर लोग जाति–प्रथा में कोई बुराई नहीं समझते । आंबेडकर का कहना है कि जाति–प्रथा, श्रम–विभाजन का एक रूप नहीं है । अपने मत के समर्थन में वह निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत करते हैं–

(i) जाति–प्रथा में श्रम के साथ–साथ श्रमिकों का भी विभाजन हो जाता है।

(ii) यह विभाजन अस्वाभाविक है। इससे अनेक वर्ग बनते हैं और उनको एक–दूसरे से ऊँचा–नीचा समझा जाता है ।

(iii) इस विभाजन में मनुष्य के प्रशिक्षण, निजी क्षमता तथा रुचि का ख्याल नहीं रखा जाता।

(iv) इसमें माता–पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार जन्म से ही निर्धारित पेशा मनुष्य को जीवनभर करना होता है तथा उसे छोड़कर दूसरा पेशा करने की छूट उसे नहीं होती।

(v) अपने काम में अरुचि, प्रशिक्षण का अभाव, क्षमता की कमी आदि के कारण कार्य का स्तर अच्छा नहीं होता और इससे समाज को हानि होती है।

सप्रसंग व्याख्या

निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

फिर जीजी बोली "देख तू तो अभी से पढ़–लिख गया है मैने तो गाँव के मदरसे का भी मुँह नहीं देखा। एक बात देखी है कि अगर तीस–चालीस मन गेहूँ उगना है तो किसान पाँच – छह सेर अच्छा गेहुँ अपने पास से लेकर जमीन में क्यारियाँ बना कर फेक देता हैं। उसे बुबाई कहते हैं। यह जो सुखे हम अपने घर का पानी इन पर फेकते है वह भी बुवाई है। यह पानी गली में बोएंगे तो सारे शहर, कस्बा गांव पर पानी वाले बादलों की फसल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते है, फिर काले मेघा से पानी मांगते है सब ऋषि–मुनि कह गए है कि पहले खुद दो तब देवता तुम्हें चौगुना–अठगुना करके लोटाएंगे भइया, यह तो हर आदमी का आचरण है, जिससे सबका आचरण बनता है। यथा राजा तथा प्रजा सिर्फ यही सच नहीं है। सच यह भी है कि यथा प्रजा तथा राजा।"

सन्दर्भः– प्रस्तुत गद्यांश धर्मवीर भारती द्वारा लिखित संस्मरण 'काले मेघा पानी दे' से लिया गया है

प्रसंग–प्रस्तुत गंधाश में दान के महत्व को जीजी के शब्दो द्वारा समझाया गया है।

व्याख्याः– प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने दान का महत्व अपनी जीजी के शब्दो से समझाया है। जीजी ने लेखक से कहा कि इस वक्त तुम पढ़ रहे हो लेकिन मैंने तो मदरसे का मुँह भी नहीं देखा है। वह फिर कहती है कि तीस–चालीस मन गेहूँ के लिए भी किसान पहले चार–पाँच सेर मिट्टी में बुवाई करता है उसी तरह गाँव के लोग भी बहुत ज्यादा वर्षा के लिए

शेखावाटी मिशन–100

पहले अपने पास से जो कुछ पानी है वो गलियों में पानी की बुवाई करते है। जिससे पानी के देवता हमें अधिक देता है। यह तो हर व्यक्ति का आचरण है जो सबको आचरण देता है। जीजी कहती है कि राजा जैसा होता है वैसी प्रजा होती है यह सिर्फ एक कहावत है। लेकिन जैसी प्रजा होती है वैसा ही राजा भी होता है।

विशेष–(i) लेखक ने जीजी के माध्यम से आचरण पर प्रकाश डाला है।

(ii) भाषा सरल – सुबोध एवं अर्थगाम्भीर्य युक्त है।

सप्रसंग व्याख्या

भक्तिन और मेरे बीच मे सेवक – स्वामी का संबंध है, यह कहना कठिन है, क्योंकि ऐसा कोई स्वामी नहीं हो सकता, जो इच्छा होने अपनी सेवा से हटा न सके और ऐसा कोई सेवक भी नहीं सुना , जो स्वामी के चले जाने का आदेश पाकर अवज्ञा से हँस दे। भक्तिन को नौकर कहना उतना ही असंगत है जितना अपने घर में बारी–बारी से आने जाने वाले अंधेरे–उजाले और आंगन मे फूलने वाले गुलाब और आम को सेवक मानना।

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश, लेखिका महादेवी वर्मा द्वारा लिखित 'भक्तिन' संस्मरण से लिया गया है।

प्रसंग– इसमें लेखिका ने स्वयं का और भक्तिन का सम्बन्ध स्पष्ट किया है।

व्याख्या–लेखिका बताती है कि कहने के लिए भक्तिन और मेरे मध्य सेवक–स्वामी का सम्बन्ध है, यह कहना कठिन है ऐसा कोई मालिक नहीं होता जो नौकर के अनुसार चले, जो मालिक के कहने पर भी उसे छोड़कर न जाये और हँसकर बात टाल दे। भक्तिन को नौकर कहना उचित नहीं है जिस प्रकार हमारे आँगन में आने वाले अंधेरे–उजाले सूर्य की किरणें और आंगन में खिलने वाले वनस्पति को हम अपना सेवक नहीं मान सकते है उसी भक्तिन को भी सेविका के रूप में मानना अनुचित है।

विशेष–(i) इसकी भाषा तत्सम प्रधान साहित्यिक खड़ी हिन्दी बोली है।

(ii) इसमे मालिक और सेवक के सम्बन्धो का वर्णन हुआ है।

(iii) इसमें व्याख्यात्मक शैली है।

(iv) इसमें महादवी और भक्तिन के आत्मीय सम्बन्धो को स्पष्ट किया गया है।

सप्रसंग व्याख्या

"बाजार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। । वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है जेब भरी हो और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमन्त्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है। मालूम होता है यह भी लूँ वह भी लूँ सभी सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है।"

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश जैनेन्द्र कुमार द्वारा लिखित निबन्ध 'बाजार दर्शन' से लिया गया है।

प्रसंग– लेखक ने इसमें मन के खाली होने पर बाजार के जादू का प्रभाव स्पष्ट किया है।

शेखावाटी मिशन–100

व्याख्या–बाजार में आकर्षित करने की जादूई शक्ति है और यह शक्ति आँखों के माध्यम से अपना प्रभाव डालती है। जैसे चुंबक का असर लोहे पर ही होता है वैसे ही बाजार का जादू केवल खाली मन वाले व्यक्ति पर ही चलता है। खाली मन के साथ–साथ जैब भी खाली हो तो भी यह जादू अपना प्रभाव डाल ही देता है अर्थात व्यक्ति को मानसिक रूप से व्याकुल कर देता है। मन खाली के साथ जैब भरी हुई अर्थात पास में रूपये हो तो यह मन किसी भी तरह नियन्त्रण में नहीं रहता है। यही बाजार का जादू व आकर्षण है।

विशेष–(i) इसमें सरल साहित्यिक भाषा का प्रयोग हुआ है।

(ii) व्यंजना शैली प्रयुक्त हुई है।

(iii) मन व बाजार के अन्तरसंबंध को स्पष्ट किया है।

(iv) मन व जैब के आपसी प्रभाव को भी व्यक्त किया गया है।

(v) मन को भरा रखने का अप्रत्यक्ष संदेश निहित है।

सप्रसंग व्याख्या

इन बातों को आज पचास से ज्यादा बरस होन को आए पर ज्यों की त्यों मन पर दर्ज हैं। कभी–कभी कैसे–कैसे सन्दर्भों में ये बातें मन को कचोट जाती हैं, हम आज देश के लिए करते क्या है? मांगे हर क्षेत्र में बड़ी – बड़ी है पर त्याग का कहीं नाम – निशान नहीं है। अपना स्वार्थ आज एकमात्र लक्ष्य रह गया है। हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बाते करते हैं पर क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर अपने दायरे में हम उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे है? काले मेघा दल के दल उमड़ते हैं, पानी झमाझम बरसता है, पर गगरी फूटी की फूटी रह जाती है, बैल पियासे के पियास रह जाते हैं।। आखिर कब बदलेगी यह स्थिति ?

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश धर्मवीर भारती द्वारा लिखित संस्मरण 'काले मेघा पानी दे' से लिया गया है।

प्रसंग– लेखक अपने बचपन के मेढक मण्डली से संबंधित प्रसंग को याद करके उस समय से पचास वर्ष बाद त्याग की स्थिति में आई गिरावट व वर्तमान की स्थितियों की चर्चा कर रहा है।

व्याख्या– लेखक को पचास वर्ष बाद भी जीजी की बातें ज्यों की त्यों याद आ रही है। इन बातो से लेखक का मन विचलित हो रहा है। लेखक स्वयं के माध्यम से समाज से प्रश्न कर रहा है कि आज हम देश के लिए क्या कर रहे है ? कौनसा त्याग कर रहे है? चारो तरफ अधिकारों की मांग है, स्वार्थ ही सभी का लक्ष्य बन गया है। हम सब दूसरों की आलोचनाओं और भ्रष्टाचार का बखान करते रहते है लेकिन स्वयं के आचरण में नहीं झाँकते है। यह नही जाँचते कि हम भी तो कही न कही इस भ्रष्टाचार का अंग है, इसको कम करने का हमने कौनसा त्याग व प्रयास किया है ? आज मेघ खूब बरसते है मगर गगरी खाली और बैल प्यासे ही रह जाते है, अर्थात योजनाएं बहुत बनती है, मगर उसका लाभ जरूरत मंदों तक नहीं पहुँच पाता है।

विशेष–(i) भाषा सरल–सुबोध व आक्षेपपूर्ण है।

(ii) 'चटखारे लेना' कहावत प्रयुक्त हुई है।

(iii) लेखक ने वर्तमान में देश में व्याप्त भ्रष्टाचार पर चिन्ता व्यक्त की है।

(iv) लेखक वर्तमान की स्वार्थी नीतियों से दुखी है।

शेखावाटी मिशन–100

लेखक परिचय

जैनेन्द्र कुमार

'जैनेन्द्र कुमार' का जीवन परिचय दीजिए– व साहित्यिक परिचय दीजिए–

जीवन परिचय–जैनेन्द्र कुमार का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जनपद के कौड़ियागंज कस्बे में सन् 1905 मे हुआ था। बचपन में आपकों पिता के प्रेम से वंचित होना पड़ा। आपकी माता ने आपका पालन–पोषण किया आपका मूल नाम आनन्दीलाल था। आपके हस्तिनापुर के जैन गुरूकुल ऋषि ब्रह्मचार्याश्रम में शिक्षा ग्रहण की। सन् 1919 मे मैट्रिक करने के बाद आपने काशी विश्व विद्यालय में प्रवेश लिया, किन्तु गाँधीजी के आह्वान पर अध्ययन छोड़कर स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े। बाद में अपने स्वाध्याय द्वारा ज्ञानर्जन किया। स्वतन्त्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण आपको जेल यात्रा भी करनी पड़ी। आप जेल यात्रा के दौरान साहित्य साधना करते रहे। हिन्दुस्तानी अकादमी से आप पुरस्कृत भी हुए। सन् 1988 में आपका देवहसान हो गया।

साहित्यिक परिचय–जैनेन्द्र कुमार ने कथा साहित्य के साथ हिन्दी गध की अन्य विधाओं पर भी लेखनी चलाई हैं। आप हिन्दी में मनोविश्लेषणात्मक साहित्य की रचना के पुरोधा हैं। प्रेमचन्द ने आपको हिन्दी का गोर्की कहकर महिमा मण्डित किया था। जैनेन्द्र कुमार ने कहानियों के साथ ही उपन्यासो की भी रचना की हैं। आपने विभिन्न विषयों पर महत्वपूर्ण निबंध लिखे हैं। अपने निबन्धों में वह विचारक तथा विश्लेषक के रूप में प्रकृट हुए हैं! जैनेन्द्र की भाषा तत्सम शब्द प्रधान हैं। उसमें प्रचलित शब्दों को उदारता से स्वीकार किया हैं। आवश्यकता के अनुसार मुहावरों का प्रयोग करने से उसकी भाषा पुष्ट हुई हैं। जैनेन्द्र ने विचारात्मक, मनोविश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक आदि शैलियों के साथ व्यंग्य शैली को भी अपनाया हैं।

कृतियों – जैनेन्द्र जी की रचनाएँ निम्नलिखित है–

कहानी संग्रह– नीलम देश की राजकन्या, फांसी, जय सन्धि, वातायन, एक रात, दो चिड़िया, पाजेब।

उपन्यास– परख, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, जयवर्धन, मुक्तिबोध।

निबन्ध संग्रह – पूर्वोदय, जड़ की बाद, साहित्य का श्रेय और प्रेय, सोच–विचार, प्रश्न और प्रश्न काम, प्रेम और परिवार, अकाल पुरुष गाँधी।

संस्मरण– 'ये और वे'।

अनुवाद – प्रेम में भगवान (कहानी) मंदाकिनी, पाप और प्रकाश (नाटक)।

महादेवी वर्मा

प्र:1 'महादेवी वर्मा' का लेखिका परिचय दीजिए–

उत्तर– **लेखिका परिचय**–महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 ई. उत्तर प्रदेश फर्रुखाबाद में एक शिक्षित कायस्थ परिवार में हुआ था। आपके पिताजी गोविन्द प्रसाद भागलपुर में प्रधानाचार्य थे। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा इंदौर में हुई प्रयाग के प्रास्यवेद कॉले से हिन्दी तथा संस्कृत में एम.ए. करने के बाद आप महिला विद्यापीठ प्रयाग मे प्रधानाध्यापिका रहीं, 19 सितम्बर 1987 को आपका देहावसान हो गयाा।

शेखावाटी मिशन–100

साहित्यिक परिचय– महादेवी जी ने काव्य और गद्य के क्षेत्र में समान अधिकार के साथ साहित्यिक सृजन किया है। आप छायावाद की स्तम्भ है। गद्य के स्तम्भ में आपके संस्मरणात्मक रेखाचित्र प्रसिद्ध है। आप चाँद नामक पत्रिका की सम्पादिका है। आपका अपनी काव्य–रचना–'नीरजा' पर मंगला प्रसाद तथा सेकसरिया पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। भारत सरकार ने आपकी साहित्य सेवा के लिए आपको 'पद्मश्री' से अलंकृत किया है। पद्य के क्षेत्र मे आपने निबंध तथा समालोचना पर लेखन किया है। आपके संस्मरण और रेखाचित्र प्रसिद्ध है। महादेवी की भाषा परिष्कृत, संस्कृतनिष्ठ, तत्सम शब्दावली युक्त खडी बोली है। उसमें सुकुमारता तथा प्रवाह है। महादेवी ने वर्णात्मक, विचार– विवेचनात्मक तथा चित्रात्मक शैलियों का प्रयोग किया है। कहीं–कहीं व्यंग्य का पुट भी है।

कृतियाँ– महादेवी की प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित है।

(i) संस्मरण और रेखाचित्र–अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएं, मेरा परिवार, पथ के साथी आदि।

(ii) निबंध शृंखला की कड़ियाँ, साहित्यकार की आस्था आदि।

(iii) समालोचना– हिन्दी का विवेचनात्मक गद्य, विविध आलोचनात्मक निंबध इत्यादि।

(iv) कव्य– नीहार, रश्मि, यामा, नीरजा दीपशिखा, सांध्य गीत इत्यादी।

हजारी प्रसाद द्विवेदी

जीवन परिचय– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म उत्तर प्रदेश के 'आरत दुबे का छपरा बलिया' जिले के में सन् 1907 ई. में हुआ। इनके पिता अनमोल द्विवेदी तथा माता ज्योतिष्मति थी । प्रारम्भिक शिक्षा घर पर प्राप्त करने के बाद अपने काशी तथा लखनऊ विश्वविद्यालयों से उच्च शिक्षा प्राप्त की। बाद में आप शान्ति निकेतन काशी विश्वविद्यालय में शिक्षक रहे । आपको भारत सरकार ने पद्मभूषण से अलंकृत किया । 19 मई सन् 1979 को आप दिवंगत हुए।

साहित्यिक परिचय– द्विवेदी जी मूर्धन्य ललित निबंधकार हैं। आपने इतिहास समालोचना उपन्यास आदि क्षेत्रों में अपनी साहित्यक प्रतिभा का परिचय दिया है। भारतीय, संस्कृति, इतिहास, दर्शन आदि आपके प्रिय विचार रहे हैं। आपकी भाषा में तत्सम शब्दों के साथ देशज एवं उर्दू फारसी अंग्रेजी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया है। शैली वर्णनात्मक, विचारात्मक, भावात्मक व्यंग्य – विनोद उद्धरणात्मक समीक्षात्मक आदि है। साहित्य आपके लिए मनुष्यों के मानसिक और चारित्रिक उन्नयन का साधन है।

रचनायें– अशोक के फूल, कुटज (निबंध) बाणभट्ट की आत्मकथा, अनामदास का पोथा (उपन्यास) कबीर, सूर साहित्य (समीक्षा) संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो, नाथसिद्धों का बानियाँ (विश्वभारती) आदि।

@SHEKHAWAT
IMISSION100
शेखावाटी मिशन 100 की कक्षा 10 एवं 12 के विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें
शेखावाटी मिशन–100

–वितान–

पाठ–1 सिल्वर वैंडिग

प्र:1 यशोधर बाबू के मित्र का क्या नाम था?

उत्तर– किशनदा।

प्र:2 यशोधर बाबू ने मैट्रिक की परीक्षा पास .... कहाँ से प्राप्त की थी?

उत्तर– रेम्जे स्कूल अल्मोड़ा।

प्र:3 यशोधर बाबू की शादी कब हुई थी ?

उत्तर– 6 फरवरी 1947।

प्र:4 यशोधर बाबू दफ्तर से लौटते समय कहाँ जाते थे ?

उत्तर– बिड़ला मंदिर ।

प्र:5 यशोधर बाबू सब्जियाँ खरीदकर कहाँ से लाते थे ?

उत्तर– पहाड़गज से ।

प्र:6 यशोधर बाबू का बड़ा लड़का कहाँ काम करता था ?

उत्तर– एक प्रमुख विज्ञापन संस्था में।

प्र:7 यशोधर बाबू का दूसरा बेटा किस परीक्षा की तैयारी कर रहा था ?

उत्तर– आई. ए. एस।

प्र:8 यशोधर बाबू का तीसरा बेटा स्कालरशिप लेकर कहाँ चला गया था?

उत्तर– अमरीका।

प्र:9 यशोधर बाबू की कितनी संताने थी?

उत्तर– चार।

प्र:10 यशोधर बाबू के बड़े लड़के का क्या नाम था?

उत्तर– भूषण।

प्र:11 सिल्वर वैड़िंग कहानी के लेखक कौन है।

उत्तरा– मनोहर श्याम जोशी।

प्र:12 यशोधर बाबू के विवाह की कौनसी वर्षगाँठ मनाई गई ?

उत्तर– यशोधर बाबू के विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ मनाई गई।

प्र:13 सिल्वर वैड़िंग कहानी के मुख्य पात्रो के नाम लिखिए।

उत्तर– यशोधर पंत और किशनदा (कृष्णानंद पांडे)

प्र:14 यशोधर बाबू मैट्रिक पास करते ही **किशनदा** के क्वार्टर में रहने लगे थे।

प्र:15 सिल्वर वैड़िंग कहानी में आदर्श, यथार्थ तथा पीढ़ियों के **अन्तर्विरोधो** को उजागर किया गया है।

प्र:16 यशोधर बाबू को बेटी का पहनावा **समहाउ इंप्रॉपर** लगता है।

@SHEKHAWAT
IMISSION100
शेखावाटी मिशन 100 की कक्षा 10 एवं 12 के विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें
शेखावाटी मिशन–100

प्र:17 'असीक का फूल' किसे कहा जाता है?

उत्तर– भगवान के चरणों से उठाए हुए आशीर्वाद के फूल को असीक का फूल कहा जाता है।

प्र:18 सिल्वर वैड़िंग पार्टी आयोजित हुई लेकिन यशोधर बाबू ने उसमें **अधूरे मन से** भाग लिया।

प्र:19 लोग यशोधर बाबू को किसका मानक मानते थे?

उत्तर– किशनदा का।

प्र:20 यशोधर बाबू सिल्वर वैड़िंग के आयोजन को क्या मानते थे ?

उत्तर– विदेशी परम्परा।

प्र:21 यशोधर बाबू के कार्यालय में सीधा 'असिस्टेंट ग्रेड' होकर कौन आया था ?

उत्तर– चड्डा।

प्र:22 किशनदा के चरित्र का सबसे उज्ज्वल पक्ष क्या था ?

उत्तर– आश्रितों की खैर खबर रखना।

प्र:23 यशोधर बाबू के लिए भूषण ऊनी ड्रेसिंग गाउन क्यों लाया था?

उत्तर– यशोधर पंत की 'सिल्वर वेडिंग' के उपहारस्वरूप उनका पुत्र भूषण उनके लिए ऊनी गाउन लेकर आया था। यशोधर को इससे कुछ अधिक प्रसन्नता न थी। भूषण ने गाउन देते हुए कहा कि सुबह दूध लेने इस गाउन को पहनकर ही जाया करे। भूषण को पिता से ज्यादा अपनी इज्जत की चिन्ता थी, उसके पिता पुलोवर पहनकर दूध लेने न जायें, इसलिए वह गाउन लाया था।

प्र:24 'सिल्वर वैड़िंग' कहानी का मुख्य पात्र यशोधर बाबू समाज के किस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है?

उत्तर– यशोधर बाबू के रूप में कहानीकार समाज के मध्यवर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। यह पात्र मन से सुविधाभोगी रहना चाहता है लेकिन आदर्श रूप में वह साधारण मध्यवर्ग का प्रतिनिधि है।

प्र:25 क्या 'पीढी के अन्तराल' को सिल्वर वैड़िंग कहानी की मूल संवेदना कहा जा सकता ह?

उत्तर– कहानीकार ने सिल्वर वैडिंग को आधार बनाकर दो पीढ़ियों के विचार–भेद का चित्रण किया हैं। दोनों का यह मतभेद विभिन्न अवसरों पर प्रकट हुआ हैं। अतः पीढ़ी अन्तराल को कहानी की मूल संवेदना मानना अनुचित नहीं हैं।

प्र:26 किशनदा ने यशोधर बाबू की किस प्रकार सहायता की ?

उत्तर– यशोधर बाबू को उन्होंने अपने क्वार्टर में आश्रय दिया। उन्हें सभी की रसोई बनाने का काम सौंपा। अपने पास से पचास रुपये देकर घर भिजवाये। बाद में नौकरी लगवाकर घर बसाने के योग्य बनाकर अपने यहाँ से भेजा।

प्र:27 यशोधर बाबू का व्यवहार आपको कैसा लगा?

उत्तर– यशोधर डैमोक्रेट हैं। अपनी पत्नी तथा बच्चों पर अपनी बातें थोपते नहीं और उनको अपनी तरह जीने की छूट देते हैं अतः कहा जा सकता है कि उनका व्यवहार सभी के प्रति सम्मान और सहानुभूति का है।

प्र:28 यशोधर बाबू ने किशनदा के गाँव चूले जाने के बाद कौन–कौनसी परम्पराओं का पालन किया था?

उत्तर– घर में होली गवाना, जन्यो पुन्यू के दिन सभी कुमाऊँनियों को जनेऊ बदलने के लिए अपने घर बुलाना, राम लीला की तालीम के लिए क्वार्टर का एक कमरा दे देन आदि परंपराओं का पालन किया।

शेखावाटी मिशन–100

प्र:29 किशनदा की कौन–सी छवि यशोधर बाबू के मन में बसी हुई थी ?

उत्तर– कुर्ते – पाजामें के ऊपर ऊनी–गाउन पहने, सिर पर गोल विलायती टोपी और पाँवों में देशी खड़ाऊ तथा हाथ में एक छड़ी लिए हुए सुबह की सैर करते किशनदा की कभी नहीं भुला सके।

प्र:30 यशोधर बाबू अपनी घरवाली के आधुनिकाओं–सा आचरण करने पर क्या कहकर उसका मजाक उड़ाते थे ?

उत्तर– यशोधर बाबू की घरवाली आधुनिकताओं–सा आचरण करती है तो यशोधर बाबू उसे 'शानयत बुढ़िया', 'चढ़ाई का लहँगा' या 'बुढ़ी मुँह मुहासे लोग करे तमासे,' कहकर उसका मजाक उड़ाते थे। उसे अनदेखा कर देना चाहते हैं लेकिन यह स्वीकार करने को बाध्य भी हो जाते हैं कि तमाशा स्वयं उनका बन रहा है।

प्र:31 यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है, लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं, ऐसा क्यों ?

उतर– यशोधर बाबू अपने आदर्श किशनदा से अधिक प्रभावित हैं और आधुनिक परिवेश में बदलते हुए जीवन – मूल्यों और संस्कारों के विरुद्ध है। जबकि उनकी पत्नी अपने बच्चे के साथ खड़ी दिखाई देती हैं। वह अपने बच्चों के आधुनिक दृष्टिकोण से प्रभावित हैं। इसलिए यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ परिवर्तित होती है, लेकिन यशोधर बाबू अभी भी किशनदा के संस्कारों और परंपराओं से चिपके हए हैं।

प्र:32 वर्तमान समय में परिवार की संरचना, स्वरूप से जुड़े आपके अनुभव इस कहानी से कहाँ तक सामंजस्य बिठा पाते हैं?

उत्तर– यशोधर बाबू और उनके बच्चों की सोच में पीढ़ीजन्य अंतराल आ गया है। यशोधर संस्कारों से जुड़ना चाहते हैं और संयुक्त परिवार की संवेदनाओं को अनुभव करते है जबकि उनके बच्चे अपने आप में जीना चाहते हैं। अतरू जरूरत इस बात की है कि यशोधर बाबू को अपने बच्चों की सकारात्मक नई सोच का स्वागत करना चाहिए, परन्तु यह भी अनिवार्य है कि आधुनिक पीढ़ी के युवा भी संस्कार सीखे ताकि एक नए एवं संस्कारी– समाज की स्थापना की जा सके।

प्र:33 यशोधर बाबू ने अपनी पत्नी में समय के अनुसार क्या परिवर्तन देखे ?

उत्तर– यशीधर बाबू की पत्नी बुढ़ापे में भी बगैर बाह का ब्लाउज पहनती थी, ऊँची हील की सैंडल पहनती थी, होंठो पर लाली और बालों में खिजाब लगाती थी।

प्र:34 सिल्वर वैडिंग पाठ के यशोधर बाबू समय के साथ ढल सकने में असमर्थ रहते है। ऐसा क्यों ?

उत्तर– यशोधर बाबू पुरानी परम्पराओं को मानते है। उन्हें आधुनिक पहनावे, पश्चिमी जीवनशैली तथा रहन सहन से नफरत है। अतः वह ढल सकने में असमर्थ रहे ।

प्र:35 यशोधर बाबू दफ्तर में अपने मातहतों से कैसा व्यवहार करते थे ?

उत्तर– यशोधर बाबू अपने मातहतों से दफ्तर में दूरी बनाकर रखते थे। वे हल्की चुटीली बात कहकर सभी बाबूओं के मुस्कुराने के लिए मजबूर करते थे।

प्र:36 'अर्ली टू बैड अर्ली टू राइज मैक्स ए मैन हेल्थी वेल्थी एण्ड वाइज' कथन का भाव स्पष्ट कीजिए

उत्तर– यह कथन किशन दा अक्सर यशोधर बाबू से कहा करते थे। किशनदा का ऐसा मानना था कि रात को जल्दी सोने और सुबह जल्दी उठने से रूप से स्वस्थ मनुष्य शारीरिक और मानसिक बुद्धिमान बनता है।

प्र:37 अपने बच्चों की तरक्की से खुश होने के बाद भी यशोधर बाबू क्या महसूस करते हैं?

शेखावाटी मिशन–100

उत्तर– उनके बच्चे गरीब रिश्तेदारों के प्रति उपेक्षा का भाव रखते हैं। उनकी यह खुशहाली अपनों के बीच परायापन पैदा कर रही है, जो उन्हें अच्छा नहीं लगता।

प्र:38 आजकल किशनदा जैसी जीवन–शैली अपनाने वाले बहुत कम लोग मिलते हैं, क्यों ?

उत्तर– किशनंदा जैसे लोग मस्ती से जीते हैं, निः स्वार्थ दूसरों की सहायता करते हैं, जब कि आजकल सभी सहायता के बदले कुछ न कुछ पाने की पाने की आशा रखते हैं, बिना कुछ पाने की आशा रखे सहायता करने वाले बिरले ही होते है।

प्र39 यशोधर बाबू के अधीनस्थ नए कर्मचारी उनकी अपेक्षा क्यों करते हैं?

उत्तर– यशोधर बाबू किशन दा के पदचिन्हों पर चलकर अनुशासित रहकर प्रतिदिन का कार्य प्रतिदिन प्रॉपर करवाना चाहते थे किन्तु आधुनिक परम्पराओं वाले अधीनस्थ कर्मचारीगण अगले दिन पर टालने का प्रयास करते रहते है, यह उनको समहाऊ इंप्रॉपर लगता था इसलिए वे उनकी उपेक्षा करते थे।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्नः–

प्र:40 यशोधर बाबू की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर– यशोधर बाबू की चारित्रिक विशेषताएँ निम्न हैं–

(i) **कर्मठ व परिश्रमी :–**

सेक्शन ऑफिसर होने के बावजूद दफ्तर देर तक काम करते थे।

(ii) संवेदनशीलः–

यशोधर बाबू अत्यधिक संवेदनशील थे। वे यह बात स्वीकार नहीं कर पाते कि उनका बेटा उनकी इजाजत के लिए बिना ही घर का सोफा सेट आदि खरीद लाता है, उनका साईकिल से दफ्तह जाने पर एतराज करती है, उन्हें दुध ले जाने में असुविधा न हो इसलिए ड्रेसिंग गाउन भेंट करता है। पत्नी उनकी बात न मानकर बच्चों के कहे अनुसार चलती है। बेटी विवाह के बंधन में बंधने से इंकार करती है और उसके वस्त्रों में शालिनता नहीं झलकती है। परिवारवालों से तालमेल न बैठने के कारण वे अपना अधिकतर समय घर से बाहर मंदिर में सब्जी मंडी में सब्जी खरीदते बिताते है।

(iii) परंपरावादीः–

वे परंपरावादी थे। आधुनिक समाज बदलते समीकरणों को स्वीकार करने को तैयार नहीं थे इसलिए परिवार अन्य सदस्यों से उनका तालमेल नहीं बैठ पा रहा था।

(iv) धार्मिक व्यक्तिः–

यशोधर बाबू एक धार्मिक व्यक्ति थे। वे अपना अधिकतर समय पूजा–पाठ और मंदिर में बिताते थे

प्र:41 ''जिन लोागों के बाल–बच्चे नहीं होते उनकी मौत जो हुआ होगा से हो सकती है।'' इस कथन से आप कहा तक सहमत हैं?

उत्तर– यशोधर बाबू के आदर्श पुरूष किशनदा का बुढ़ापा सुखी नहीं रहा। रिटायर होने के बाद इधर–उधर भटकने के पश्चात् वे गाँव चले गये जहाँ एक साल बाद उनकी मृत्यु बिना किसी बीमारी के हो गई। यशोधर बाबू के पूछने पर उनके एक बिरादर ने उनकी मृत्यु के बारे में रूखा–सा जवाब दे दिया–'जो हुआ होगा' यानी पता नहीं क्या हुआ। जिन लोगों के बाल–बच्चे नहीं होते या परिवार नहीं होता, रिटायर होने के बाद जो हुआ होगा यानि पता नहीं क्या हुआ। जिन लोगों के बाल–बच्चे नहीं होते या परिवार नहीं होता रिटायर होने के बाद 'जो हुआ' होगा, से ही उनकी मौत हो जाती है। 'जो

शेखावाटी मिशन–100

हुआ होगा' वाक्य से यह भाव प्रकट होता है कि वृद्धावस्था में घर–परिवार और बच्चो के बीच रहने से सुरक्षा रहती है नहीं तो बिना कारण लोगों की उपेक्षा और उदासीनता के बीच 'जो हुआ होगा' यानी पता नहीं केसे मृत्यु हो जाती है।

प्र:42 यशोधरा बाबू अपने बच्चों से क्या अपेक्षा रखते थे? 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर बताइए।

उत्तर– यशोधर बाबू बच्चों से अपेक्षा रखते थे कि वे उन्हें बुजुर्ग और सांसारिक जीवन का अनुभव–सम्पन्न व्यक्ति माने और सम्मान करें। घर–गहस्थी के हर मामले में उनसे सलाह ली जाए। कोई भी काम उनसे बिना पूछे न किया जाए। बच्चे अपना वेतन भी उन्हें लाकर दें। इसके साथ ही वे चाहते है कि उनके बेटे घर के रोजमर्रा के कामों मे उनका हाथ बटाएं उनकी इच्छानुसार उनकी लड़की शालीन कपड़े पहने। साथ ही वे रिश्तेदारी एवं सामाजिक कार्यों में उनका सहयोग करें।

प्र:43 यशोधर बाबू इपने ही घर मे पूरी तरह बेचारे और असहाय हो चुके हैं। 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर सिद्ध कीजिए।

उत्तर– यह सत्य है कि यशोधर बाबू अपने ही घर में लाचार और असहाय हो चुके हैं। उनके बच्चों ने आधुनिकता के दबाव में आकर उन्हें लगभग नकार दिया है। वे न तो उनका सम्मान करते है न उनसे कोई सलाह लेते है अैर न वे उनका किसी प्रकार का सहयोग करते हैं। वे उनकी हर आदत और हर चीज की उपेक्षा करते हैं। बच्चों का मन रखने के कारण उन्हें साइकिल छोड़नी पड़ती है। उनमें अब इतनी हिम्मत नहीं रही कि वे बच्चों से किसी बात को मनवा सकें। इस कारण उन्हें अपने ही घर में अकेल और असहाय पड़ चुके हैं।

प्र:44 आप कैसे कह सकते हैं कि यशोधर बाबू किशनदा के मानस–पुत्र हैं? कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– यह बात सत्य है कि यशोधर बाबू किशनदा के मानस पुत्र हैं क्योंकि वे हर छोटी–छोटी बात में किशनदा का अनुकरण करते हैं। उनको ही अपना आदर्श मानते हैं। किशनदा की तरह ही उनका हाथ मिलाकर हँसता, प्रशंसा पाकर झेंपने ऑफिस से चलते–चलते जूनियरों से कोई मनोरंजन बात कह कर दिनभर के शुष्क व्यवहार का निराकरण करना आदि सभी बातों पर उनकी ही छाप है। साथ ही उन्हें घर में धार्मिक कार्यक्रम करवाना ये सब आदतें किशनदा ने ही उनमें लगाई है। इन सब बातों के आधार पर कहा जा सकता है कि यशोधर बाबू किशनदा के मानस–पुत्र है।

शेखावाटी मिशन–100

@SHEKHAWATIMISSION100

शेखावाटी मिशन 100 की कक्षा 10 एवं 12 के विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें

पाठ–2

जूझ

अति लघुत्तरात्मक प्रश्नः–

प्र:1 'लेखक का दादा जल्दी कोल्हू क्यों चलाता था ?

उत्तर– लेखक का दादा जल्दी कोल्हू अधिक पैसों के लिए चलाता था।

प्र:2 कहानी के शीर्षक 'जूझ' का क्या अर्थ हैं?

उत्तर– कहानी के शिर्षक 'जूझ' का अर्थ है– संघर्ष।

प्र:3 'जूझ' उपन्यास मूलतः किस भाषा में रचित है ?

उत्तर– 'जूझ' उपन्यास मूलतः मराठी भाषा में रचित है ।

प्र:4 पाठशाला जाने की बात लेखक ने सबसे पहले किससे की?

उत्तर– पाठशाला जाने की बात लेखक ने सबसे पहले माँ से की।

प्र:5 सौंदलगेकर किस विषय का अध्यापक था?

उत्तर– सौंदलगेकर मराठी का अध्यापक था।

प्र:6 खेत का कौन–सा काम समाप्त होने के बाद लेखक ने माँ से पढ़ाई की बात की?

उत्तर– कोल्हू का काम समाप्त होने के बाद लेखक ने माँ से पढ़ाई की बात की।

प्र:7 लेखक की माँ के अनुसार पढ़ाई की बात करने पर लेखक का पिता कैसे गुर्राता हैं?

उत्तर– पढ़ाई की बात करने पर लेखक का पिता जंगली सुअर के समान गुर्राता है।

प्र:8 शर्त के अनुसार पाठशाला जाने से पहले लेखक को सेवेरे कितनी बजे तक खेत में काम करना होता था?

उत्तर– लेखक को सवेरे 11 बजे तक खेत में काम करना होता था।

प्र:9 लेखक के दादा (पिता) की कैसी प्रकृति थी?

उत्तर– लेखक के दादा (पिता) की प्रकृति गुस्सैल और हिंसक थी।

प्र:10 लेखक एक जुझारू यौद्ध की तरह संघर्ष करके जीवन को ऊँचा बनाता है। आप इससे कहां तक सहमत है?

उत्तर– 'जूझ' उपन्यास का अंश होने से यह बात तो स्वतः सिद्ध होती है कि कहानी का नायक एक योद्धा की तरह संघर्ष करके ही अपने जीवन को योग्य बनाता है।

प्र:11 वसंत पाटील से दोस्ती होने के बाद लेखक के व्यवहार में कौनसे परिवर्तन हुए?

उत्तर– लेखक की दोस्ती वसत पाटिल से हो गई। वह भी गणित में होशियार हो गया। अब दोनों मिलकर कक्षा के अन्य बालकों के सवाल जांचने लगे थे।

प्र:12 लेखक के मन में कवियों के प्रति क्या धारणा बन गई?

उत्तर– लेखक के मन कवियों के बारे मे यह धारणा बन गई कि कवि की हमारी तरह हाड़–मास और लोभ–मोह का मनुष्य होता है। इससे लेखक के मन में यह बात बैठ गई कि वह भी कवि बन सकता है।

प्र:13 लेखक के दादा का जल्दी ईख पेरने का कारण क्या था?

शेखावाटी मिशन–100

उत्तर– लेखक का दादा लालची स्वभाव का था वह गुड़ का दाम जल्दी लेना चाहता था।

प्र:14 लेखक किशोरावस्था से खेती के बारे में क्या सोचता था?

उत्तर– लेखक किशोरवास्था में सोचने लगा थाा कि खेती से व्यक्ति का जीवन–यापन तो हो सकता है लेकिन जीवन का विकास नहीं हो सकता।

प्र:15 "अकेलापन अथवा एकान्त मनुष्य को योग्य बनाता है।'' सिद्ध कीजिए।

उत्तर– एकान्त में मनुष्य की एकाग्रता बढ़ जाती है और वह अपने लक्ष्य प्रति समर्तित हो जाता है।

प्र:16 'जूझ' उपन्यास का नायक पढ़ाई क्यों करना चाहता था?

उत्तर– यदि पाठशाला जाकर कुछ पढ़–लिख लेगा तो कहीं भी नौकर हो जायेगा जिससे चार पैसे हाथ में भी रही सकेंगे और वह गाँव के ही एक धनी किसान विठोबा की तरह कुछ अन्य धंधा–कारोबार भी कर सकेगा।

लघुत्तरात्मक प्रश्नः–

प्र:17 कवि भी अपने जैसा हाड़ मांस का मनुष्य हो कैसे सकता है। आनंदा को इसका भान कैसे हुआ ?

उत्तर– मास्टर सौंदलगेकर मराठी के अच्छे कवि तो थे ही, उन्हें दूसरे कवियों की अनेक कविताएँ कंठस्थ थीं। उनके पास अनेक कवियों के काव्य संग्रह भी रखे थे । यदा– कदा वे लेखक को कवियों के अनेक सुन्दर– सुन्दर संस्मरण सुनाते थे। उससे लेखक के मन में कवियों के बारे में स्पष्ट धारणा बन गई कि कवि भी हमारी तरह हाड़ – मांस के मनुष्य होत है।

प्र:18 'जूस' के लेखक को कवि बनाने में किसका बहुत बड़ा सहयोग था?

उत्तर– लेखक को कवि बनाने में मास्टर सौंदलगेकर का बड़ा सहयोग था। उनके कविता पाठ का इतना प्रभाव पड़ा कि वह उनसे भी अधिक सफल अभिनय के साथ कविता पाठ करने लगा।

प्र:19 लेखक और उसकी माँ दादा से क्यों डरते थे 'जूझ' पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर– लेखक का दादा जरा–सी बात पर उसे और उसकी माँ को मारता था। वह पढ़ाई की बात सुनकर उन पर जंगली सूअर की तरह गुर्राता था। अतः लेखक और उसकी माँ दादा से पढ़ाई की कोई बात नहीं कह सकते थे।

प्र:20 पाठशाला पहुँचते ही लेखक का मन खट्टा हो जाता है, वह अब पाठशाला जाने से कतराता है – ऐसा क्यों हुआ ? बताइए।

उत्तर– उसके साथ के विद्यार्थी आगे की कक्षा में चले गये हैं। शेष सब उससे उम्र में कम हैं। अतः उनके द्वारा उसका मजाक उड़ाया जाता है। अतः वह कक्षा कतराने लगता है।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्नः–

प्र:21 ''दादा की समझ में गुड़ ज्यादा निकालने की अपेक्षा भाव अधिक मिलना चाहिये।'' 'जूझ' अध्याय का यह कथन वर्तमान समाज की प्रतिस्पर्दा तथा धन लोलुपता की प्रवृत्ति की ओर इंगित करता है कथन के सन्दर्भ में अपने विचार लिखिए।

उत्तर– ईख पेरने के बारे में गाँववालो का तर्क था. कि देर से ईख पेरने से इस का रस गाढा हो जाता है, परिणामस्वरूप गुड़ अच्छा बनता है और दाम भी अच्छे मिलते हैं। दूसरी ओर लेखक का दादा जल्दी कोल्हू लगाकर ईख पेरने का पक्षधर था कि पहले ईख पेरने से बाजार में अच्छे दाम मिल जाते थे। लेखक का दादा लालची स्वभाव का था। वह

शेखावाटी मिशन–100

गुड़ का ज्यादा दाम जल्दी लेना चाहता था। वर्तमान में भी कुछ लालची व्यापारी अपने मुनाफे – फायदे के कमतौली, मिलावट, घटिया सामान देना आदि अनैतिक कार्य करते हैं। कुछ किसान भी अधिक उपज पाने के लिए हानिकारक रसायनों का अंधाधुंध प्रयोग करते हैं।

प्र:22 'मंत्री' नामक अध्यापक की विशेषता बताते हुए बताइए कि उन्होंने लेखक के विकास में क्या सहयोग दिया ?

उत्तर– 'मंत्री' नामक अध्यापक गणित पढ़ाते थे। वह आदर्श अध्यापक थे। वे बड़े अनुशासनी, एवं कठोर स्वभाव के थे। सभी छात्र उनसे डरते थे। लेकिन वे योग्य एवं होशियार बच्चों को हर तरह से प्रोत्साहन देते थे। दूसरे और शरारती बच्चे उनसे ज्यादा उनके घूंसे से डरते थे। पीठ पर पड़ा एक घूंसा अच्छे–अच्छे लड़के से हुक भरवा लेता था। मूर्ख बच्चा उनके सामने नहीं पड़ सकता था। उसका परिणाम यह हुआ कि अच्छे बच्चे आगे बढ़ते गये, अधिकांश बच्चे घर से काम करके लाने लगे। लेखक के मन पर उनक अच्छा प्रभाव पड़ा। वह मेहनत करने लगा और शीघ्र ही वसंत पाटील से उनकी दोस्ती हो गई। इस प्रकार उसकी प्रतिभा का सामान्य विकास हुआ।

प्र:23 मास्टर न. वा सौदलगेकर की क्या विशेषताएँ थीं? उनका लेखक के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर– मास्टर न. वा सौंदलगेकर मराठी अध्यापक थे। वे एक अच्छे कवि भी थे। उनका कविता पढ़ाने का ढंग बड़ा प्रभावशाली था। लेखक के जीवन को बदलने में उनका बहुत बड़ा योगदान था। वे बहुत तन्मय होकर पढ़ाते थे। उन्हें मराठी के साथ– साथ अनेक अंग्रेजी की कविताएँ कण्ठस्थ थीं। उन्हें छन्द और लय का अच्छा ज्ञान था। वे अपने मधुर कण्ठ से कविता पाठ करते थे, जो कि बड़ा प्रभावशाली होता था। स्वयं लेखक भी उनकी कविता को बड़ी तन्मयता के साथ सुनता था। वे कविता के साथ अभिनय भी करते थे। इससे सुनने वाले को का भली–भाँति भावबोध हो जाता था। लेखक के जीवन में मास्टर का यह प्रभाव पड़ा कि वह भी उसी प्रकार अभिनय के साथ कविता पाठ करने लगा।

पाठ–3

अतीत के दबे पाँव

वस्तुनिष्ठ प्रश्नः–

प्र:1 कोठार किसके काम आता होगा ?

उत्तर– अनाज जमा करने के लिए।

प्र:2 दाढ़ी वाली मूर्ति का नाम क्या रखा गया है?

उत्तर– याजक नरेश ।

प्र:3 मुअनजो–दडो हड़प्पा से प्राप्त हुई नर्तकी की मूर्ति किस राष्ट्रीय संग्रहालय में रखी हुई है?

उत्तर– दिल्ली संग्रहालय में।

प्र:4 मुअनजी – दूड़ो की गलियों तथा घरों को देखकर लेखक को किस प्रदेश का ख्याल आया ?

उत्तर– राजस्थान।

प्र:5 मुअनजो–दड़ो के घरों में टहलते हुए लेखक को किस गाँव की याद आई?

उत्तर– कुलधरा।

प्र:6 मुअनजो–दड़ो की खुदाई में निकली पंजीकृत चीजों की संख्या कितनी थी?

शेखावाटी मिशन–100

उत्तर– 50 हजार से अधिक।?

प्र:7 खुदाई से प्राप्त गेहूँ का रंग कैसा है?

उत्तर– काला।

प्र:8 अजायबघर में तैनात व्यक्ति का नाम क्या था?

उत्तर– अली नवाज।

प्र:9 सिंधु सभ्यता की खबी क्या है?

उत्तर– सौंदर्य – बोध।

प्र:10 लेखक ने सिन्धु सभ्यता के सौंदर्य–बोध को क्या नाम दिया है ?

उत्तर– समाज–पोषित।

प्र:11 मुअनजो–दड़ो अपने काल में किसका केन्द्र रहा होगा ?

उत्तर– सभ्यता का।

प्र:12 मुअनजो–दड़ो नगर कितने हैक्टेयर में फैला हुआ था?

उत्तर– 200 हैक्टेयर।

प्र:13 भग्न इमारत में कितने खंभे है?

उत्तर– 20 खंभे।

प्र:14 'डीके' हलका किसके नाम पर रखा गया है?

उत्तर– दीक्षितकाशीनाथ के।

प्र:15 मुअनजोदड़ो की लम्बी सड़क अब कितनी बची है?

उत्तर– 1/2 मील।

प्र:16 मुअनजोदड़ों में लगभग कितने कुएँ थे।

उत्तर– 700

प्र:17 सिंधु घाटी सभ्यता में कौन–से फल उगाए जाते थे ?

उत्तर– खजूर और अंगूर।

प्र:18 सिन्धु घाटी सभ्यता में कपास पैदा होती थी। इसका क्या प्रमाण है?

उत्तर– सूती कपड़ा।

प्र:19 'अतीत में दबे पाँव' नामक पाठ के रचयिता का नाम क्या है ?

उत्तर– ओम थानवी।

प्र:20 लेखक के अनुसार मुअनजो–दडो की आबादी लगभग कितनी थी?

उत्तर– 85 हजार।

प्र:21 मुअनजो–दड़ो का नगर कितने हजार साल पहले का है।

उत्तर– 5000 साल।

शेखावाटी मिशन–100

@SHEKHAWAT IMISSION100

शेखावाटी मिशन 100 की कक्षा 10 एवं 12 के विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें

प्र:22 मुअनजो–दड़ो की मुख्य सड़क की चौड़ाई कितनी है?

उत्तर– 33 फीट।

प्र:23 मुअनजो–दड़ो की सभ्यता और संस्कृति किसकी शोभा बढ़ा रहे हैं?

उत्तर– अजायबघर की।

प्र:24 मुअनजो–दड़ो के सबसे ऊँचे चबूतरे पर क्या विद्यमान है?

उत्तर– बौद्ध स्तूप।

प्र:25 बौद्ध स्तूप कितने फुट ऊँचे चबूतरे पर निर्मित है?

उत्तर– 25 फुट।

प्र:26 चबूतरे पर किसके कमरे बने हुए हैं?

उत्तर– भिक्षुओं के

प्र:27 राखालदास बैनर्जी यहाँ पर किस वर्ष आए थे ?

उत्तर– सन् 1922 में।

प्र:28 कुंड के पानी के प्रबंध के लिए क्या व्यवस्था है?

उत्तर– कुआँ।

प्र:29 उत्तर में दो पांत में कितने स्नानघर है

उतर– आठ।

प्र:30 महाकुंड की गहराई कितनी है ?

उत्तर– 7 फुट।

प्र:31 महाकुंड के तीन तरफ किसके कक्ष बने हुए ?

उत्तर– साधुओं के।

प्र:32 राखालदास बैनर्जी, कौन थे ?

उत्तर– पुरातत्त्ववेत्ता।

प्र:33 मुअनजो–दड़ो को नागर भारत का सबसे पुराना कहा गया है?

उत्तर– लैंडस्केप।

प्र:34 मुअनजो–दड़ो के वास्तुकला की तुलना किस नगर के साथ की गई है?

उत्तर– चंडीगढ़ से।

प्र:35 मुअनजो–दड़ों से सिन्धु नदी कितनी दूरी पर बहती है ?

उत्तर– 5 किलोमीटर।

प्र:36 दक्षिण में टूटे–फूटे घरों का जमघट किसकी बस्ती मानी गई है?

उत्तर– कामगारों की।

प्र:37 महाकुंड कितने फुट लंबा है?

@SHEKHAWAT IMISSION100
शेखावाटी मिशन 100 की कक्षा 10 एवं 12 के विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें
शेखावाटी मिशन–100

उत्तर– 40 फुट।

प्र:38 महाकुंड की चौड़ाई कितनी हैं?

उत्तर– 25 फुट।

अति लघुत्तरात्मक प्रश्नः–

प्र:39 मुअनजोन्दड़ो और हड़प्पा में प्रयुक्त ईटों में क्या अन्तर है?

उत्तर– मुअनजोदड़ो में प्रयुक्त ईंटे पक्की है, जबकि हड़प्पा में कच्ची और पक्की दोनों तरह की ईंटे है।

प्र:40 मुअनजोन्दड़ो की खुदाई किसके निर्देश पर प्रारम्भ हुई थी ?

उत्तर– मुअनजोदड़ो की खुदाई भारतीय पुरात्तव सर्वेक्षण के महानिदेशक जॉन मार्शल के निर्देश पर प्रारम्भ हुई थी।

प्र:41 मुअनजो–दड़ो का अर्थ बताइए।

उत्तर– मुअनजो–दड़ों का अर्थ है – मुर्दों का टीला।

प्र:42 दुनिया के दो सबसे पुराने नियोजित शहर कौनसे माने जाते हैं?

उत्तर– दुनिया के दो सबसे पुराने नियोजित शहर मुअनजो–दड़ो और हड़प्पा माने जाते हैं।

प्र:43 राखालदास बनर्जी के बाद मुअनजो–दड़ो की खुदाई का कार्य किससे कराया गया था?

उत्तर– राखालदास बनर्जी के बाद हेरल्ड हरग्रीब्ज ने सन् 1924–1925 में आगे का खुदाई कार्य करवाया।

लघूत्तरात्मक प्रश्नः–

प्र:44 मोहनजोदड़ो कैसा शहर माना जाता है?

उत्तर– मोहनजोदड़ो एक बड़ा शहर था जो कि हर तरह की सुविधाओं से सम्पन्न था। यहाँ व्यापार के साथ–साथ उन्नत कृषि भी होती थी। उस प्रकार यह एक बड़ा शहर तो था ही समृद्ध भी था।

प्र:45 खुदाई में माप्त मुअनजो–दड़ो की इमारत एवं अन्य स्थलों तथा वस्तुओं का सामान्य परिचय दीजिए।

उत्तर– मुअनजोदड़ो की खुदाई में बड़ी तादाद में इमारतें, सड़कें, धातु – पत्थर की मूर्तियाँ, चाक पर बने चित्रित मृद – भाँड़, अनेक प्रकार की मुहरें आदि तथा अन्य तरह का साजो–सामान और खिलौने आदि मिले है।

प्र:46 मुअनजो–दड़ो नगर की आबादी के बारे में क्या अनुमान लगाये जाते हैं?

उत्तर– मुअनजो–दड़ो का विस्तार देखकर विद्वानों अनुमान लगाया था कि यह नगर, आजकल हमारे यहाँ के महानगरों की भाँति ही रहा होगा। उस समय उस शहर की आबादी लगभग एक लाख रही होगी तथा उससे अधिक भी हो सकती है।

प्र:47 पुरातत्ववेता सिन्धु सभ्यता को 'तर सभ्यता' कहते हैं। सिद्ध कीजिए।

उत्तर– पुरातत्व की खुदाई में यहाँ सात सौ कुएँ निकले हैं। एक महाकुण्ड मिला है। आठ स्नानागार बने हैं। अतः इसे हम तर सभ्यता भी कह सकते है।

रचनात्मक लेखन (कार्यालय–पत्र)

प्र:1 चूरु कलेक्टर की ओर से रसद विभाग तो रजिस्ट्रार चूरु को एक पत्र लिखिए जिसमें राशन की दुकानों पर होने वाली अनियमितताओं के सम्बंध में कार्यवाही का आग्रह किया गया हो।

शेखावाटी मिशन–100

उत्तर– अंकभार = (04)

राजस्थान सरकार रसद विभाग चूरू

कलेक्ट्रेट कार्यालय

जिला कलेक्टर चूरू

2 / वि / आदेश / क्रमांक / प्रशासन / 2024 दिनांक–10.01.2024

श्रीमान.........................

आपको सूचनार्थ पत्र प्रेषित कर लेख है कि कल की राजस्थान पत्रिका और दैनिक भास्कर में प्रकाशित रसद विभाग अनियमितताओं को पढ़कार ज्ञात हुआ है कि लगभग सभी सरकारी उचित मूल्यों की राशन दुकानों पर अनियमितता हो रही है।

उपलब्ध सामग्री BPL परिवारों को न, वितरण कर कालाबाजारी की जा रही है। अतः इस संदर्भ में आप उचित कार्यवाही कर उचित मूल्य की वस्तुओं की आपूर्ति चयनित गरीब परिवारों को कराना सुनिश्चित करें। अनैतिक कार्य कर रहे सभी राशन डीलरों के लाइसेंस रद्द करे/ आशा है आप इस कार्य को गंभीरता के साथ विचार कर उचित निर्णय करेंगे।

शुभेच्छु

सिद्धाार्थ सिहाग

(जिलाधीश चूरू)

विज्ञप्ति

प्र:1 स्वयं को सचिव राजस्थान पाठ्य–पुस्तक मण्डल अजमेर मानते हुए सभी पुस्तक विक्रेताओं को सूचित करने की विज्ञाति जारी कीजिए ताकि सभी पुस्तक विक्रेता अपना पंजिकरण समय पर करवा सके।

उत्तर– कार्यालय, सचिव, राजरथान पाठ्य –पुस्तक, मण्डल, अजमेर

रा0 / पा. / पु. / मण्डल / अजमेर / 2024 दिनांक–10.01.2024

विज्ञप्ति संख्या:- 07/2024

शीर्षकः–पुस्तक विक्रेताओं का पंजीकरण

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित विभिन्न कक्षाओं की पाठ्य–पुस्तकें केवल उन्हीं पुस्तक विक्रेताओं को उपलब्ध करवाई जाएँगी जिनका राजस्थान पाठ्य–पुस्तक मण्डल, अजमेर में पंजीकरण होगा।

अतः सभी पुस्तक विक्रेताओं को सूचित किया जाता है. कि जो पुस्तक विक्रेता विभिन्न कक्षाओं की पुस्तक विक्रय करना चाहते हैं वो दिनांक 15 जनवरी 2024 तक मण्डल कार्यालय में उपस्थित होकर पंजीकरण की कार्यवाही पूर्ण करें।

सचिव

राजस्थान पाठ्च–पुस्तक मण्डल, अजमेर

शेखावाटी मिशन–100

2. सचिव मा. शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर की ओर से दसवीं और बारहवीं की बोर्ड परीक्षा तिथि परिवर्तन की विज्ञप्ति तैयार कीजिए ।

उत्तर– **विज्ञप्ति**

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर

क्रमांक–325 दिनांक 4 मार्च, 2023

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर द्वारा आयोजित कक्षा दसवीं एवं बारहवीं की परीक्षाएँ दिनांक 10 मार्च 2023 से प्रारम्भ होनी थी, किन्तु अपरिहार्य कारणों से अब 17 मार्च 2024 से आयोजित होंगी। बोर्ड परीक्षार्थी अपना नवीन समय विभाग–चक्र माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की वेबसाइट से डाउनलोड कर सकते हैं तथा परीक्षा प्रवेश–पत्र अपने विद्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

भवदीय,

(हस्ताक्षर...............)

सचिव

निविदा

1. अपने विद्यालय के लिए खेलकूद सामग्री क्रय करने हेतु निविदा तैयार कीजिए।

निविदा–सूचना

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर

क्रमांक–लेखा / नि.सू. / 2023–2024 दिनांक 15 नवम्बर, 2024

निविदा संख्या 11 / 2024

अधोहस्ताक्षरकर्ता द्वारा निम्न विवरणानुसार खेल सामग्री की आपूर्ति हेतु प्रतिष्ठित निर्माताओं / प्रतिष्ठानों से निविदाएँ आमन्त्रित की जाती हैं, जो निर्धारित तिथि को दोपहर दो बजे तक प्राप्त हो जायेगी और उसी दिन तीन बजे इच्छुक निविदाकारों के समक्ष खोली जायेगी। निविदा–प्रपत्र निविदा खोलने की निर्धारित तिथि के 12 बजे तक निविदा शुल्क तथा धरोहर राशि का रेखांकित बैंक ड्राफ्ट प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर के कार्यालय में जमा कराकर प्राप्त किया जा सकता है। निविदा–विवरण इस प्रकार हैं–

विरवरण	अनुमानित राशि	धरोहर राशि	निविदा खोलने की तिथि	निविदा प्रपत्र–शुल्क
खेल–कूद सामग्री	पचास हजार रुपया लगभग	2500/-	20-11-24	50/-

नोट–आपूर्ति के लिए सामग्री का पूरा विवरण निविदा प्रपत्र के साथ उपलब्ध रहेगा।

(हस्ताक्षर)

प्रधानाचार्य

शेखावाटी मिशन–100

कार्यालय–पत्र

2. बिरोल ग्राम पंचायत के सचिव की ओर से अपने जिला कलेक्टर को गाँव में फैली मौसमी बीमारियाँ, यथा–मलेरिया, डेंगू एवं चिकनगुनिया के उपचारार्थ चिकित्सकों की टीम भेजने हेतु कार्यालयी–पत्र लिखिए।

उत्तर–पत्रांक–ग्रा. पं. 5/208/2024 दिनांक 12 जून, 2024

प्रेषक– सचिव,

ग्राम पंचायत,

बिरोल

सेवा में,

श्रीमान् जिला कलेक्टर महोदय,

जिला क ख ग,

राजस्थान।

विषय– मौसमी बीमारियों के उपचारार्थ चिकित्सकों की नियुक्ति के क्रम में।

महोदय,

प्रतिवर्ष की भाँति गर्मी का मौसम आते ही गाँव में मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया आदि मौसमी बीमारियों का प्रकोप बढ़ने लगा है। इस वर्ष यह स्थिति कुछ अधिक ही दिखाई दे रही है। गाँव पंचायत क्षेत्र में एक डिस्पेंसरी है, परन्तु उसमें आवश्यक दवाइयों की नितान्त कमी है और चिकित्सक भी नियुक्त नहीं है। इसलिए मौसमी बीमारियों के प्रकोप को दूर करने तथा रोगियों के उपचार करने के लिए चिकित्सकों की एक टीम गाँव में भेजने की व्यवस्था जरूरी है।

अतः इस सम्बन्ध में चिकित्सकों की टीम की उचित व्यवस्था कर गाँव की जनता के हितार्थ आदेश प्रसारित करें।

भवदीय,

(हस्ताक्षर...............)

सचिव

ग्राम पंचायत– बिरोल

अधिसूचना

1. स्वायत्त शासन विभाग, शासन सचिवालय की ओर से समस्त सरकारी विभागाध्यक्षों को स्वच्छता अभियान चलाने हेतु एक अधिसूचना का प्रारूप लिखिए।

उत्तर– **अधिसूचना**

राजस्थान सरकार,

स्वायत्त शासन विभाग,

शेखावाटी मिशन–100

शासन सचिवालय, जयपुर।

क्रमांक–196 दिनांक 11 सितम्बर, 2024

महामहिम राज्यपाल की अनुशंसा के आधार पर राज्य सरकार आदेश क्रमांक 33/12/ (द)/ स्वच्छता 56, दिनांक 2/10/2024 की अनुपालना में गांधी जयन्ती पर प्रदेश के समस्त नगर निगमों, नगर परिषदों व नगरपालिकाओं द्वारा सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत स्वच्छ नगर–स्वच्छ आवास अभियान चलाया जाएगा। अभियान में जन–सहभागिता महत्त्वपूर्ण रहेगी।

हस्ताक्षर...............

क, ख, ग

उपशासन सचिव

निम्नलिखित विषयों पर सारगर्भित निबंध लिखिए।

पर्यावरण प्रदूषण

रूपरेखा–

(1) प्रस्तावना। (2) पर्यावरण शब्द का अर्थ । (3) पर्यातरण प्रदूषण का कारण। (4) पर्यावरण प्रदूषण का प्रसार (5) पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार (6) पर्यावरण संतुलन के उपाय। (7) उपसंहार।

(i) **प्रस्तावना–**

वर्तमान संसार है, विचि–नवीन,
प्रकृति पर सर्वत्र है विजय पुरुष आसीना।
है बंध नर केकरों में वारि, विद्युत, भाप,
हुक्म पर चढ़ता–उतरता है पतन का ताप।

हमारे चारों और जो भौतिक, जैविक और सांस्कृतिक वातावरण है, वही पर्यावरण है। नीवन की शुरुआत से लेकर अंत तक हमारा पर्यावरण के साथ निरन्तर सम्पर्क, संघर्ष और सामंजस्व रहता है। एक व्यक्ति ही दूसरे व्यक्ति के लिए पर्यावरण है अतः पर्यावरण को हमें व्यक्तिगत एवं सामजिक अस्तित्व की दृष्टि से देखना चाहिए। वस्तुतः पर्यावरण के साथ ही सही सामंज में हो व्यक्ति और समाज का विकास निहित है। अपने से अलग हटकर अन्य से, दुनिया से जोड़ने का उपक्रम ही पर्यावरण है। विकास के नाम पर मनुष्य ने प्रकृति का जिस रूप में दोहन किया है, उस व्यक्ति का पर्यावरण के साथ संतुलन बिगड़ गया है और निरन्तर रूप से बिगड़ता जा रहा है। इसलिए पर्यावरण प्रदूषण आज सभी व्यक्तियों और देशों की जनता के लिए चिन्ता का विषय बन गया है।

पर्यावरण पर लिखना, मुझको एक निबंध।
साँसें एक दिन बिकेगी कर लो सभी प्रबन्ध।

(ii) **पर्यावरण शब्द का अर्थ–**

पर्यावरण शब्द की रचना परि / आवरण' दो शब्दों के मेल से हुआ है, जिसका अर्थ है किसी हमारे चारों ओर विद्यमान

शेखावाटी मिशन–100

है, वही पर्यावरण है।

(iii) **पर्यावरण प्रदूषण का कारण –**

दूषित पर्यावरण से, रोग हजारों होय।
तन, मन, धन सब मिटत है, चैन–खुशी राब खोया।

प्रकृत्ति ने हमारे चारों और एक स्वस्थ और सुखद आवरण का निर्माण किया था परन्तु मनुष्य ने भौतिक सुखीं की होड़ में उसे दूषित कर दिया। निरन्तर बढ़ते हुए कल–कारखानो, वाहनी द्वारा छोड़ा जाने वाला धुआँ, नदियों– तालाबों में गिरता हुआ कुड़ा–करकट, वनों की कटाई, रासायनिक खादों का प्रकोप, मिट्टी का कटाव एवं निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या पर्यावरण प्रदूषण के प्रमुख कारण हैं।

(iv) पर्यावरण प्रदूषण का प्रसार –

मनुष्य के प्रारंभिक विकास में मनुष्य और प्रकृति का निकट सम्बन्ध था। प्रकृति पर मनुष्य का दबाव भी कम था। मनुष्य ने अपने भौतिक सुखों के लिए प्रकृति का दोहन किया तो पर्यावरण प्रदूषण को समस्या उत्पन्न हुई। औद्योगिक क्रान्ति, उद्योगों की चिमनियों से निकलता हुआ धुओं, रासायनिक कारखानों में बहता हुआ विषैला पदार्थ, प्रकृति में कार्बन कण, कार्बन डाई–ऑक्साइड, कार्बन–डाइ सल्फाइड आदि विषाक्त गैसें बढ़ने से जलवायु दुषित होने लगे जिससे पर्यावरण दूषित हो गया।

(v) पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार –

(1) **जल प्रदूषण–**

बादल से पूछो जरा, पानी की औकात।
बूंद–बूंद पर लिखी है, पर्यावरणी बात।

बढ़ते हुए कल–कारखानों से निकला अपशिष्ट पदार्थ, जलयानों द्वारा मेल का रिसाव कूड़ा–करकट आदि नदियों, तालाबों से मिल जान से जल दूषित हो जाता है। जिसमे दुषित जल के उपयोग में लेने से पचिश, खुजली, पोलिया, हैजा आदि रोग लग जाते हैं। प्रथ्वी की तीन चौथाई भाग पानी से ढ़का है किन्तु उसमें केवल 3 प्रतिशत जल पीने योग्य है। कुछ पूर्व सुरत एवं दिल्ली से फैले प्लग में हुए व्यापक मानव मृत्यु ने जल प्रदूषण की समस्या का विकराल रूप हमारे सामने रखा था

(2) वायु प्रदूषण–

उद्योगों का कूड़ा–करकट, कार्बन मोटर आदि वाहनों द्वारा छोड़े जाने वाली जहरीली गैसों, रेडियोधर्मी पदार्थ आदि वायु प्रदूषण के प्रमुख कारण है। जीव–जन्तुओं के अलावा पेड़–पौधे और भवन तक वायु प्रदूषण द्वारा प्रभावित हो रहे हैं। उदाहरण–आगरा के ताजमहल को वायु प्रदूषण से बचाने को दृष्टि से उद्योगों को लगाने के लिए अनेक प्रकार के प्रतिबन्ध लगाने पड़े है।

(3) ध्वनि प्रदूषण–

मशीनों की आवाज तथा लाऊड स्पीकर आदि के कारण ध्वनि प्रदूषण की समस्या भयंकर होती जा रही है। ध्वनि प्रदूषण के कारण मानव के अनेक मानस्कि और मनोवैज्ञानिक विकारों का सामना करना पड़ता है। शादी, उत्तत्वों, त्योहारों आदि अवसरों पर होने वाला ध्वनि प्रदूषण अनेक व्यक्तियों की नींद हराम करता है।

शेखावाटी मिशन–100

(vi) पर्यावरण संतुलन के उपाय–

संयुक्त राष्ट्र संघ और विश्व स्वास्थ्य संगठन प्रर्यावरण संतुलन के अनेक उपाय कर रहे हैं। हमारे देश में सरकार ऐसे उपाय कर रही है। इसके लिए नाले के गन्दै पानी को यंत्रों द्वारा साफ किया जा रहा है, वनों की कटाई रोको जा रही है नये वृक्ष लगाये जा रहे हैं। पर्यावरण संतुलन के लिए जनजागरण किया जा रहा है। इस तरह अनेक उपाय किए जा रहे हैं ताकि पर्यावरण को प्रदूषण से बचाया जा सके।

प्राण वायु देकर हमें वृक्ष बचाये जान
पर्यावरण सुधारते, जैव विविधता मान।

(vii) उपसंहार–

पर्यावरण प्रदूषण एक विकराल समस्या है। यह मानव सभ्यता के सामने एक चुनौती है। पर्यावरण संतुलन बनाये रखने के लिये सरकार अनेक उपाय कर रही है। परन्तु जब तक जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण नहीं हो सकता, तब तक इस समस्या का निवारण सम्भव नहीं है। पर्यावरण पर संतुभन रहने से ही धरती पर खुशहाल जीवन का विकास हो सकता है। भारतीय आर्य ग्रंथों ने आज से हजारों वर्ष पूर्व कहा था "प्रकृति हमारी माता है जो अपना सब कुछ अपने बच्चों को अर्पण कर देती है।" अतः आवश्यकता है कि हम हमारी प्रकृति माँ का सुरक्षित रखने के लिए कुछ इस प्रकार का काम करें कि वह भी स्वच्छ रहे और हम भी स्वस्थ, स्वच्छन्द रहे।

"वृक्ष लगाओ पयर्यावरण बचाओ"

जल, वायु, पर्यावरण, वृक्ष, जीव, इंसान
पर्यावरण बचाइए। तभी बचेगी जाना।

शेखावाटी मिशन–100

राष्ट्र के प्रति हमारा नैतिक दायित्व

अथवा

राष्ट्र के प्रति हमारा दायित्व

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. वर्तमान राष्ट्रीय स्वरूप 3. राष्ट्र के प्रति हमारा नैतिक दायित्व 4. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–प्रत्येक समाज और राष्ट्र का भविष्य उसके सुनागरिकों पर निर्भर रहता है। राष्ट्रीय उत्थान के लिए केवल भौतिक समृद्धि ही पर्याप्त नहीं रहती है, इसके लिए तो वैचारिक, शैक्षिक, बौद्धिक एवं नैतिक चिन्तन की परिपक्वता भी उतनी ही आवश्यक है। वर्तमान काल में लोकतन्त्रात्मक शासन–व्यवस्था के अन्तर्गत अधिकारों की रक्षा और राजनीतिक सत्ता को प्राप्त करने की बात हर कोई करता है, परन्तु कर्त्तव्य–बोध और नैतिक दायित्व की भावना लोगों में वैसी नहीं दिखाई देती है। हमारे सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन में नैतिकता की कमी आ गई है। इस कारण हम राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों को भूलते जा रहे हैं।

2. वर्तमान राष्ट्रीय स्वरूप – स्वतन्त्रता प्राप्ति के अनन्तर देश के कर्णधारों ने संविधान का निर्माण कर संघीय शासन–व्यवस्था का प्रवर्तन किया और इसे धर्मनिरपेक्ष लोकतन्त्र का स्वरूप दिया। आज विश्व में भारतीय लोकतन्त्र को सबसे बड़ा माना जाता है और इसमें सामाजिक विकास की प्रक्रिया भी निरन्तर चल रही है। परन्तु आज सारे देश में नवयवकों में बेरोजगारी महँगाई तथा भाटाचार के कागदाता अनुशासनहीनता और तोडफोड की प्रति सबसे बड़ा माना

जाता है और इसमें सामाजिक विकास की प्रक्रिया भी निरन्तर चल रही है। परन्तु आज सारे देश में नवयुवकों में बेरोजगारी, महँगाई तथा भ्रष्टाचार के कारण उद्दण्डता, अनुशासनहीनता और तोड़–फोड़ की प्रवृत्ति बढ़ रही है। सरकारी कर्मचारियों में भ्रष्टाचार एवं अनुत्तरदायित्व की भावना फैल रही है। राजनीति में भाई–भतीजावाद, स्वार्थ–लोलुपता, चरित्रहीनता और छल–कपट अत्यधिक बढ़ रहा है। इससे हमारा राष्ट्रीय चरित्र दूषित हो रहा है।

3. राष्ट्र के प्रति हमारा नैतिक दायित्व – अपने राष्ट्र के नागरिक होने से हमें जहाँ संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकार प्राप्त हैं, वहाँ हमारे कुछ कर्त्तव्य भी हैं। इसलिए हमें अपने नैतिक दायित्व का निर्वाह करने में पूर्णतया सावधान रहना चाहिए। हमें ऐसा कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए, जिससे संविधान का उल्लंघन हो, राष्ट्रीय विकास और सामाजिक सद्भाव अवरुद्ध हो। हमें अपने परिवार, अपने गाँव या नगर तथा प्रदेश आदि के साथ सम्पूर्ण राष्ट्र का हित–चिन्तन करना चाहिए। राष्ट्र की सुरक्षा, चहुँमुखी प्रगति, जन–कल्याण, सामाजिक उन्नति और सुव्यवस्था के प्रति हमें अपने दायित्वों का निर्वाह करना चाहिए। अपने राष्ट्र में सच्चरित्र का निर्माण करना हमारा प्रथम दायित्व है, क्योंकि सच्चरित्र से ही समाज को मंगलमय बनाया जा सकता है। अतः हमारा राष्ट्र के प्रति यह नैतिक दायित्व है कि हम त्याग–भावना, सच्चरित्रता, देश–भक्ति, समाज–सेवा आदि श्रेष्ठ गुणों को अपनाकर पूरे समाज को भी इसी तरह निष्ठावान् बनावें ।

4. उपसंहार–राष्ट्र–निर्माण का कार्य जन–जागृति एवं कर्त्तव्य–बोध से ही सम्पन्न हो सकता है। उक्त सभी बातों का चिन्तन करते हुए दायित्व का निर्वाह करते रहें, तभी हम राष्ट्रीय कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। इसलिए हमारा यह नैतिक दायित्व है कि इस सुनागरिक बनें अपनी चारित्रिक एवं नैतिक उन्नति का प्रयास करें।

शेखावाटी मिशन–100

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के लिए इन्टरनेट की आवश्यकता

संकेत बिन्दु– 1. प्रस्तावना 2. इण्टरनेट 3. इण्टरनेट की रचना एवं कार्यविधि5. उपसंहार

1. प्रस्तावना– वर्तमान वैज्ञानिक युग में कम्प्यूटर के आविष्कार के साथ टेलीफोन, मोबाइल, टेलीविजन, टेलेक्स, ई–मेल, ई–कॉमर्स, फैक्स, इन्टरनेट आदि संचार–साधनों का विस्तार हुआ है। जन–संचार–साधनों का असीमित विस्तार होने से जहाँ सूचना प्रौद्योगिकी का प्रसार हुआ है, वहाँ संचार–सुविधाओं में आश्चर्यजनक क्रान्ति आने से सूचना आदान– प्रदान अत्यन्त सहज हो गया है।

2. इण्टरनेट– संचार नेटवर्क कुछ कम्प्यूटरों का समूह होता है, जिन्हें आपस में सूचनाओं तथा संसाधनों के सुगम आदान–प्रदान के लिए जोड़ा जाता है। इसी प्रकार से पूरे विश्व में फैले हुए अलग–अलग नेटवर्को को आपस में जोड़ दिया जाता है जिसे हम 'इण्टरनेट' के नाम से जानते हैं। अतरू इण्टरनेट कई नेटवर्कों का एक नेटवर्क या अन्तरजाल है। अतः इण्टरनेट संसार में व्याप्त सूचना–भण्डारों को आपस में सम्बद्ध किए जाने तथा उन्हें किसी भी स्थान पर उपलब्ध कराये जाने का आधुनिक वैज्ञानिक संचार माध्यम है।

3. इण्टरनेट की रचना एवं कार्यविधि– हालांकि इण्टरनेट विश्वभर में फैला एक नेटवर्क है, फिर भी कई कारणों से यह एक छोटे शहर की अनुभूति देता है। इसमें भी वही सेवाएँ होती हैं जो किसी शहर में मिलती हैं। यदि आपको अपनी 'मेल' प्रेषित या प्राप्त करनी है तो इस कार्य को करने के लिए इण्टरनेट में श्इलेक्ट्रोनिक पोस्ट–ऑफिसश होते हैं। इसमें 'ऑनलाइन लाइब्रेरी' मिल जाती है जिसमें हजारों–लाखों पुस्तकों को सुविधानुसार पढ़ा जा सकता है। इण्टरनेट में शामिल

होने के लिए अपनी वेबसाइट स्थापित करनी पड़ती है। फिर रुचि के अनुसार सम्बन्धित वेबसाइट से सम्बन्ध स्थापित करके जानकारी प्राप्त होती है।

4. उपयोग एवं दुरुपयोग– 'इण्टरनेट' आज की संचार–सेवाओं में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इंटरनेट सार्थक समाज में शिक्षा, संगठन और भागीदारी की दिशा में एक बहुत ही सकारात्मक कदम है। घर बैठे बटन दबाते ही वांछित सूचनाओं का आदान–प्रदान बड़ी सरलता से किया जा सकता है। इसके द्वारा उन सभी विषयों की जानकारी प्राप्त की जा सकती है जिन्हें व्यक्ति के द्वारा केवल सोचा जा सकता है। अध्यापक, विद्यार्थी, डॉक्टर, व्यापारी तथा अन्य शिक्षित समुदाय अपने विचारों एवं समस्याओं के हल हेतु आदान–प्रदान तेजी से लम्बी दूरियों के बीच कर सकता है। अतः इण्टरनेट हमारे लिए आज की व्यस्तता भरी जिन्दगी के लिए अति उपयोगी है, परन्तु कुछ शरारती तत्त्व इस नेटवर्क में वायरस प्रवेश कराने का प्रयास कर महत्त्वपूर्ण सूचनाओं का दुरुपयोग करने में नहीं चूकते हैं। इण्टरनेट ने अपराध जगत् में 'साइबर' अपराधी की एक नयी फौज खड़ी कर दी है। अब इस अपराध को रोकने के लिए कानून बनाया गया है।

5. उपसंहार– विज्ञान के इस युग में इंटरनेट यदि ज्ञान का सागर है, तो इसमें 'कूड़े–कचरे' की भी कमी नहीं। यदि इसका इस्तेमाल करना आ जाए, तो इस सागर से ज्ञान व प्रगति के मोती हासिल होंगे और यदि गलत इस्तेमाल किया जाए, तो कूड़े–कचरे के अतिरिक्त कुछ भी नहीं मिलेगा। सार यह है कि इण्टरनेट हमारे लिए उपयोगी है और सभी इसका सदुपयोग कर लाभान्वित होवें।

"सोशल मीडिया का समाज पर प्रभाव "

प्रस्तावनाः–

हम वैश्विक इतिहास की ओर नजर डाले तो हमें ज्ञात होगा कि विश्व अनेक प्रकार क्रांति हुई है। इन क्रांतियों ने समाज देश और विश्व को परम्पराओं से हटकर परिवर्तन के नये मार्गों और विचारों की ओर अग्रसर किया। जैसे हरित क्रांति संचार क्रांति और इसी क्रम में सोशल मीडिया क्रांति उद्‌भव जिसने विश्व को हिलाकर कर रख दिया है। सोशल मीडिया आज प्रत्येक व्यक्ति के लिए नशा बन गया है। व्यक्ति सोशल के बिना वर्तमान में नहीं रह सकता है। इसने प्रत्येक व्यक्ति के विचार बुद्धि और सामाजिक जीवन, गहराई से परिवर्तन किया है। आवश्यकता आविष्कार की जननी है। सोशल मीडिया के आविष्कार ने भौतिक दूरियों को कम करके दुनिया को मुट्ठी में कर लिया है। प्रत्येक आविष्कार के साथ वरदान और अभिशाप का भी चोली–दामन का का साथ रहा है। जो वर्तमान में देश दुनियाँ में देखा जा सका है।

सोशल मीडिया एक नजर मेंः–

अमेरिका के मशहूर कारोबारी एण्ड्रेयू विनरीच सोशल मीडिया प्लेट फॉर्म को 1997 में दुनियाँ में लेकर आये। इस प्लेटफॉर्म का नाम था six degress (शिक्स डिग्रेस)। उस समय लोग इसके इस बारे में बहुत जानते थे। बहुत से बुद्धिजीवी लोगों ने कहा की इसकी कोई आवश्कता नहीं लेकिन Adnrew veinrrich (एण्ड्रेयू विनरीच) बहुत दूरदर्शी थे।/ 2001 तक Six Degress के विश्व भर में 10 लाख यूजर्स (उपभोक्ता) हो चुके थे/ बाद में ये प्लेटाफॉर्म बन्द हो गया लेकिन इसने दुनिया में मोबाईल फोन, इन्टरनेट का नया अध्याय प्रारम्भ करवाया।

21वीं सदी के साथ दुनिया में सोशल मीडिया क्रांति का प्रवेश हुआ जो आज देश और दुनियाँ में नयी ऊंचाईयाँ छू रहा है। आज सोशल मिडिया ने विश्व को बौधिक आर्थिक और सामाजिक रूप से बदल कर रख दिया है। हमारे पूर्वज जो

कल्पना की बात मानते थे इसको इस सोशल मीडिया ने हमारे सामने लाकर रख दिया है।

आज बड़ी–बड़ी कम्पनियाँ लाखों करोड़ो रूपये कमा रही है इस सोशल मीडिया के कारण/सोशल मीडिया ने न केवल दुनिया को बदला बल्कि उनके विचारों में भी परिवर्तन ला दिया।

भारत में सोशल मीडियाः–

आकड़ों के अनुसार वर्तमान में भारत में तकरीबन 447 मिलियन सोशल मीडिया यूजर्स हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार प्रत्येक भारतीय 24 घण्टों में से 2.4 धारा सोशल मीडिया का उपयोग कर्ता है। सोशल मीडिया ने समाज को बहुत गहराई तक प्रभावित किया है। इसके प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार से देखे जा सकते हैं। सोशल मीडिया के कारण आर्थिक स्तर पर प्रत्येक व्यक्ति के लिए नये द्वार भी खुले हैं। वैचारिक और बौधिक रूप से देश और समाज विकसित और समृद्ध भी हुआ है लेकिन इसके दुरुपयोग को लेकर अपनी आलोचनाओं के लिए भी चर्चा में रहता है।

सोशल मीडिया का समाज पर सकारात्मक प्रभावः–

हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। वरदान और अभिशाप जीवन सुख और दुःख की तरह होते हैं। उसी प्रकार सोशल मीडिया ने समाज को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में प्रभावित किया है लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं है कि सोशल मीडिया आज समाज की आवश्कता बन गया है।

सोशल मीडिया देश और दुनियाँ से जुड़ने का श्रेष्ठ माध्यम बन चुका है। इसने समाज के अंतिम् छोर के व्यक्ति को मुख्य धरा में ला खड़े करने का महत्वपुर्ण कार्य किया है। सोशल मीडिया ने रोजगार के नये द्वार खोलकर समाज को आर्थिक रूप से मजबूती प्रदान की है। सोशल मीडिया ने शिक्षा के क्षेत्र में नयी क्रांति ला ही है। सोशल मीडिया के कारण शिक्षा समाज के प्रत्येक व्यक्ति के दरवाजे को खटखटाने में सफल रही है। कोरोना जैसी महामारी में तो सोशल मीडिया शिक्षा के लिए रामबाण सिद्ध हुआ। अतः हम कह सकते हैं कि सोशल मीडिया आज की आवश्कता बन चुकी है। इसने समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालकर समाज को विकशीत और समृद्ध किया है।

सोशल मीडिया का समाज पर नकारात्मक प्रभावः–

सोशल मीडिया समाज की आवश्यकता जरूर बन गया है लेकिन साथ–साथ चिंताजनक भी बन गया है। अति सर्वत्र वर्जयते अधति अधिकता सभी जगह वर्जित है। सोशल मीडिया की अधिकता निश्चित रूप से चिंता का विषय है। सोशल मीडिया का आवश्यकता से अधिक उपयोग हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। इसका सबसे नकारात्मक पहलू है विश्वसनियता का अभाव, यह झूठ को बढ़ावा देता है। सोशल मीडिया के कारण सामाजिक रीति–रिवाजों पर कुप्रभाव पड़ा है। छोटे बच्चों के हाथों में फोन चिंता का विषय है। नये शोध बता रहे हैं सोशल मीडिया के कारण युवाओं जीवन पुस्तके दूर होती जा रही हैं। सोशल मीडिया के कारण धोखादड़ी और भ्रष्टाचार बढ़ावा मिला है। गत के वर्षों में परीक्षाओं में कालाबाजारी सोशल मीडिया के कारण बहुत बढ़ी है। इसके कारण राष्ट्रीय स्तर पर गोपनियता रखना चिंता का विषय है। आजकल युवाओं के विचार और चरित्र में ह्रास में सोशल मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है। निश्चित रूप से सोशल मीडिया वरदान के साथ समाज के लिए अभिशाप बना है लेकिन कानून की कड़ी नजर और जागरूकता इन नक्कारात्मक प्रभावों से समाज को बचाया जा सकता है।

शेखावाटी मिशन–100

निष्कर्ष / उपसंहारः–

अकाल के डर से किसान खेती से दूर नहीं हो सकते असफलता के डर से प्रयास न करना समझदारी नहीं हो सकती। निश्चित रूप से सोशल मीडिया देश–दुनियाँ और समाज की प्राथमिक आवश्कता बन गयी है। इसके इतर हम विश्व की प्रतिस्पर्धा में खड़े नहीं रह सकते। सोशल मीडिया विश्व में वरदान साबित हुआ है। देश–दुनिया समृद्ध और विकसित किया है लेकिन, चिंता की नयी लकीरे भी स्पष्ट देखी जा सकती है। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि नकारात्मक पहलूओं से दूर रहते हुए जीवन में सकारात्मकता के साथ आगे बढ़ना ही जीवन है।

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2024

नमूना प्रश्न पत्र–1

विषय – हिन्दी अनिवार्य

समयः 03 घन्टे 15 मिनट **पूर्णांकः 80**

सामान्य निर्देशः–

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखे
2. सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य है।
3. प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड है उनके उत्तर एक साथ ही लिखे।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड – अ (Section-A)

1. **निम्नलिखित बहुचयनात्मक प्रश्नो के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए** (12)

(i) जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं ? (1)

(अ) कपास (ब) पेड (स) नींद (द) रोना

(ii) कविता एक उड़ान है किसके बहाने ? (1)

(अ) हवा (ब) चिड़िया (स) हवाई जहाज (द) पतंग

(iii) 'छोटा मेरा खेत चौकोना' लेखक ने किसे कहा है ? (1)

(अ) खेत को (ब) किताब को (स) कागज के पन्ने को (द) किसी को भी नहीं

(iv) पहलवान की ढोलक अध्याय के लेखक कौन है ? (1)

(अ) फणीश्वर नाथ रेणु (ब) धर्मवीर भारती (स) प्रेमचन्द (द) महादेवी वर्मा

(v) मनुष्यों की क्षमता किस बात पर निर्भर रहती है ? (1)

(अ) शारीरिक वंश परम्परा (ब) सामाजिक उत्तराधिकार

(स) मनुष्य के अपने प्रयास (द) उपर्युक्त सभी

(vi) शिरीष के फूल को किसके समान बताया गया है ? (1)

शेखावाटी मिशन–100

(अ) केसर (ब) किसान (स) अवधूत (द) अमलतास

(vii) हिन्दी भाषा को शुद्ध रूप से बोलने और लिखने सम्बन्धी नियमों की जानकारी देने वाला शास्त्र कहलाता है –(1)

(अ) व्याकरण शास्त्र (ब) रसायन शास्त्र (स) पाक शास्त्र (द) राजनीति शास्त्र

(viii) Menifesto (मैनीफेस्टो) शब्द का सही अर्थ है – (1)

(अ) घोषणा पत्र (ब) समाचार पत्र (स) निमंत्रण पत्र (द) त्याग पत्र

(ix) आधुनिक संचार माध्यमों में सबसे पुराना है– (1)

(अ) टेलीविजन (ब) रेडियो (स) प्रिंट (द) इन्टरनेट

(x) किसी खबर का घटना स्थल से सीधा प्रसारण क्या कहलाता है – (1)

(अ) लाइव (ब) फोन–इन (स) बाइट (द) नेट

(xi) मंत्री नामक अध्यापक कक्षा में प्रायः किसका उपयोग नहीं करते थे ? (1)

(अ) चॉक (ब) डस्टर (स) घड़ी (द) छड़ी

(xii) मुअनजो–दडो किस काल के शहरों में सबसे बड़ा है ? (1)

(अ) पाषाण काल (ब) ताम्र काल (स) लौह काल (द) पुरा पाषण काल

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिएः–

(i) एक सीमित क्षेत्र में बोले जाने वाले भाषा के स्थानीय रूप को .... कहते हैं। (1)

(ii) 'निविदा' के लिये सही अंग्रेजी शब्द .... है। (1)

(iii) 'सैनिको ने कमर कस ली' वाक्य में ....शब्द शक्ति है। (1)

(iv) जब किसी शब्द का अर्थ न तो अभिधा से प्रकट होता है न ही लक्षणा से वहां ....शब्द शक्ति होती है। (1)

(v) 'चारू चंद्र की चंचल किरणे खेल रही थीं जल–थल में' पंक्ति में .... अलंकार है। (1)

(vi) जब कोई बात बहुत बढ़ाचढ़ाकर अथवा लोक सीमा का उल्लंघन करके कही जाये वहां ......अलंकार होता है। (1)

शेखावाटी मिशन–100

4. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नो के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिये। (6)

मिला खोजती थी जिसको हे बचपन ठगा दिया तूने।
अरे जवानी के फंदे में मुझको फंसा दिया तूने।
माना, मैने, युवाकाल का जीवन खूब निराला है।
आकांक्षा, पुरूषार्थ, ज्ञान का उदय मोहने वाला है।
किन्तु यह झंझट है भारी, युद्ध क्षेत्र संसार बना।
चिन्ता के चक्कर में पढ़कर, जीवन भी है भार बना।
आजा बचपन एक बार फिर दे दे अपनी निर्मल शांति।
व्याकुल व्यथा मिटाने वाली यह अपनी प्राकृत विश्रांति।

(i) कवि को किसने ठगा है ? (1)

(ii) कवि के लिए संसार कैसा बन गया है ? (1)

(iii) युवाकाल की कौनसी विशेषता लेखक को मोहित करती है ? (1)

(iv) 'अरे जवानी के फंदे में मुझको फंसा दिया तूने' लेखक को जवानी फन्दे के समान क्यों लगती है ? (1)

(v) कवि बचपन को पुनः क्यों बुलाना चाहता है ? (1)

(vi) बचपन से किस विश्रांति की मांग लेखक कर रहा है ? (1)

खण्ड – ब (Section-B)

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिये।

5. टी. वी. समाचार में नेट साउण्ड या प्राकृतिक आवाज किसे कहते हैं ? (2)

6. कैमरे में बंद अपाहिज कविता का मूल भाव लिखिए। (2)

7. भक्तिन के किन दुर्गुणों के बारे में लेखिका ने अध्याय में बताया है? (2)

8. यशोधर बाबू के लिये भूषण ऊनी ड्रेसिंग गाउन क्यों लाया था ? (2)

9. कवि भी अपने जैसा हाड़ माँस का मनुष्य हो सकता है। आनंदा को इसका भान कैसे हुआ ? (2)

खण्ड – स (Section-C)

प्रश्न संख्या 10 से 13 के उत्तर 60 से 80 शब्दों में लिखिये तथा 14 एवं 15 के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए ।

10. 'क्रांति हमेशा वंचितों का प्रतिनिधित्व करती है।' 'बादल–राग' कविता के आधार पर बताइए। (3)

अथवा

"उषा कविता में कवि ने प्रकृति की गति को शब्दों में बाँधने का अदभुत प्रयास किया है।" कथन के समर्थन में सोदाहरण तर्क दीजिए।

11. "यह भी सच है कि यथा प्रजा तथा राजा" जीजी का यह कथन वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों में कितना सटीक है। इस पर अपने विचार लिखिए। (3)

अथवा

श्रम विभाजन के दृष्टिकोण से अपनाई गई जाति प्रथा पर अपने विचार लिखिए।

12. "नगर नियोजन मुअन जोदड़ो की अनूठी मिसाल है।" वर्तमान समय के नगरीकरण से संबंध स्थापित कीजिए। (3)

अथवा

"दादा की समझ में गुड़ ज्यादा निकालने की अपेक्षा भाव अधिक मिलना चाहिये।" जूझ अध्याय का यह कथन वर्तमान समाज की प्रतिस्पर्द्धा तथा धन लोलुपता की प्रवृत्ति की ओर इंगित करता है कथन के सन्दर्भ में अपने विचार लिखिए।

13. "जिन लोगों के बाल–बच्चे नहीं होते उनकी मौत जो हुआ होगा से हो जाती है।" इस कथन से आप कहाँ तक सहमत है ? (3)

अथवा

सिंधु सभ्यता साधन सम्पन्न थी, उसमें भव्यता का आडम्बर नहीं था कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ?

शेखावाटी मिशन–100

14. फीचर लिखते समय किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ? (3)

अथवा

सार्थक आलेख के क्या गुण है ?

15. तुलसीदास अथवा हजारी प्रसाद द्विवेदी का परिचय दीजिए। (4)

खण्ड – द (Section-D)

16. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिएः– (6)

कर यत्न मिटे सब, सत्य किसी ने जाना ?
नादान वही! है, हाय जहाँ पर दाना।।
फिर मूढ़ न क्या जग, जो इस पर भी सीखे ?
मैं सीख रहा हूँ, सीखा ज्ञान भुलाना।।
मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
मैं बना–बना कितने जग रोज मिटाताः
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता

अथवा

दीवाली की शाम घर पुते और सजे
चीनी के खिलौने जगमगाते लावे
वो रूपवती मुखड़े पै इक नर्म दमक
बच्चे के घरौंदे में जलाती है दिए
आँगन में ठुमक रहा है जिदयाया है
बालक तो हई, चाँद पै ललचाया है
दर्पण उसे दे के कह रही है माँ
देख आईने में चाँद उतर आया है

@SHEKHAWAT IMISSION100
शेखावाटी मिशन 100 की कक्षा 10 एवं 12 के विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें
शेखावाटी मि

17. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिएः– (6)

रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकार कर चुनौती देती रहती थी। पहलवान संध्या से सुबह तक चाहे जिस खयाल से ढोलक बजाता हो, किन्तु गाँव के अर्द्धमृत, औषधि उपचार–पथ्य–विहीन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी। बूढ़े बच्चे, जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था।

अथवा

मेरे भ्रमण की भी एकांत साथिन भक्तिन ही रही है। बदरी–केदार के ऊँचे–नीचे और तंग पहाड़ी रास्ते में जैसे वह हठ करके मेरे आगे चलती रही है, वैसे ही गाँव की धूल भरी पगडण्डी पर मेरे पीछे रहना नहीं भूलती। किसी भी समय कहीं

भी जाने के लिये प्रस्तुत होते ही मैं भक्तिन को छाया के समान साथ पाती हूँ।

18. अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान जयपुर में विभिन्न पदों पर आवेदन करने हेतु समाचार पत्र में प्रकाशित करने के लिये एक विज्ञप्ति लिखिए। (4)

अथवा

विद्यालय की विज्ञान प्रयोगशाला में सामग्री क्रय करने हेतु निविदा लिखिए।

19. निम्नलिखित विषयों में किसी एक विषय पर सारगर्भित निबन्ध लिखिए। शब्द सीमा (300 शब्द)

(i) आतंकवाद– एक वैश्विक समस्या (ii) नारी शिक्षा आज की आवश्यकता

(iii) भारत की ऋतुएं (iv) पर्वतीय स्थल की मेरी यात्रा

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2024

मॉडल प्रश्न पत्र– 2

विषय – अनिवार्य हिन्दी

समयः 03 घन्टे 15 मिनट पूर्णांकः 80

परीक्षार्थियों के लिये सामान्य निर्देशः–

1. सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर पुस्तिका में लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं। उनके उत्तर एक साथ लिखे ।
5. उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

(खंड–अ)

निम्नलिखित बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए **12**

(i) कवि के फुट पड़ने को कवि ने क्या कहा है ? (1)

(अ) छंद बनाना (ब) बहाने बनाना

(स) अभिनय करना (द) आंशू बहाना

(ii) कैमरे में बंद अपाहिज कविता में दूरदर्शन कर्मियों की मनोवृत्ति को दर्शाया गया है ? (1)

(अ) चंचल (ब) अनुभवी

(स) संवेदनहीनता (द) सहायक

(iii) भाषा के क्या करने से बात और अधिक पेचीदा हो गई? (1)

(अ) तोड़ने–मरोड़ने (ब) उलटने–पलटने

(स) घुमाने–फिराने (द) उपर्युक्त सभी

(iv) लुट्टन किस वर्ष की आयु में अनाथ हो गया ? (1)

(अ) 8 (ब) 9

शेखावाटी मिशन–100

(स) 10 (द) 7

(v) 'देख बिना त्याग के दान नहीं होता' कहते हुए दीदी ने लेखक के मुँह में क्या डाला था? (1)

(अ) लड्डू (ब) मठरी

(स) हलवा (द) चॉकलेट

(vi) किसके अनुसार नए के आने पर पुराने को जाने का अधिकार होता है ? (1)

(अ) कालिदास के अनुसार (ब) तुलसीदास के अनुसार

(स) वात्स्यायन के अनुसार (द) कबीरदास के अनुसार

(vii) मौखिक भाषा की विशेषता है (1)

(अ) स्वाभाविक होती है। (ब) वाक्य छोटे–छोटे होते हैं।

(स) परिवर्तनशील होती है। (द) उपर्युक्त सभी।

(viii) COUNCIL के लिए सही हिन्दी पारिभाषिक शब्द है– (1)

(अ) उपनिषद् (ब) संघ

(स) संस्था (द) परिषद

(ix) भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का प्रारंभ कब हुआ ? (1)

(अ) 1987 (ब) 1988

(स) 1983 (द) 1993

(x) वर्तमान छापेखाने का आविष्कार निम्न में से किसने किया– (1)

(अ) गुटेनबर्ग ने (ब) 3 चिनमिन ने

(स) निहाल सिंह ने (द) जॉनसन ने

(xi) दफ्तर के बाबुओं को अपनी सिल्वर वैडिंग के लिए यशोधर बाबू ने कुल कितने रुपये दिए? (1)

(अ) दस (ब) पंद्रह

(स) बीस (द) तीस

(xii) मुअनजो–दड़ो हड़प्पा से प्राप्त हुई नर्तकी की मूर्ति किस राष्ट्रीय संग्रहालय में रखी हुई है? (1)

(अ) इस्लामाबाद संग्रहालय में (ब) लाहौर संग्रहालय में

(स) दिल्ली संग्रहालय में (द) लंदन संग्रहालय में

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए– (6x1=6)

(i) भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान........................ होता है ।

(ii) आकस्मिक व्यय के लिए सही अंग्रेजी शब्द............ है।

(iii) "बैल खड़ा है" इस वाक्य में प्रयुक्त शब्द शक्ति.............है ।

(iv) अभिधा और लक्षणा के असमर्थ हो जाने पर जिस शब्द–शक्ति के माध्यम से शब्द का अर्थ लिया जाता है, वहां............ शब्द शक्ति होती है।

शेखावाटी मिशन–100

(v) जहाँ सामान्यतः एकार्थक शब्द के द्वारा एक से अधिक अर्थों का बोध हो, उसे..................... कहते हैं।

(vi) सुलगी अनुराग की आग वहाँ, जल से भरपूर तड़ाग जहाँ । काव्य पंक्ति में...........अलंकार का प्रयोग हुआ है ।

3. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों की उत्तर दीजिए । (6x1=6)

लोकतंत्र के तीनों पायों–विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका का अपना–अपना महत्त्व है, किंतु जब प्रथम दो अपने मार्ग या उद्देश्य के प्रति शिथिल होती हैं या संविधान के दिशा–निर्देशों की अवहेलना होती है, तो न्यायपालिका का विशेष महत्त्व हो जाता है। न्यायपालिका ही है जो हमें आईना दिखाती है, किंतु आईना तभी उपयोगी होता है, जब उसमें दिखाई देने वाले चेहरे की विद्रूपता को सुधारने का प्रयास हो। सर्वोच्च न्यायालय के अनेक जनहितकारी निर्णयों को कुछ लोगों ने न्यायपालिका की अतिसक्रियता माना, पर जनता को लगा कि न्यायालय सही है। राजनीतिक चश्मे से देखने पर भ्रम की स्थिति हो सकती है। प्रश्न यह है कि जब संविधान की सत्ता सर्वोपरि है, तो उसके अनुपालन में शिथिलता क्यों होती है। राजनीतिक–दलगत स्वार्थ या निजी हित आड़े आ जाता है और यही भ्रष्टाचार को जन्म देता है। हम कसमें खाते हैं जनकल्याण की और कदम उठाते हैं आत्मकल्याण के। ऐसे तत्वों से देश को, समाज को सदा खतरा रहेगा। अतः जब कभी कोई न्यायालय ऐसे फैसले देता है, जो समाज कल्याण के हों और राजनीतिक ठेकेदारों को उनकी औकात बताते हों, तो जनता को उसमें आशा की किरण दिखाई देती है। अन्यथा तो वह अंधकार में जीने को विवश है ही।

(i) लोकतंत्र में न्यायपालिका कब विशेष महत्त्वपूर्ण हो जाती है? क्यों?

(ii) आईना दिखाने का तात्पर्य क्या है? और न्यायपालिका कैसे आईना दिखाती है?

(iii) भ्रष्टाचार का जन्म कब और कैसे होता है?

(iv) जनता को आशा की किरण कहाँ और क्यों दिखाई देती है ?

(v) आशय स्पष्ट कीजिए–'अन्यथा तो वह अंधकार में जीने को विवश है ही।'

(vi) गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

4. निम्नलिखित अपठित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

जैसे धधके आग ग्रीष्म के लाल पलाशों के फूलों में,
वैसी आग जगाओ मन में, वैसी आग जगाओ रे।
जीवन की धरती तो रूखी मटमैली ही होती है,
तन–तरु–मूल सिंचाई, अतल की गहराई में होती है।
किंतु कोपलों जैसे ज्वाला में भी शीश उठाओ रे,
ऐसी आग जगाओ मन में, ऐसी आग जगाओ रे।
एक आग होती है मन को जो कि राह दिखलाती है,
सघन अँधेरे में मशाल बन दिशि का बोध कराती है,
किंतु द्वेष की चिनगारी से मत घर–द्वार जलाओ रे,
ऐसी आग जगाओ मन में, ऐसी आग जगाओ रे।

@SHEKHAWAT IMISSION100
शेखावाटी मिशन 100 की कक्षा 10 एवं 12 के विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें

शेखावाटी मिशन–100

आज ग्रीष्म की ऊष्मा कल को रिमझिम राग सुनाएगी,
तापमयी दोपहरी, संध्या को बयार ले आएगीय
रसघन आँगन में हिलकोरे, ऐसा ताप रचाओ रेय
ऐसी आग जगाओ मन में, ऐसी आग जगाओ रे।

(i) कवि किनसे कैसी ज्वाला जलाने के लिए कह रहा है?

(ii) वृक्षों की कोपलें हमें क्या प्रेरणा देती हैं?

(iii) 'जीवन की धरती तो रूखी मटमैली' में निहित अलंकार का नाम बताइए।

(iv) कवि ने दो प्रकार की आग का उल्लेख किया है। कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए?

(v) आज जलाने से कवि को किस सुखद परिणाम की आशा है ? काव्यांश के आधार पर लिखिए।

(vi) काव्यांश का उचित शीर्षक लिखिए ।

(खंड–ब)

निम्नलिखित लघूतरात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए ।

5. रेडियो पर प्रसारण के लिए तैयार की जाने वाली समाचार कॉपी की विशेषता लिखिए । 2

6. उषा कविता में किन उपमाओं का प्रयोग किया गया है? 2

7. आंबेडकर के 'दासता' शब्द से क्या तात्पर्य है ? 2

8. दफ्तर से घर लौटने में यशोधर बाबू को देर क्यों हो जाती थी? 2

9. बालक आनंद यादव को उसके पिता ने किन शर्तों पर उसे विद्यालय जाने दिया ? 2

(खंड–स)

प्रश्न संख्या 10 से 13 तक के उत्तर 60 से 80 शब्दों में लिखिए तथा 14 से 15 के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए।

10. 'आत्मपरिचय' कविता को द्रष्टि में रखते हुए कवि के कथ्य को अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए। 3

11. बाजार ग्राहकों से क्या कहता है? 'बाजार दर्शन' पाठ के आधार पर लिखिए । 3

12. निम्न पर टिप्पणी कीजिए 3

(i) मुअनजोदड़ो की बड़ी बस्ती के बारे में

(ii) मुअनजोदड़ो के कृषि उत्पादों तथा उद्योग के विषय में

13. किस घटना से पता चलता है कि लेखक की माँ उसके मन की पीड़ा समझ रही थी? 'जूझ' पाठ के आधार पर बताइए। 3

14.' एकल परिवार' विषय पर आलेख लिखिए । 3

15. कवि 'आलोक धन्वा' का जीवन एवम् साहित्यिक परिचय दीजिए। 4

(खंड–द)

16. निम्ननलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– **(4+2=6)**

आँगन में लिए चांद के टुकड़े को खड़ी

शेखावाटी मिशन–100

हाथों पे झुलाती है उसे गोददृ भरी
रह–रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी ।

17. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– **(4+2=6)**

एक दिन माँ की अनुपस्थिति में वर महाशय ने बेटी की कोठरी में घुसकर भीतर से द्वार बन्द कर दिया और इसके समर्थक गाँव वालों को बुलाने लगे। युवती ने जब इस डकैत वर की मरम्मत कर कुंडी खोली, तब पंच बेचारे समस्या में पड़ गए। तीतरबाज युवक कहता था, वह निमन्त्रण पाकर भीतर गया और युवती उसके मुख पर अपनी पाँचों उँगलियों के उभार में इस निमत्रण के अक्षर पढ़ने का अनुरोध करती थी। अन्त में दूध का दूध पानी का पानी करने के लिए पंचायत बैठी और सबने सिर हिला–हिलाकर इस समस्या का मूल कारण कलियुग को स्वीकार किया।

18. जिला निर्वाचन अधिकारी, चूरू द्वारा मतदाता सूची में नाम जोड़ने या हटाने, नामावली सुधार को लेकर अधिसूचना का एक प्रारूप तैयार कीजिए । 4

19. निम्नलिखित विषय पर सारगर्भित निबंध लिखिएः शब्द सीमा (300 शब्द) 5

(i) योगः स्वास्थ्य की कुंजी

(ii) बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

(iii) इंटरनेटः सूचना एवं ज्ञान का भंडार

(iv) समाज में नारी का योगदान

शेखावाटी मिशन–100

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2024

मॉडल प्रश्न पत्र– 3

विषय – अनिवार्य हिन्दी

समयः 03 घन्टे 15 मिनट **पूर्णांकः 80**

खण्ड – अ

1. निम्नलिखित बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए – (12)

(i) भाषा की सबसे छोटी इकाई है – (1)

(अ) वर्ण (ब) शब्द (स) पद (द) वाक्य

(ii) वर्तमान में हिन्दी हमारी कौनसी भाषा है ? (1)

(अ) मातृभाषा (ब) राजभाषा (स) देवभाषा (द) क्षेत्रीय भाषा

(iii) प्रिन्ट माध्यम हेतु भारत में पहला छापाखाना कब और कहाँ खुला – (1)

(अ) 1556 में गोवा में (ब) 1650, मद्रास में (स) 1856 आगरा में (द) 1951, मुम्बई में

(iv) "दिन जल्दी–जल्दी दलता है" का आशय है– (1)

(अ) समय परिवर्तनशील है। (ब) समय बड़ा बलवान है

(स) समयानुसार कार्य करे (द) द उपर्युक्त सभी

(v) बच्चों को खतरनाक किनारों से कौन बचाता है? (1)

(अ) पतंग की डोर (ब) पतंगो की ऊंचाइयाँ
(स) रोमांचित शरीर का संगीत (द) छत का किनारा

(vi) 'कैमरे में बन्द अपाहिज' कविता के कवि है– (1)
(अ) आलोक धन्वा (ब) कुंवर नारायण
(स) रघुवीर सहाय (द) उमाशंकर जोशी

(vii) क्रान्ति हमेशा किसका प्रतिनिधित्व करती है? (1)
(अ) पूँजीपति वर्ग का (ब) शोषक वर्ग का
(ब) राजसी वर्ग का (द) वंचित वर्ग का

(viii) श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति–प्रथा किससे युक्त है? (1)
(अ) श्रेष्ठ गुणों से (ब) स्वार्थों से
(स) गंभीर दोषो से (द) मानव कल्याण से

(ix) बाजार की जादुई ताकत हमें कैसा बना देती है ? (1)
(अ) आजाद (ब) गुलाम
(स) शैतान (द) खुशहाल

(x) यशोधर बाबू किसके आदर्शों पर चलते थे? (1)
(अ) माता–पिता (ब) गांधीजी
(स) कृष्णानन्द पाण्डे (द) मेनन

(xi) सौंदलगेकर मास्टर लेखक को क्या पढ़ाते थे ? (1)
(अ) गणित (ब) हिन्दी
(स) मराठी (द) संस्कृत

2. रिक्त स्थानो की पूर्ति कीजिएः– (6x1=6)

(i) .... मौखिक अभिव्यक्ति का माध्यम है।

(ii) "आशुतोष पुस्तक पड़ रहा है।" वाक्य में .... शब्द शक्ति है।

(iii) 'चारू –चन्द्र की चंचल किरणे' उक्त काव्य–पंक्ति में .... वर्ण की आवृति के कारण .... अलंकार है।

(iv) जहाँ शब्द की आवृति हो किन्तु अर्थ भिन्न हो वहाँ .... अलंकार है।

(v) भाषा का लिखित रूप ही .... कहलाता है।

(vi) Notification शब्द का हिन्दी रूपान्तरण......................... है।

3. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नो के उत्तर दीजिए– (6x1=6)

हम सांस्कृतिक अस्मिता की बात कितनी ही करें, परम्पराओं का अवमूल्यन हुआ है, आस्थाओं का क्षरण हुआ है। कड़वा सच तो यह है कि हम बौद्विक दासता स्वीकार कर रहे हैं, पश्चिम के सांस्कृतिक उपनिवेश बन रहे हैं। हमारी नई संस्कृति अनुकरण की संस्कृति है। हम आधुनिकता के झूठे प्रतिमान अपनाते जा रहे हैं। प्रतिष्ठा की अंधी प्रतिस्पर्धा में जो अपना है उसे खोकर छद्म आधुनिकता की गिरफ़्त में आते जा रहे हैं। संस्कृति की नियंत्रक शक्तियों के क्षीण हो जाने के कारण हम दिग्भ्रमित हो रहे हैं। हमारा समाज ही अन्य – निर्देशित होता जा रहा है।

शेखावाटी मिशन–100

(i) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए ?

(ii) हमारी बौद्धिकता का ह्रास किस कारण से हुआ है ?

(iii) 'दिग्भ्रमित' शब्द का सन्धि विच्छेद लिखिए ।

(iv) आस्थाओं के क्षरण होने की क्या कारण है ?

(v) आधुनिकता से संस्कृति का क्या विनाश हो रहा हैं ?

(vi) परम्पराओ के अवमूल्यन होने का क्या कारण है ?

4. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नो के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए । (6)

साक्षी है इतिहास, हमी पहले जागे है,
जागत सब हो रहे हमारे ही आगे हैं।
शत्रु हमारे कहाँ नहीं भम से भागे है ?
कायरता से कहाँ प्राण बमने त्यागे है ?
है हमि प्रकम्पित कर चुके, सुरपति तक का मी हृदय ।
फिर एक बार हे विश्व ! तुम, गाओ भारत की विजय ।।
कहाँ प्रकाशित नहीं रहा है तेज हमारा,
दालित कर चुके शत्रु सदा हम पैरों द्वारा।
तुम्ही बताओ कौन नहीं जो हमसे हारा
पर शरणागत हुआ कहाँ, कब हमें न मारा ?
बस युद्ध मात्र को छोड़कर कहाँ नहीं है हम संदय।
फिर एक बार है विश्व ! तुम गालो भारत को विजय ।

@SHEKHAWAT
IMISSION100
शेखावाटी मिशन 100 की कक्षा 10 एवं 12 के विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें

(i) 'हमी पहले जागे है।' पंक्ति में 'हमी' शब्द का अर्थ क्या है?

(ii) 'जाग्रत सब हो रहे हमारे ही आगे हैं' में निहित भाव को लिखिए।

(iii) "शत्रु हमारे.............. त्यागे है" पंक्तियों में भारतीयों के किस गुण का उल्लेख हुआ है?

(iv) 'शत्रु हजार कहाँ नहीं भय से भागे हैं' में अलंकार बताइए।

(v) इस काव्यांश में किस रस का वर्णन है ?

(vi) हमने शत्रु को कैसे जीता है?

खण्ड–ब

निम्नलिखित लघुत्तरात्मक प्रश्नों का उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिये।

5. हिन्दी में 'नेट पत्रकारिता' पर टिप्पणी लिखए। (2)

6. 'पतंग' कविता में किन–किन विम्बो को चित्रित किया है? (2)

7. 'भाषा को सहूलियत से बरतने' से क्या अभिप्राय है? (2)

8. सिंधु घाटी सभ्यता जल– संस्कृति थी, समझाइए । (2)

शेखावाटी मिशन

9. कविता से लगाव के बाद लेखक को अकेले रहना क्यों अच्छा लगने लगा ? (2)

खण्ड–स

प्रश्न संख्या 10 से 13 के उत्तर 60 से 80 शब्दो में लिखिए तथा 14 एवं 15 के उत्तर लगभग 100 शब्दों मे लिखिए।

10. कवि रघुवीर सहाय की कविता 'कैमरे में बन्द अपाहिज' में किस पर व्यंग्य किया है? स्पस्ट कीजिए। (3)

अथवा

'उषा' कविता में व्यक्त केन्द्रीय भाव को स्पष्ट कीजिए

11. जैनेन्द्र कुमार का लेखक परिचय लिखिए। (3)

अथवा

'हजारी प्रसाद द्विवेदी का कवि परिचय लिखिए।

12. एक शिक्षक अपने विद्यार्थी के जीवन को कैसे बदल सकता है? 'जुझ' पाठ के आधार पर उदाहरण सहित समझाये ?

अथवा (3)

'मुअनजो–दड़ो नगर की नालियों एवं घरों के संबंध में वर्णन कीजिए।

13. 'जुझ' के लेखक आनन्द यादव को यह किस प्रकार विश्वास हुआ कि वे भी कविता कर सकते है? (3)

अथवा

मुअनजो–दड़ो की सभ्यता में हथियार का न मिलना क्या सिद्ध करता है ? लिखिए।

14. आधुनिक युग में किस प्रकार जातिप्रथा व्यक्ति के क्रमिक विकास को अवरुद्ध करती है ? विस्तार से स्पस्ट कीजिए।

अथवा (3)

'काले मेधा पानी दे' निबन्ध के माध्यम से लेखक ने वर्तमान कि किस समस्या की और संकेत किया है? विस्तार से समझाइए ।

15. फीचर लेखन की विशेषताएँ बताइये। (4)

अथवा

आलेख लेखन किसे कहते है? आलेख के मुख्य अंग बताइए।

खण्ड–द

16. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– (6)

अट्टालिका नहीं है रे
आतंक–भवन
सदा पंक पर ही होता
जल–विप्लव–प्लावन,
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से
सदा छलकता नीर,
रोग–शोक में भी हँसता है
शैशव का सुकुमार शरीर।
रुद्ध कोष है, क्षुब्ध तोष

शेखावाटी मिशन–100

अथवा

अंगना–अंग से लिपटे भी
आतंक अंक पर काँप रहे हैं।
धनी, वज्र–गर्जन से बादल!
त्रस्त–नयन मुख ढाँप रहे हैं।
जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर!
चूस लिया है उसका सार,
हाड़–मात्र ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार!

@SHEKHAWAT IMISSION100
शेखावाटी मिशन 100 की कक्षा 10 एवं 12 के विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें

17. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– (6)

सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपलब्ध रहने चाहिए । तात्पर्य यह है कि दूध–पानी के मिश्रण की तरह भाईचारे का यही वास्तविक रूप है, और इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है। क्योंकि लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति ही नहीं है, लोकतंत्र मूलतः सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान–प्रदान का नाम है।

अथवा

शिरीष के फूलों की कोमलता देखकर परवर्ती कवियों ने समझा कि उसका सब–कुछ कोमल है! यह भूल है। इसके फल इतने मजबूत होते हैं कि नए फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते। जब तक नए फल–पत्ते मिलकर, धकियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते तब तक वे डटे रहते हैं। वसंत के आगमन के समय जब सारी वनस्थली पुष्प–पत्र से मर्मरित होती रहती है, शिरीष के पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ाते रहते हैं। मुझे इनको देखकर उन नेताओं की बात याद आती है, जो किसी प्रकार जमाने का रुख नहीं पहचानते और जब तक नई पौध के लोग उन्हें धक्का मारकर निकाल नहीं देते तब तक जमे रहते हैं।

18. सचिव मा. शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर की ओर से दसवीं और बारहवीं की बोर्ड परीक्षा तिथि परिवर्तन की विज्ञप्ति तैयार कीजिए। (4)

अथवा

स्वायत्त शासन विभाग, शासन सचिवालय की ओर से समस्त सरकारी विभागाध्यक्षों को स्वच्छता अभियान चलाने हेतु एक अधिसूचना का प्रारूप लिखिए।

19. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। (शब्द सीम 300 शब्द)– (5)

(i) इन्टरनेट की उपयोगिता
(ii) स्वच्छत भारत अभियान
(iii) बेरी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
(iv) समाज में नारी का योगदान

शेखावाटी मिशन–100